

श्रीः  
**सिंहासनवत्तीसी ॥**

जिसमें

वत्तीस पुतलियों का राजा भोज विक्रमा-  
दित्य के न्यायपूर्वक राज्य करने का  
वृत्तान्त वत्तीस कहानियों में अत्यन्त  
मनोहरता से वर्णित है ॥

जिसको

आगरा निवासी कविवर लल्हू लाल जी ने  
अतीव परिश्रम से रचना किया है  
और उसी को सेठ टीकाराम जी ने

**“निर्णयसागर मुम्बई”**

अक्षरों में छापकर प्रकाशित किया

PRINTED AT THE GYAN BHASKAR PRESS,

BARA BANKI,

1908.



## अथ सिंहासनवत्तीसी ।

—०२२०—

एक राजा भोज उज्जैन नगरीका राजा महा-  
बली और बड़ाधनी यशी और धर्मात्मा था जितने  
लोग उसके राज्यमें बसते थे सब चैन करते थे ।  
राजाराज प्रजा सुखी किसी को कोई दुःख नहीं  
देसक्ता था यह न्याय उसका था कि बाघ बकरी  
एक घाटपर पानी पीते थे और सब उसके आसरे  
से जीते थे । खुदा ने जबसे उसे दुनियांके परदे पर  
उतारा सब बेसहारा का किया सहारा और रूप  
उसका देखकर चौदहवीं रातके चांदको चकाचौंधी  
आती थी बड़ा चतुर सुघड़ और गुणी था अच्छी  
अच्छी जितनी बातें सब उसमें समाई थीं भलाई  
उसकी सब जगमें मशहूर थी और नगरी उसकी  
यह बस्ती थी जो चंपा रखनेको जगह नहीं मिलती  
थी वह हराभरा नगर शादियां घरघर नये नये  
तौरके अच्छे २ मकान बनेहुये चौपड़का बाजार  
दरमियान नहर बहतीहुई दुरुस्त दूकानोंमें एकर  
दूकानदार सर्राफ बजाज सौभाग्यवान् ज्ञानीमान् मन्त्रवान्

लुहार सादेःकार कसेरा पटुआ किनारी बाफको-  
 फ़तगर जिलाकार आर्डनःसाज़ अपने २ काम में  
 सरगर्म थे जौहरी बाज़ारमें जवाहिर से किश्तियां  
 भरीहुई मोती मूंगा जमुरद लाल याकूत नीलम  
 पुखराज जौहरी देखते भालते थे और खरीदारों से  
 बाज़ार का बाज़ार भरा हुआ और उसके बराबर  
 दूकानों में मेवाफ़रोश बिलायती अनार सेव बिही  
 नाशपाती अंगूरसे पिटारे पिटारियां भरकर लगाये  
 हुये और ढेर छुहारे पिस्ते बादामों के लियेहुये बेंच  
 रहे फूलवाले फूल गूंथ रहे तम्बोली बीड़े बांध रहे  
 गन्धियों की दूकानें तेल फुलेल इतर अरगजे की  
 लपटों से महक रहीं और सुपारीवाले दूकानों में  
 पुड़ेबुन धनिये सुपारी के बांध कर लगाये हुये  
 डिब्बे मअजूनों के आगे धरे सुपारियां कतर रहे ।  
 बिसाती हररंग की जिन्स दूकानों में चुनेहुये मोल  
 गाहकों से कर रहे चौक चौकोर बना हुआ मीना  
 बाज़ार लगाहुआ तीसरे पहर को गुदड़ी लगीहुई ।  
 असबाब तरह २ का नया पुराना बेंचनेवाले बेंचरहे  
 और लेनेवाले मोल ले रहे । गर्म बाज़ारी हर एक  
 चीज़की होरही कटोरे हर तरफ़ बाज़रहे कहीं नाच  
 कहीं राग कहीं भगत कहीं नकल कहीं किस्सह  
 होरहा मअज़ूक बाज़ार में सैर करतेहुये आशिक

पीछे २ फिरते हुये दिनरात यह समा वहां रहता था । बागवागीचे सैर और तमाशेको बने हुये दरख्त मेवों से झूमते हुये और फूल क्यारियों में खिले हुये तालाबों में कमल फूले हुये बावलियों में पानी झलकता हुआ हर एक कुएं पर रहट परोहा चलता हुआ पनघट लगा हुआ और राजा के चौरासी खास महल ऊँचे २ दरवाजे खुशकित अचार दीवारियां सीधे खिंची हुई चारोंतरफ उनके अन्दर बाहर मकान अनूठे बने हुये । कोठरियां दालान दरदालान बारहदरियां वाले खाने चौमहले औपचमहले रंगमहल ऐशमहल अटारियां बँगले तैयार । चिलमने परदे हर २ दर पर लगे हुये फर्स चांदनी सोजनी कालीनों का जावजा बिछा हुआ मसनद तकिये लगे हुये शहनशीनों में दङ्गल और कुरसियां सोने रूपे की जड़ाऊ बिछी हुई ताकों पर शीशे वेदमुश्क गुलाबके चुने हुये सायहबान ताशबादले के खिंचे हुये । नमगीरे बाजी २ जगह अपने २ मौके पर खड़े हुये सहन में क्यारियां बनी हुई चौपड़ की नहरें पानी से भरी हुई लहरें ले रही हों ज वेदमुश्क गुलाब से भरे हुये फव्वारे छुटते हुये चादरों में पानी बहता हुआ आवजोयें चारोंतरफ जारी । सर्व खड़े हुये और छोटे २ दरख्त लगे हुये रबिड़ी पक्षिगंधर्व

दुरुस्त फूलहजारों रंग के क्यारियों में फूलेहुये हर २ महल में एक २ रानी ऐश और कामरानी से राजा का दिल हाथों में लिये रहती थी । नाच रंग राग रातदिन होता था और वह आप ऐसा सुघड़ था जो बात २ में मोती पिरोता और नौ किस्म के साहिबकमाल जैसे नवरत्न उसकी मजलिस में हाज़िर रहते थे राजा इन्द्र उसकी सभा को देखकर रश्क की आग से जलता था और उसका अखाड़ा हसरत के मारे हाथ मलता था । रण्डी मर्द उसकी सूरतपर दीवाने थे जिसने एकबार उसे देखा आपमें न रहा जिसने उसकी खूबसूरतीका बयान सुना वह बैचैनहुआ यौवनके मदमें सरशार मोहन का अवतार । नौजवान चातुरे साहिब तदबीर था उसकी शेर और तमशों का शहर के किनारे बागवानों ने कोसोंतक क्यारियां बनाईथीं और हररंग के फूलोंकी बहारें दिखाईथीं और उनके बराबर एक खेतमें किसी मुराईने खीरे बोयेथे जब वे उगे बेलें तमाम खेत में फैल गईं और खूबहारियाली हुई ज़र्दज़र्दफूलोंने और ही बहारदी ❀ जब वह खेत और फला तैयारी पर आया तब उस खेतवाले ने ~~हथियाली~~ को एक मकान तज़वीज़ किया देखा

दरमियान उसखेतके ऐंके चौका जमीनका खाली रहगयाहै कि नकुछ उसमें जमाहै न उपजाहै मुराईने रखवाली करने को गिर्दइस्ता दे लगाकर ऊपरएक मचानसा बांधा उसपर चढ़कर चारों तरफ़ निगाहकरतेही कहने लगा कोई है इसी वक्त भोजको गढ़से पकड़ लावे और सजाको पहुंचावे \* राजाके नौकरोंमें से एकने इसबातके सुनतेही टांग पकड़कर उसे नीचे गिरादिया और मुँहही मुँहथपड़े मारर सारा मुँह सुजादिया कान पकड़कर उठाया और बिठाया गुरुरका नशह जितना उसे चढ़ाथा सब उतरगया तो घबड़ा करके पांवों पड़ा और कहने लगा मैंने क्या ऐसीतकसीर की जो मुझपर यह मारपीट हुई \* इधरउधर की राहबाटके लोग जो वहां इकट्ठे हुयेथे इन्होंने कहा तूने ऐसी बात मुँहसे निकाली अगर राजासुनै अभी तुझे तोपके मुँहपर रखकर उड़ादें। सुनतेही वह गिड़गिड़ाने लगा रहे सहे उसके होश और हवास और भी जातेरहे। जान के डरसे घबड़ा दम उसका होठोंपर आरहामिन्नत औरजारी सेबारे छूटगया \* राजाके उस फ़िदवी ने वहां से घरकी राहली पर वह जब उस मचानपर चढ़ता ऐसी बकबाद किये बिन न उतरता एक दिन चार हरकारे राजाने एककामको किसीतरफ़ भेजे

थे वे रातको उधर से फिरे हुए चले आते थे और वह मचानपर चढ़ा हुआ बकरहा था कि बुलाओ हमारे दीवान और अहलकारों को कि इस जगह खास महल और एकगढ़ बनावें सब सरंजाम लड़ाई का उसमें जमअकरें कि मैं राजा भोजसे लड़ूं और मारूं जो मेरी सात पुस्तका राज्य यह राज करता है यह सुनते ही उन चारों हरकारों को अचम्भा हुआ और एक एक को उनमें से गुस्सा आया। एक ने राजब से कहा इसे जान से मारो। दूसरे ने कहा इसे तंबीह करके मुशकें बाँध राजाही के पास ले चलो वह इस के हक में जो चाहें सो करें तीसरे ने कहा इसने शराब पी है मतवाला है जो मुँह में आता है बकता है चौथे ने कहा फिर समझा जायगा अब जाने दो देर होगी। आपस में वह बात कहकर राजा के पास गये पहिले मुजरा किया और जहाँ भेजा था वहाँ का अहवाल अर्ज किया राजाने सुनकर पूछा हमारे राज्यमें सब लोग खुश रहते हैं और अपने अपने घरमें बैठकर हमारे हकमें क्या क्या कहते हैं। तब उन्होंने हर एक का अहवाल कहकर वह किस्सह राहका जो सुना था बयान किया और कहा कि अजब असर उस मकानका है कि जब वह उस मचानपर चढ़ता है और जब वहाँ से उतरता है नशह

सा उतर जाता है फिर अपनी हालत असली में आता है राजाने कहा तुम मुझे वहां ले चलो और उसे दिखावो कि वह जगह कौनसी है । तब राजा खुशी खुशी उठ हरकारों को लेकर उस मकान पर गया वहां छिपकर चुपके ही बैठ रहा । इतने में क्या सुनता है कि वह मकान पर पांवर खते ही कहने लगा लोग जल्दी जायें और राजा भोज को गढ़ से पकड़ लावें मारें उससे जल्दी मेरा राज्य ले दें इसमें यश और धर्म दोनों उन्हें होंगे सुनते ही राजा को खौफ हुआ हरकारों को साथ लेकर घर को फिर आया रात को फिक्र के मारे नींद न आई सात पांच करके ज्यों त्यों वह रात गुवाई । सुबह होते ही स्नान करके द्वार किया पण्डितों को और रात का सब अफसाना ज़बान पर लाया । नज़ूमियों ने घड़ी सा अत और वह दिन विचार के कहा राजा हमारे विचार में कुछ वहां लक्ष्मी का लक्षण नज़र आता है और पण्डितों ने कहा इस मकान में बहुत दौलत है । सुनते ही राजा ने तमाम शहर के बेलदारों को हुक्म किया कि लाख बेलदार वहां जाओ और उस मकान की तमाम ज़मीन खोदो वे बमूजिब हुक्म के रवाने हुए बाद उनके सब अपने मुसाहिबों को भेजा और आप भी सवार होकर वहां आया । बेलदारों ने जब चारों तरफ़

से खोदा और वहां की मिट्टी को दूर किया तो एक पाया नज़र आया तब राजाने फ़रमाया अब खबर-दारी से खोदो टूट न जाय जब खोदते चारों पाए सिंहासन के नज़र आये राजा ने कहा अब इसे बाहर निकालो लाख मज़दूर उठाते थे और ज़ोर करते थे ज़रा भी वह जगह से न हिलता था तब उनमेंसे एक पंडित ने अर्ज की महाराज यह सिंहासन देवताओं या सब दानवों का बनाया हुआ है इसजगह से न हिलेगा और न उठेगा बलि लेगा इसको बलि दीजिये तब राजाने करोड़ मेंसे और बकरे वहीं बलिदिये चारोंतरफ़ बाजे बजनेलगे और जय-जयकार होने लगा तब बलि लेकर हाथ लगाते-ही वह सिंहासन ऊपरको उठआया झाड़ बुहारकर एक पवित्र ज़मीन पर रख दिया। राजा सिंहासन देखकर बहुत खुशहुआ जब उसकी मिट्टी छुड़ाकर गर्द और गुब्बार दूरकर धोया और पोछा ऐसा चमकने लगा कि आंख किसीकी उसपर न ठहरती थी जिसने उस जड़ाऊ सिंहासन को देखा उसे खुदा की कुदरत का तमाशा नज़र आया कारीगरों ने ऐसा बनाया था कि किसी ने देखा न सुना आठ आठ पुतलियां चारों तरफ़ बनीहुई थीं और एक एक फूल कमल का हर एक के हाथ में था

अगर सूर या मुनि उसे देखें तो भौचक होजावें । राजा ने तमाम कारीगरों को बुलाकर फरमाया जितने रुपये खर्चहों खजाने से लेलो जहां जहांका जवाहिर जातारहा है जड़कर जल्दी तैयार करो । यह कहकर राजा महल में दाखिल हुए सिंहासन बननेलगा पांच महीनेमें सब तैयारहुआ और पुतलियां ऐसी बनकर ठढ़ीहुई गोया अभी बोलती हैं और चलती हैं । गरज शिरसे पांवतक खूबियों में भरीहुई आंखें हिरनकी सी कमर चीतेकी सी पांव का यह अन्दाज जैसी हंसकी चाल जिन्होंने सूरत उनकी देखी अपनी आंखों की पुतलियों में जगह दी । उसे देख कर पण्डित राजा से सिंहासन की हकीकत कहनेलगे राजा सुन मरना जीना इस्ति-यार भगवान् के है पर मनुष्यको चाहिये कि जीते जी सब जीवनका सुख करले । यहबात राजा सुन कर बहुत खुशहुआ और कहनेलगा हायद ये पुतलियां भगवान् ने अपने हाथों बनाईहैं या इन्द्रके यहांकी अप्सरा हैं । यह कहकर पण्डितोंको हुक्म किया । नेक सायत अच्छी लगत बिचारो जो मैं उस सायत सिंहासन पर बैठूं । सुनतेही पण्डितों ने बिचार करके कातिक महीने में एक दिन शुभ लग्न ठहराई । सब भांति बह भली थी । कहा कि उस

सायत तुम बैठो। राजाने बैठने की तैयारी की जितने राजा उसके राज्यमें और पण्डित और करावती दूर नज़दीक के थे उन्हें न्योता भेज कर बुलाया और आप स्नान करके अच्छे कपड़े पहिने पंडित वेद पढ़ने लगे और गन्धर्व गीत गाने लगे भाट यश वयान करने लगे और तरह-२ के बाजे बजने लगे हर हर महल में शादियां नाच राग रंग मचे। जितने लोग आये थे उन सबकी ज़ियाफत की ब्राह्मणों को वृत्ति गांवदिये भूखों को खाना और रुपये बख्शे नंगों को कपड़ा और माल असबाब इनायत किया रैयत को बख्शीश और इनाम दिया तमाम शहर में खैर खैरात बांटी फ़ौज को खिलअत और इज़ाफ़े कर दिये हमनशीनों पर तरह-२ की मेहरबानियां नवाज़िशें फ़रमाईं गरज़ जितने लोग उस सभामें इकट्ठे हुए थे जयजयकार करते थे और रामकानाम लेते थे। बीच में सिंहासन धरा था। राजा खुशी-२ गणेश को मनाता हुआ सिंहासन के पास जाकर खड़ा हुआ दहिना पांव बढ़ाकर चाहा कि उसपर रक्खें बइखतियार पुतलियां खिलखिलाकर हँसीं और सबने यह देखा राजा अपने दिलमें कटा रुक कर निहायत शर्मिन्दा हो कुछ दहशत खाई कुछ उसे अचम्भा हुआ कि ये बेजान पुतलियां जान-

दार क्योंकर हुई। तैश खाकर गजबमें आकर पांव उधरसे खींच लिया और पुतलियों से कहने लगा क्या देखा और क्यों हँसीं मुझसे बयान करो। क्या मैं बली या राजाका बेटा या सखी नहीं या क्षत्रियों में कायर हूँ या नामर्द हूँ या बेरहम हूँ या और राजा मेरे हुक्म में नहीं या मैं पण्डित नहीं या मेरे यहां पद्मिनी रानी या मैं राजनीति नहीं जानता या मैं किसीकी मजलिसमें नीचे होकर बैठा फिर किस बातमें नालायक हूँ मेरे दिल में शक पड़ा है सो मुझे बताओ ये बातें राजाकी सुनकर उसमेंसे ॥

पहिली पुतली रत्नमंजरी बोली ॥

राजा दिल लगाकर मेरी बात सुनो और यह किस्मह मैं तुमसे बयान करतीहूँ तुम गुणगाहक और कदरदानहो जो तुमने बातें कहीं सब दुरुस्त हैं सूरज से भी तुम्हारे तेजकी आगकी ज्वाला अधिक है पर इतना गर्व मत करो पुरानी कथा सुनो इस संसार का अन्त नहीं भगवान् ने इसमें किस्म २ के और रंग रंग के जवाहिर पैदा किये हैं एक २ कदम पर दौलत का गंज है और एक २ कोसपर आवहयात के चश्म हैं पर तुम कमबख्त हो तुमने नहीं पहिंचाना अपने दिलमें क्या समझे हो। तुमसे इस दनियांमें कगोड़ों पड़े हैं तुमने

इतनेही मैं मगरूर होकर अपनेतई भुलादिया और यह जिसका सिंहासन है उस राजा के यहां तुमसा एकर अदना नौकर था यह सुनकर राजा को गुस्सा हो आया और कहने लगा इस सिंहासन को अभी तोड़ डालताहूं इतनेमें बरुचि पुरोहित राजाका बोला राजा यह इन्साफ से दूर है। पुतली की बात कानदे सुनो और जो कुछ करनाहो फिर कर लीजियो राजाने कहा तू उसका अहवाल कह तब पुतली बोली \* मैं क्या माजरा कहूं इतनाही सुन तुम जलकर खाक होगये और जब तमाम हकीकत उस राजा की सुनोगे और शरमिन्दह होगे अपने दिनोंको रोओगे लोगों के आगे भी हलके होंगे इस कहवानेसे न कहवाना भलाहै हमतो उसीरोज मरचुकीथीं और सिंहासन फट चुका था जिसरोज से कि हम राजा बिक्रमाजीत से बिछुड़ीं अब हमें क्याडर है \* इतनेमें दीवान राजा का पुतली से कहने लगा किसलिये तू अपने राजाका बयान नहीं करती गुस्सह छोड़दे अब बातकर क्योंवहभेद छिपारक्खा है तब पुतली बोली कि शाकेबन्धराजा बड़ा बलीथा और नगर अम्बावती में राज्यकरता थाबड़ा उसका दबदबह था देवताओं का पूजने वाला और तमाम दुनियांको दान देनेवाला।

आगे मैं उसकी कथा कहती हूँ राजाकान धरके सुनो ❀ शामस्वयम्बर उस नगरी का राजा था जातका ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ तब धर्मसेन उसका नाम हरतक बजने लगा और उसके घर में चारवर्णकी रानियां थीं ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्यानी शूद्राणी। उनमें जो ब्राह्मणी थी बहुत अच्छी सूरत और नाजुक थी उसके एक बेटा हुआ सो बड़ा पंडित हुआ और ब्राह्मणीत उसका नाम रक्खा ❀ अय राजा ! वैसा कोई दुनियां में पंडित न था जितने इल्म थे सब उसने पढ़े थे यहां तक कि मौत का भी अहवाल कह देता और क्षत्रियाणी से तीन बेटे हुये उन्होंने क्षत्रियों का धर्म इखितयार किया एक का नाम शंख दूसरे का नाम विक्रम तीसरे का नाम भर्थरी। एकसे एक बली सब जगमें उनका नाम मशहूर था और उन्हें कल्पवृक्ष दुनियां के लोग कहते थे औ वैश्यानी से जो बेटा हुआ उसका नाम चन्द्र रक्खा वह बड़ा सखी और रहमदिल था शूद्रानीसे जो बेटा हुआ उसका नाम धन्वन्तरि वैद्यों में वह बड़ा वैद्य था छः बेटे राजाके हुये एकसे एक अच्छा गुरज अमरसिंह के घराने में सबके सब खूब हुये और वह जो ब्राह्मणी से हुआ था वही राजा की दीवानी करता था उससे जब कोई तकरीर हुई

तब राजा ने खिदमत लेली । वह लड़का वहांसे निकलकर धारापुर में आया अयराजा ! वहां सब तुम्हारे बुजुर्ग थे उसे उन सबों ने माना बड़ी आव भगत की वहां का राजा तुम्हारा बाप था कितनी मुदत के बाद उसने दगा करके उस राजाको मार डाला वहां का राज्य लेकर उज्जैन नगरी में आया और यहां आकर मर गया शंख जो राजा का बड़ा बेटा क्षत्राणी के पेट का था वह आनकर राजा हुआ राज्य करने लगा और आगे यह अहवाल है कि एक रोज पण्डितों ने आकर राजा शङ्ख से कहा तेरा दुश्मन दुनियां में पैदा हुआ यह बात सुनकर वह भौचक रह गया ब्राह्मण कहने लगे हम सब ने शास्त्र देखा है उसमें यही अहवाल निकलता है जो हमने तुमसे कहा मगर एक बात और है कि हम उसे मुँहसे निकाल नहीं सकते तब राजाने कहा खैर जो तुमने वह बात कही यह भी कहो तब उन्होंने कहा हमारे विचारमें यह आता है कि शंखको मार कर विक्रम राज्य करेगा । यह बात सुनकर राजा हँसा और कहने लगा यह पण्डित बावले हैं इन्हें कुछ ज्ञान नहीं इस लिए ऐसी बात कहते हैं । यह बात सुनी अनसुनी कर राजा चुप रहा पण्डित अपने दिलमें शरमिन्दा हुए कि हमारे शास्त्रको इसने झूठ

जाना और हमें दीवाना ठहराया तब कितने एक दिन इसपर गुजरे पण्डित अपने मकानोंमें बैठकर नज़्म देखनेलगे उन्हींमें से एक पण्डित बोला मेरे विचारमें यह आताहै कि राजा विक्रम कहीं नज़्मीक आन पहुँचा है तब दूसरा उनमेंसे बोला यहाँ के किसी जंगलमें है और एक उनमेंसे कहनेलगा उस जंगल में एक तालाब भी है वहीं अखाड़ा कर के रहाहै तब एक ब्राह्मण उनमें से उठ खड़ा हुआ और जंगलको चला ❀ वहाँ जाकर क्या देखताहै एक तालाबपर राजा विक्रम तपस्या करताहै मिट्टी का एक महादेव बनाकर पूजता है और दण्डवत् कर रहाहै यह देखकर पण्डित उलटा फिर आया सब पण्डितों को लेकर राजाके पास गया राजासे कहने लगा तुम हमारे शास्त्र को झूठ जानते थे और अब हम देखआये फलाने जंगलमें राजा विक्रमाजीत आन पहुँचा राजा शङ्ख उसरोज़ सुनकर चुप-रहा उसकी सुबहको उठा और उस बनमें जाते ही छिपकर देखने लगा कि वह क्या करताहै। जहाँ राजा विक्रमाजीत बैठाथा वहाँ से वह उठा और तालाब में स्नानकर फिर अपने आसन पर बैठा और उसी तरहसे महादेव की पूजा करनेलगा और यह राजा भी निकलकर वहाँ खड़ाहुआ जब वह

महादेव की पूजा कर चुका तब उसी महादेव पर इसने पेशाब किया। जितने राजा के साथ लोग थे कहने लगे इसकी अकल मारी गई है कि पूजे हुये देवता पर इसने मूता। एक पंडित उनमें से बोल उठा महाराज! यह तुमने क्या किया तब वह बोला हम जातके ब्राह्मण हैं देवता को पूजें या मिट्टी को ब्राह्मणों ने कहा राजा कुछ अच्छा नहीं देखते क्योंकि तुम्हारी मत कुमत होगई जब मरने के दिन आदमी के नज़दीक आते हैं तो उसकी मति मारी जाती है राजा बोला तुम दीवाने हो और मुझे भी बावला बनाते हो जो भगवान् ने लिखा है वही होवेगा उसे कोई मिटा नहीं सकता सब पंडित आपस में कहने लगे इस राजाने क्या अपना अकाज किया तब राजा शंखने विक्रम के मारने की यह फिक्र की सात लकीरें कोयले से जादू की काठी और उसपर भुस-फैला दिया जो उसे मालूम न हो और उन लकीरों का यह गुण था जो उसपर पांवधरे बावला हो जाय और एक खीरा मँगवाकर जादू किया और एक छुरी पढ़कर हाथ में रखी। उस छुरी खीरे का यह असर था जो उस छुरी से खीरा काटे उसका शिर कट जाय पण्डितों से कहा उसे बुलाओ उन लकीरों पर पांवधर के जो आवेगा दीवानह हो जा-

यगा बावला होकर यह खीरा जो हाथसे लेके काटेगा तो शिर उसका कटजायगा। जितने क्षत्री राजाके साथ थे अपने दिलमें फिक्रमन्द हुये कि इस राजा ने दगा की यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं। राजा ने बिक्र-माजीत को बुलाकर कहा हम तुम बैठकर एक जगह खीरा खावें। वह राजा योगी था और सब इल्म जानता था उन लकीरों से बचकर सिंहासन के पास जा खड़ा रहा खीरा और छुरी उसके हाथ से लेली दहिने हाथमें छुरी रखी और बायें हाथ में खीरा लिया राजा शंख गाफिल था फुरती कर के उसके छुरी मारी राजा का काम तमाम किया यह बात रत्नमंजरी ने जाहिर की राजा भोज! तू इस बातको सुन खुदा जो रहम करे तो तिनकेसे पहाड़ करे और राजब करे तो पहाड़से तिनका किताबमें जो लिखा है वह झूठ नहीं होता जब मा के पेट में इन्सान आता है चार बातें साथ लाता है नफ़ा नुक-सान दुःख सुख तीन लोक और चौदह भुवन में फिरे लेकिन किस्मतका लिखा नहीं मिटता भाई को मारा दिलमें खुश हुआ उसके लोहका माथेपर टीका दिया उठकर सिंहासन पर बैठा और चँवर डलवाया उस राजाकी रानी उसके साथ सती हुई यह राजनीति से न्याय करने लगा और जितने

राजा उसके राज्यके थे सब सुनकर खुश हुए मुजरै को आए दोनों वक्त दरबार में हाजिर रहने लगे इसी तरहसे राजा राज्य करने लगा । कितने दिनों के बाद एकदिन राजा शिकारको चला कुत्ते बाज बहरी और जितने शिकारी जानवर थे साथ लिए और जितने साथ में अच्छे २ गुलचले और तीर-न्दाज थे साथलिए जाकर एक जंगल में पहुँचे हिरनके पीछे राजाने घोड़ा डाला राजा आगे बढ़ गया साथ कोई पीछे न पहुँचा एक बड़े जंगल में राजा जानिकला और वहां जाकर शोच करने लगा कि मैं कहां आया राह भी भूला और साथ भी गँवाया इतने में जो निगाह की तो एक बड़ा दरख्त देखा उस दरख्त की फुनगी पर चढ़ गया और वहां से देखने लगा जंगलही जंगल नजर आताथा मगर एक तरफ जो देखा एक शहर नजर आया उसको देख कर राजा को ढाढ़स सी बँधी वह नगर जो देखा निहायत आबाद है कबूतर उड़ रहे हैं चीलें मड़रा रही हैं सूरजकी झलकसे हवेलियों के कलश चमक रहे हैं अपने जी में कहने लगा यह नया शहर मैंने देखा कल इसे छीन लूंगा और उस नगरके राजा का दीवान जिसका नाम लूतबरन था वह कौवे के भेषमें रहता था उस तरफ से उड़ा हुआ जाता था

उसने यह राजाके मुँहसे बात सुनी बहुत दिल में खफा हुआ गुस्से से उसके मुँह में बीट कर दी राजा गजबमें आया इतनेमें लोग कुछ उसके वहाँ आन पहुँचे उनके साथ होकर अपने शहर में दाखिल हो दीवानको हुक्म किया जहानमें जहाँतक कौवे हैं पकड़ लावो यह सुनतेही चारोंतरफ बहेलिए दौड़े और कौवे पकड़ लाए और पिंजरों में बन्द किए राजाने जाकर उन कौवोंसे कहा ऐ चांडालो वह कौनसा कौवाथा जिसने हमारे मुँहपर बीटकी। तुम सच कहोगे तो हम छोड़ देंगे नहीं तो सबको मार डालेंगे यह सुनकर सब बोले महाराज ! हममें कोई कौवा नहीं रहा जो पकड़ नहीं आया और वह काम हमसे नहीं हुआ तब राजा जियादा खफा हुआ कि तुम सबके सिवाय वह कौन कौवा है कि जिसने यह किया तब उन्होंने कहा महाराज ! सच पूछते हो तो हम कहते हैं बाहुबल एक राजा है उदय अस्तमें उसका राज्य है और उसका दीवान लूत-बरन बड़ा दाना बहुत होशियार पण्डित है वह कौवे के भेषमें रहता है यह काम उसका हो तो हो क्योंकि कौवेकी सूरत एक वह बचरहा है तब राजा ने कहा वह किस तरह आवे उसका कुछ समझकर मुझे इलाज बताओ कोई तुम्हारे यहाँसे बकील जाय और उसको

लेआवै तुम अपने यहांसे दो कौवों को भेजदो जा कर लेआवें। उन्हींमेंसे दो कौवे वहीं गये उन्हींकी लूतबरन ने बहुतसी आवभगत की और कहा तुम यहां किस लिये आये हो तब वे बोले महाराज ! तुम्हारे बगैर हम सब कौवे मारेजातेहैं जो तुम राजा विक्रमाजीत के पास चलो तो सबोंकी जानबचे तब लूतबरन बोला धन्यभाग जो तुम मेरे पास अपना मतलब समझकर आयेहो जो कुछ काम मुझसेहोगा मैं कमी न करूंगा। यह कहकर अपने राजाके पास आया और राजा से हुक्म लेकर उनके साथ गया जब सब कौवोंने उस दीवानको देखा तब राजा से कहनेलगे जिसका हम नाम लेतेथे वह यही है राजा ने देखकर उसे आदर करके आधी गद्दीपर बैठाया और क्षेम कुशल पूछी वह अशीश देकर बोला किसलिये आपने मुझे याद किया और किसवास्ते इनसबों को बंद किया जब लूतबरनने यह बात पूछी तब राजा कहनेलगा मैं एक दिन शिकार को गयाथा इतिफ़ाकन् जंगल में राह भूलगया तब एक पेड़पर चढ़कर चारों तरफ़ देखने लगा कि एक कौवेने मुझपर बीटकरदी इसलिये मैंने सब कौवों को बन्दकिया जब तक कि इनमेंसे कोई सच न कहेगा एक कौचा इनमेंसे न छोड़ूंगा बल्कि जानसे

मारुंगा फिर लूतबरन बोला महाराज ! यह काम मेरा है जब तुम्हें मैंने मगरूर देखा तब मुझे गुस्सह आया अकल मेरी उस वक्त जाती रही यह सुनकर राजा हँसा और बिगड़कर कहने लगा मुझे गुरूर क्यों न हो राजा मैं हूँ दाता मैं हूँ सिपाही मैं हूँ और कौन सी बात मुझ में नहीं तुम कहो तब वह बोला जो नगर तुमने नज़रभर देखा उसका मैं सब बयान करता हूँ राजा बाहुबल यहांका कदीम राजा है और गन्धर्वसेन बाप तुम्हारा उसका दीवान था राजा को उसकी तरफ से कुछ बेएतिवारी हुई तब उसे छुड़ा दिया वह नगर अम्बावती में आया और उस जगहका राजा हुआ उसका बेटा तू बिक्रम है तुझे जगमें कौन नहीं जानता पर जबतलक राजा बाहुबल तुझे राजतिलक न देगा तबतलक तेरा राज अचल न होगा और वह जो खबर पायेगा वहीं चढ़ दौड़ेगा और तुझे आकर एक घड़ीमें खाक के बराबर करदेगा । तुझे जो मैं मसलहत हूँ उसे मान और किसी तरहसे उस राजाके पास जा राजा को मुहब्बत दिलाकर तिलक उससे ले जिससे अचल राज तू करे राजा बिक्रम बड़ा अकलमन्द था इसबात पर कायम रहा ऐसी सख्तर बातें लूतबरन से सुन कर कुछ दिलमें न लाया हँसकर कान दे सब सुनी

फिर लूतबरन ने कहा जो तुम्हें चलना है तो हमारे ही साथ चलो और पण्डितों से अच्छी साइत दिखा कर चलने की तैयारी करो । दूसरे दिन सुबह के वक्त राजा लूतबरन मंत्री के साथ होकर चला और राजा बाहुबल के नगरमें पहुंचा तब उस दीवानने राजासे कहा यहां तुम बैठो और मैं अपने राजाको तुम्हारे आने की खबर दूं यह बात राजासे कहकर अपने राजाके मंदिरमें गया उसको सलाम किया और सब समाचार और अपनी हकीकत समेत राजाका अहवाल कहने लगा महाराज ! गन्धर्व सेन का बेटा विक्रम आपके दर्शन के लिये आया यह बात राजा ने सुनकर तुरंत बुलाया तब वह दीवान राजा को ले गया और अपने राजासे मिलाया । राजा उसे उठकर मिला और आदर करके आधे आसन पर बिठाया क्षेमकुशल पूछी । बाद उसके रहने के लिये मकान बताया । राजा उठकर उस मकान में आया वहां रहने लगा जब दशपांच दिन बीत गये दीवान से राजा विक्रमने कहा हमें तुम बिदा करवा दो तो हम अपने स्थान जायें तब मंत्री कहने लगा हमारे राजाका यह स्वभाव है जो उन को मिलने को आता है उसे आपसे रुखसत नहीं करते तुम रुखसत मांगो और जिस बातकी इच्छा हो सो

कहो अपने जीमें कुछ शर्म न करो तब राजा बोला मुझे कुछ नहीं चाहिये जो कोई जो बर चाहै मुझी सेले तब दीवान बोला राजा यह हमारी बात सुनो इस राजा के घरमें एक सिंहासन है सो वह सिंहासन पहिले महादेवने राजा इन्द्रको दिया था और उस राजा ने इसको दिया । उस सिंहासन में यह गुण है जो उस पर बैठे सात द्वीप और नव खण्ड पृथ्वीका अजीत राजकरे । और बहुतसा जवाहिर उसमें जड़ा है और बत्तीस पुतलियां भी कि अमृत देकर उनको सांचे में ढाला है लगी हैं तुम रुखसत होते हुये वह सिंहासन राजासे मांगो कि उसपर बैठकर आनन्द से राज करोगे यह राजा को दीवान ने सलाह दी और सुबह होते ही राजा के दरबार में दीवान गया खबर दी महाराज ! विक्रम रुखसत होता है बाहर खड़ा है ❀ यह सुनकर राजा तुरंत ही दरवाजे पर आया और विक्रमने देखकर अपना माथा नवाया । राजाने विक्रमसे कहा जो तुम्हारे जीमें आवे सो मांगो मैं प्रसन्न होकर वही दूंगा । विक्रम बोला महाराज ! जो आपने मुझपर दया की है तो वही सिंहासन मुझे बख्शो जो इन्द्रने तुम्हें दिया है ❀ यह बात सुनकर राजा बोला अच्छा सिंहासन तो हमने तुम्हें दिया पर यह काम मंत्री का है इसे तुम

नहीं जानते थे यह कहकर सिंहासन मँगाया और पानतिलक देकर उसपर बिठाया और कहा कि तुम अब अजीत हुये किसी बात की जीमें चिंता न करना गन्धर्वसेन मेरा बड़ा दोस्त था और तू उसके खानदान में बड़ा नामवर हुआ इस तरहसे राजा विक्रम को अशीश देकर रूखसत किया । राजा वहाँ से अपने घर को आया और अपने जीमें बहुतसा खुश हुआ और जितने उस राजा के दुस्मन थे उन्होंने के जीमें डर हुआ राजा के देश के लोगों ने बहुत खुशी की और द्वीप २ के राजा खिदमत के वास्ते आये और जो राजा ग़रूर करता था उसका वह राज छीन लेता था और अपना राज करता गरज उदय से अस्त तक खूब उसने अपना राज किया सब रैयत आनन्द से उसके राजमें बसती थी और जो क्षत्री थे उससे डरते थे और जो कोई देश विदेश जाता था वहाँ विक्रम का धर्म सुनता था सब मुल्क आबाद देखता था कहीं दुखी उसे नज़र न आता था डांड और बांध उसके राजभर में किसीने कान से न सुना बल्कि घरघर आवाज़ वेद और पुराण की आती और जितने लोग थे स्नान ध्यान करके तीनों वक्त अपने भगवान् की यादमें रहते थे अपने अपने घरमें सब राजा की सी सभा करके खुश रहते

थे राजा राज प्रजा सुखी इसमें एक दिन राजा विक्रमादित्य ने सभा की और सब पंडित बुलाये । पण्डितों से राजा ने पूछा मेरेजीमें है अब मैं संबत बांधू सो तुमसे पूछताहूं कि मैं इसबातके लायकहूं कि नहीं तुमशास्त्र देखकर मुझसे विचार करकेकहो तबसब पण्डितों ने विचार करके राजासे कहा महा-राज अब जो तुम्हारा प्रतापहै सो तीनों भुवन में छा रहाहै अब जो कुछ तुम्हें करनाहो सो कीजिये दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं राजा ने यहसुनकर पंडितों से कहा कि अब तुम बताओ कि किस विधिसे संबत बांधें जो कुछ शास्त्रकी रीतिसे मुनासिब हो तिस तरह से हमें कहो तब पंडितोंने कहा पहिले तो तुम अजीतमाल पहनो फिर उसके बाद देश के ब्राह्मण और जमींदार राजा और अपने सब कुनबेके लोग बोलाओ सवालाख कन्यादान और गोदान सवालाख ब्राह्मणोंको करो और जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्कके हैं उनको वृत्तिका दो एकवर्षका खजाना जमींदारोंको माफ़ करो और जो भूखा कङ्काल इस वर्ष में आवै उसकी वृत्तिका हुक्म करो । इसी तौर से राजा ने सब काम किया और सिवाय उसके जो २ दान पुण्य किया उसका बयान किस से हो । एक वर्ष तलकराजा अपने घरमें बैठा पुराणसुनता

रहा और इस तरह से संबत् बांधा कि तमाम दुनिया के लोग धन्यधन्य करते थे। यह सब अहवाल रतन-मंजरीने सुनाया और राजा विक्रमादित्यका यश गाया और कहा राजा भोज। जो तुम इतने हो तो इस सिंहासन पर बैठो सुनके राजाने कहा सच है जो कुछतूने कहा यह बात मुझे पसंद आई। इतना कहकर राजा अपनी सभामें बैठा। दीवान सुतसहियों को बुलाया कि तुम सब तैयारी संबत् बांधने की करो उसदिनकी वह साइत यों टलगई राजा ने दूसरे दिन फिर सिंहासनपर बैठने की तैयारी फरमाई। दीवान को बुलाकर कहा तुम सब इसकी तुरंत तैयारी करो देर न हो यह बात सुनकर बरुच पुरोहित बोला राजा अभी क्यों घबराते हो यह एक २ पुतली तुमसे बात करैंगी उनकी बात सुनकर जो कुछ करना होगा सो कीजिये यह सुनकर राजाने चाहा सिंहासनपर पांव बढ़ाकर रखे कि ❀

दूसरी पुतली चित्ररेखा बोली ॥

राजा तेरे योग्य यह आसन नहीं है और ऐसी अनीति कोई करता नहीं जैसा तू करने पर तैयार हुआ है। इस सिंहासनपर वह बैठे जो विक्रमसा राजा हो तब राजा बोला विक्रम में क्या गुण थे सो मुझ से कह तब वह बोली। एक दिन राजा विक्रम

कैलास को गये और वहाँ एक यती से मुलाकात हुई उसने राजा को योग की रीति सब बताई राजा ने अपने जी में इरादा किया कि योग कमावें। योग करने को तैयार हुआ राजतिलक भर्तृहरि को दिया राजपाट पर उसे बिठाया आप राजकाज धन दौलत छोड़ कंथापहन भस्म लगा संन्यासी बनकर जंगल को निकलगया और उत्तराखण्ड में जाकर योग साधने लगा उस शहरके जंगल में एक ब्राह्मण तपस्या करता था धुआं पीके रहता था और भूख प्यासका दुःख सहता था ब्राह्मण की तपस्या देखके देवता दुःखहुये बर उसे देने लगे और उसने न लिया तब आकाशवाणी हुई कि हम अमृत भेजते हैं सो तू ले। एक आदमी की सूरत में आकर देवता उसे फल दे यह कह गया कि जो इस को तू खावेगा चिरंजीव होगा फल लेकर वह तुरंत चला खुशी २ अपने घर को आया ब्राह्मणी के हाथ में वह फल दिया और कहा कि आज देवताओं ने अमृतफल मुझे देकर कहा जो इसे खावेगा अमर होवेगा यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी फिर बोली यह अब दुःख और पाप हम किस तरह काटेंगे और हमेशा भीख क्योंकर मांगेंगे खाल मांस सब हाड़ में मिल जायगा ऐसे जीने से

मरजाना बेहतर है मरजाने वाले को इतना दुःख नहीं होता इसफलको वह खावेगा जो हमेशा दुःख उठावेगा इससे योग्य यह है कि तुम यहफल लेजाकर राजा को दो उससे कुछ धन लो यहसुनकर ब्राह्मण अपने जमिमें समझा यह सच है इससंसारमें इतना जंजाल कौन सहे । इसीतरह आपस में बातें सलाह की करके ब्राह्मण वहांसे राजाके पास चला जब राजाके द्वारेपर पहुँचा द्वारपालसे कहा राजाको खबर दो ब्राह्मण आपके लिये एकफल लाया है दरवाने राजा से जाकर अर्ज की महाराज एक ब्राह्मण फल आपकी खातिर लाया है और दरवाजेपर हाज़िर है जो कुछहुक्महो राजाने उसीवक्त हुक्म किया उसे अभी लाओ अहलकारों ने वही हाज़िर किया । ब्राह्मणने राजाको आकर आशीषदी कि धर्मलाभहो और वह फल राजाके हाथ दिया राजाने उसको हाथ में लेकर पूछा इसका वृत्तान्त कहो तब ब्राह्मण कहने लगा स्वामी मैंने जो तपस्याकी थी सोदेवताओंने उसका वर अमरफल दिया मैं अमर होकर क्या करूंगा इस फलको तुम खाव और अमरहो इस वास्ते कि तुमसे लाखोंजीव पलते हैं । यहसुनकर राजा हँसा और उसे लाखों रुपये दिये और गांव वृत्तिकर के बिदा किया फिरजी में विचारने लगा मैं तो पुरुष

हूँ कमजोर न हूँगा यह फल रानीको दिया चाहिये  
 वह मेरे प्राणका आधार है वह जीती रहेगी तो मैं  
 सुख भोग करूँगा । यह दिलमें ठानकर राजा महल  
 में दाखिलहुआ फल रानीको दिखाया रानी हँसकर  
 पूछनेलगी महाराज यह क्या चीज़ है जिसे बड़ेयत्नसे  
 लियेहुये तुम आयेहो इसका ब्यौरा कहो तब राजाने  
 कहा सुन सुंदरी तू जो इसफलको खायगी सदा यौ-  
 बनवती रहेगी दिनरूप बढ़ेगा और अमर होगी ।  
 रानीने यह अहवाल सुनकर फलराजा के हाथसे ले  
 लिया और कहा महाराज मैं इसे खाऊँगी राजाफल  
 देकर बाहरगया और रानीका जो एक मित्र कोत-  
 वाल था रानीने उसे बुलाकर वह फल दिया और  
 कहा यह हमें राजाने देकर कहा है जो इसे खावेगा सो  
 अमरहोगा तुम मेरेप्यारेहो इसे खाओ और अमरहो  
 तोमुझे बड़ी खुशीहो सुनतेही कोतवालने खुशहोकर  
 फल हाथमें लेलिया और अपने मकान को गया  
 एक कसबी उसकी आशना थी उसे फलदेकर कहा  
 यह अमरफल मैं तेरे वास्ते लायाहूँ तू इसे खा  
 यह सुनकर उसने हाथमें लेलिया और उसे बिदा  
 किया फिर अपने जीमें बिचारा एकतौ मैं कसबीहूँ  
 और अमरहूँगी तो कितना पाप मैं कमाऊँगी इससे  
 बेहतर यह है कि यह फल राजाको जाकर दीजिये

जो जियेगा तो मुझे याद करेगा और पुण्यहोवेगा पापसभी कटेंगे । यह शोचकर राजाके दरबार में गई वह फल राजाके हाथ दिया राजा फलको देखकर बेसुध हुआ अपने दिल में कहने लगा कि फल तो मैंने रानीको दिया था जीमें यह विचारा और हँसकर उससे पूछने लगा यह फल तुझे किसने दिया । वह बेइया सब बातें जानती थी पर राजासे फक्त यह कहा कि मुझे कोतवालने दिया है यह सुनकर वह समझा कि रानीने बुरा काम किया उसे कुछ रुपया देकर बिदा किया और आप भौचक रह गया फिर समझकर कहने लगा मैंने तो मन अपना रानी को दिया और उसने अपना दिल कोतवाल को । मनका भेदी कोई न मिला ऐसे जीने को और मेरी बुद्धिको धिक्कार । जो मैं फिर राज करूँ और फिर उस रानी के तई और लअनत उस कोतवाल और उस बेइयाको और धिक्कार है काम-देवको जो यह मति संसारकी हरता है कि जिससे संसार अहमक हो जाता है । बाद उसके फल लिये हुये महलमें गया । अपने चित्तमें कहने लगा यह तन मन धन जीव सब चंचल है और यह संसार जान-हार है इन्होंमें कोई कायम न रहेगा जबहीं पैदा हुआ तबहीं कालने खाया और जब मरता है तो कुछ साथ

नहीं लेजाता और मेरा २ करके जन्म गँवाता है  
 सुखके सब साथीहैं और दुःख कोई नहीं बांटता ।  
 यह संसार जो है समुद्रहै और माया इसका जलहै  
 होखा मछलीहै ऐसाबधिक कोई न मिला जो इसको  
 मारकेखाय यों विचारकरताहुआ रानीके पासगया ।  
 और उससे पूछा तूने वह फल क्याकिया तब वह  
 बोली महाराज मैंने खाया । सुनकर राजा ने वही  
 फल रानी को दिखाया वहदेखकर जर्द होगई तब  
 राजा उस फलको लेकर बाहर आया धोकर खाया  
 तिसपीछे शोच उसको हुआ निदान बनके जाने  
 का सामान किया राजपाट धन दौलत और रानी  
 की मुहब्बत तजकर चला न किसीसे पूछा न किसी  
 को साथ लिया ऐसा निर्मोही होकर निकला कि  
 किसीका ध्यान न किया । देश देश और नगर २  
 में चर्चा हुई कि राजा भर्तृहरि राज तजकर योगी  
 हुआ और यह बात उड़ती उड़ती राजा इन्द्र के  
 अखाड़े में पहुंची कि वह तो देश छोड़के गया और  
 उसके देशमें बड़ा हल्लड़ हुआ । तब यह बातसुन  
 कर सब देवताओंने मिलकर यह विचार किया  
 कि एक देवको रखवाली के वास्ते राजा भर्तृहरि  
 के देशमें भेजदो कि कोई बिद्वत् रैयतपर न करे ।  
 देवको बुलाकर वहां भेजदिया और कहा वहां निगह-

बानी कर यहां तो वह रखवाली करताथा और वहां राजा विक्रमका योग पूराहुआ वह अपने मन में मनसूबा करताथा कि मैं छोटेभाई को राज दे आया हूं चलकर देखूं कि वह किस तरह राज करता है । यह अपने दिल में कहकेचला और रातको अपने नगरके पास पहुंचा देव ने उसे आते देखा तब वह पुकारा तू कौन है जो इस वक्त शहर में जाताहै या तो अपना नाम बता नहीं तो तुझे मारडालताहूं तब उसने कहा मैं राजा विक्रम हूं तू कौन है जो मुझे टोकता है देव बोला मेरे तई देवताओं ने भर्तृहरि के राज की रखवाली के लिये भेजा है राजा ने पूछा भर्तृहरि क्या हुआ उसने जवाब दिया भर्तृहरि को कोई यहां से छलकर लेगया यहबात सुनकर राजा हँसा और उससे कहा वह तो मेरा छोटा भाई है फिर देव बोला मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो और जो तुम विक्रम इस देश के राजा हो तो मुझ से लड़ो और मुझे मार कर जाओ बिना लड़े मैं तुम्हें इस शहर में नहीं पैठनेदूंगा यहसुन राजा बिगड़के बोला तू मेरेतई क्या डराता है और जो लड़ा चाहै तो तैयारहो इसतरह दोनों बातेंकर तैयारहो लड़ने लगे और राजा उस देव को पछाड़ कर छातीपर चढ़बैठा तब वह बोला राजा तू मुझ से

बरमांग में तुझे जीदान दूं। यह बात उसकी सुनकर राजा हँसकर बोला मैं ने तुझे पछाड़ा है और मार डालूँ तू मुझे जीवदान क्या देगा तब वह बोला राजा तू मुझे छोड़ दे मैं तेरे आगे इसका सब व्योरा कहता हूँ। तेरे राज की धूम सब देश में है और सब राजा तुझ से डरते हैं पर मैं जो बात कहूँ सो तू कान देके सुन तेरे शहर में एक तेली है और एक कुम्हार सो तेरे मारने की फिक्र में हैं पर तुम तीनों में से जो दो को मारेगा वही अचल राज्य करेगा। तेली तो पाताल का राज करता है और वह कुम्हार योगी बना हुआ जंगल में तपस्यारकता है अपने दिल में कहता है कि राजा को मारके तेली को तेल के जलते कढ़ाव में डालूँ और देवी को बलि देकर मैं निश्चिन्त राज करूँ और तेली कहता है राजा और योगी को मारके त्रिलोकी का राज मैं करूँ और तू इस बात को न जानता था मैंने इस वास्ते तुझे खबरदार किया तू उनसे बच रहना और आगे जो मैं कहता हूँ सो तू सुन योगी ने उस तेली को मारकर अपने बश में किया है सो तेली एक सिरस के दरख्त पर रहता है अब वह योगी तुमको न्योता देने आवेगा छलकरके तुझे ले जायगा तू न्योता लेकर वहां जाइयो जब वह कहै कि तू दण्डवत् करे तब तू कहियो मैं दण्डवत् करना नहीं जानता

मेरेतई एक जहान दण्डवत् करता है जो तुम गुरु हो और मैं चेला तो मुझे दण्डवत् करना बताओ उसी तरह मैं दंडवत करूं जब वह शिर निहुड़ावे तब तू खांडा मारना कि उसका शिर जुदा होजावे और वहां कढ़ाव जो देवीके आगे तेलका खोलता होगा उसमें उसको और दरख्त से तेलीको उतार के दोनोंको उसी कढ़ावमें डालदेना यह मेरीबात गांठबांध इसे हरगिज कभी न भूलना । यह बात कहकर वह देव चलागया और राजा अपने महल में आया । भोरहुए सारे नगरमें खबरहुई कि राजा बिक्रमादित्य आए दीवान सुतसद्दी और सब अहंलकार नजरेंलाए तमाम शहरमें आनन्द होगया घरर मंगलाचार होनेलगे यहां तो खुशीके नक्कारे बजरहे थे इतनेमें एक योगी आया और राजा को आदेश सुनाया एकफल उसके हाथ दिया उसने हँसकर वह फल हाथमें लिया योगीने कहा राजा हमारे यहां यज्ञहोताहै एकदिनका तुम्हारा न्योता है तब राजाने कहा हम आवेंगे तुम अपने मन में चिन्ता मतकरो सांझहुए पहुँचेंगे । योगी यह सुनतेही ठिकाना बता अपनी मढ़ीको गया जब शाम हुई राजा भी खांडा फरी ले तैयारहुआ और किसी से न कहा अकेला चला गया तुरंत योगी के पास

पहुँचा और आदेश कहा योगी बोला कि देवी के आगे जाकर दण्डवत् कर जो देवी तुझसे खुशहो राजाबोला स्वामी मैं दण्डवत् करना नहीं जानता किस तरह करतेहैं जो मुझे बताओ तो करुं योगी बताने लगा और ज्योंही शिर झुकाया राजाने देव की नसीहत याद करके एक खांडा ऐसा मारा कि शिर धड़ से जुदा होगया और उसे मारते देरी न किया और उस दरख्तसे तेलीको भी उतार दोनों को जलते कढ़ावमें डालदिया। तब देवी बोली धन्य है विक्रम तेरे साहस को। मैं तुझ पर प्रसन्न हुई तू मुझसे वरमांग और धन्यहै तेरे माता पिताको कि जिनके घरमें तूने अवतार लिया देवी जब यह कह चुकी तब वे वीर आकर हाज़िर हुए राजा से कहने लगे कि हम अगिया और कोयला दो वीर तुम्हारी सेवाको आये हैं जो तुम्हारी कामना हो सो हमसे कहो तुर्त पूरीकरदें सब जगहके जाने की हम सामर्थ्य रखते हैं जल थल मही आकाश में पवन के रूपहोकर जहां कहो हम चले जाय जैसे हनुमान तुरन्त लंका पहुँचे वैसेही हमभी जासक्तेहैं यह सुन खुशहो राजाने कहा मुझे तो कुछकाम नहींहै अगर मेरे तई वचनदो तो देवीसे तुम्हें मांगलूँ लेकिन ऐ वीरो ! जो तुमसे वचन देकर निर्वाह कियाजाय तो

वचनदो । उन बैतालों ने कहा कि अच्छा तब राजा ने उनको वचनबन्धकर मांगलिया और कहा कि जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरे पास पहुँचना तब वीर बोले कि राजा तू जिस जगह हमें याद करेगा वहां हम पवनरूप होकर पहुँचेंगे । यह बातें उनसे कहके राजा घर को गया । ये बातें चित्र-रेखा पुतलीने राजा से कहीं कि राजा विक्रम के ये कामथे इतने योग्य तो तू नहीं है फिर वे वीर राजा के ताबे हुए और आगे बहुतसे काम किये जहां विक्रम को गाढ़ पड़ी वे दोनों आकर हाजिर हुए जो कोई ऐसा काम करे तो सिद्ध हो । राजा तू अपने जोर पर गरूर मत कर तुझ ऐसे पृथ्वीमें करोड़ों होगए हैं । इतनी बात जब पुतलीने कही राजा की वह भी सा-यत टल गई तब दूसरे दिन सुबह को राजा ने फिर पाट बैठने की तैयारी की और ज्योंही चाहा कि सिंहासन पर पांव धरें कि ॥

रतिबामा तीसरी पुतली बोली ॥

तुम्हारा यह काम नहीं जो इस पर बैठो पहिले मुझसे एक कथा नई सुन लो । एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य दरिया किनारे एक महलमें खिलवत करके बैठे थे राग हो रहा था और हर एक रंगी की चुहल मचरही थी कि दिल फरेफतह हो जावे और

एकसे एक सहेली खूबसूरत पास बैठी थी राजा का दिल वहां बेइख्तियार लग रहा था कि पंथी त्रिया संग लिए हुए और उस त्रिया की गोद में एक बालक घर से खफा होकर निकले थे दरिया के किनारे पास उसी महल के आकर गुस्से के मारे कूद पड़े मर्द के एक हाथ में हाथ रण्डी का और एक हाथ में लड़के का हाथ यों तीनों डूबने लगे तब वह पुकारे ऐसा धर्मात्मा कौन है जो इन तीनों आदमियों की जानें बचावें। उनमें से वह मर्द हाथ करके पुकारा जो कोई गुस्सा सह मार न सके तो इसी तरह बेअज़ल मर जाता है और गिरके बहुत पछिताता है। उसकी आवाज़ राजाने सुनते ही लोगों से पूछा यह कौन दुःखी पुकारता है तब हरकारों ने खबर दी कि महाराज एक मर्द और रण्डी लड़के समेत डूबते हैं उनमें से वह मर्द चिल्ला रहा है कोई ऐसा परोपकारी हो कि हम डूबतों को निकाले यह हरकारा कहता ही था कि वह फिर पुकारा हम तीन जीव डूबते हैं कोई हमें भगवान् का बंदा पार लगावे यह सुनकर राजा वहां से धाया और आकर उस दरिया में कूद पड़ा जाकर एक हाथ में रण्डी और दूसरे हाथ में लड़के को पकड़ लिया। वह मर्द भी राजा से लिपट गया तब राजा घबड़ाया और आप भी डूबने लगा अपने ईश्वर को याद किया

और कहा कि हे नाथ मैं धर्म के वास्ते आया था और इसमें मेरा ही जी जाता है धर्म करते अधर्म होवे राजा यह कहकर बहुत जोर करने लगा और जोर उसका कुछ काम न आता था तब उसने अगिया और कोयला दोनों बीरों को याद किया याद करते ही वे बीर आकर हाजिर हुए और चारों को उठा किनारे पर रख दिया तब वह विदेशी राजा के पावों पर गिर पड़ा कि महाराज तुमने हम तीनों को जी-दान दिया तुम्हीं हमारे भगवान हो क्योंकि जी-दान तुमसे पाया राजा हाथ पकड़कर उन तीनों को रंगमहल में ले आया और बिठाकर कहा तुम्हें जो चाहिए सो हमसे मांग लो तब वह बोला महाराज हमें हुक्म कीजिये तो हम घर को जाय और जबतक जियेंगे आपको आशीर्वाद दिया करेंगे ऐसा कुछ तुमने हमें दिया है। तब राजा ने अपनी तरफ से लाख रुपये देकर उसको घर भिजवा दिया इतनी बात कह पुतली फिर बोली राजा इतने लायक तुम हो तो इस सिंहासन पर बैठो और यों बैठो गे तो तमाम लोग हँसेंगे। वह भी महरत राजा का टल गया दूसरे दिन फिर राजा दिल में शौच करता हुआ सिंहासन पर बैठने को आया तब ॥

चन्द्रकला चौथी पुतली बोली ॥

सुनो राजा तुम मनमलीन क्यों हो बैठो हमारे पास और सुनो जो मैं कथा कहूँ। एक रोज एक पण्डित कहींसे राजा विक्रमादित्य के पास आया और उसने आकर बयान किया जो कोई एकमहल बनानेकी बिना मुआफिक मेरे कहनेके धरे, चैन उठावे और बड़ानाम पावे तब राजाने कहा अच्छा जाहिर कर वह ब्राह्मण कहने लगा तुला लग्न जब आवे जो उस मन्दिरको उठावे जबतलक वह लग्न रहे तब तलक काम उसमें जारी रखे और जब तुलालग्न होचुके तब उसका काम मौकूफ करे इसी तरह तुलालग्नहीमें वह सारा मकान तैयारी पर लावे उसका अट्ट बण्डार हो और लक्ष्मी उसके यहां से कभी न जाय। यह सुनकर राजा मनमें खुश हुआ दीवानको बुलाया और मन्दिर उठानेकी इजाजत दी कि तुम अच्छी जगह हूँदकर महल बनाओ इतनेमें तुलालग्न भी आनपहुँची उस मन्दिर की नींवदी देश देशमें यह अवार्ई हुई कि राजा तुलालग्नमें महल बनवाता है जितने कारीगर उसमें काम करतेथे वे उठकर तुलालग्न मनातेथे जबलग्न आतीथी खुश होहो बनातेथे कहीं उसमें काम सोनेका और कहीं रूपेका और कहीं लोहेका और काठका नई नई तरह से बनवाताथा। चुनांचि हरि-

याके किनारे पर वह हवेली बनाई चारदरवाजे और सातखण्ड उसमें रखे जगह जगह जवाहिर अनमोल उसमें जड़े और दरवाजे पर दो नीलमके बड़े नगीने लगाये जो किसीकी नज़र न लगे वह जड़ाऊ महल कितने बरसों में ऐसा तैयार हुआ कि दुनियां के परदे पर किसीने दूसरा न आंखों देखा न कानों सुना। तब दीवान ने जाकर राजाको खबर दी महाराज वह मन्दिर अब तैयार हुआ आप चलकर उसे देखिये और जो कोई उस महलको देखताथा मोहित होरहताथा। राजा वहां से मकान देखने को गया। एक ब्राह्मणभी साथगया महलको जब राजा जाने मुलाहिजा किया तब ब्राह्मण देखकर और हँसकर कहने लगा ऐ राजा ऐसा घर जो मैं पाऊँतौ बैठ यहां पातुर नचाऊँ। यह बात सुनकर राजाने मनमें कुछ शोच न किया गंगाजल और तुलसीदल लेकर घर ब्राह्मणको संकल्प कर दिया। वह घर पाकर ब्राह्मणको ऐसा आनन्द हुआ कि जैसे चकोर रातको पावै है चन्दतर्त वह अपने कुनवे को ले आया और वहां आकर रहा रातको खुशीसे पलंग पर सोताथा और पहर रातगये लक्ष्मी आई और कहने लगी कि बेटा हुक्मदे तो मैं गिरूं और घर बाहर संपूर्ण भरूं खौफसे उसने कुछ जवाब न दिया

तब वह दोपहर रातको फिर आई और कहा कि ऐ  
 ब्राह्मण अज्ञानी मुझे आज्ञा दे उसने चिन्ता करके  
 रातगँवाई और सुबह हुए राजाके पास आया मन  
 मलीन और रातके अहवालसे डरा हुआ रंग जर्द  
 चेहरेका और डरसे कुम्हिलाया हुआ । राजा इस  
 शकलसे देख उसे हँसने लगा फिर कहा कि कलकी  
 सी खुशी हमने आज न देखी ऐ ब्राह्मण यह अचंभे  
 की बात है तब ब्राह्मण बोला सुन स्वामी मेरा दुःख  
 तुम दाता हो प्रजाके सुख देनेवाले और तुम शाके-  
 बन्ध नरेश हो जैसे राजाकर्ण और राजा इन्द्र अपने  
 वक्तमें दानी थे ऐसे इस समयमें तुम हो । आपने जो  
 मन्दिर मेरे तई दिया है उसकी हकीकत मैं कहना हूँ  
 मालूम नहीं कि उसमें भूत है या पिशाच मेरे तई  
 उसने सारी रात सोने नहीं दिया आपके प्रताप से  
 या लड़कोंकी भाग्यसे जीता बचके मैं यहाँ आया  
 हूँ इससे भीख मांग खाना मुझे बिहतर है पर उस  
 महलमें न रहूँगा यह बात सुन राजा ने प्रधान को  
 बुलाया और उससे कहा जो उस भूतानकी लागत  
 है सो हिसाब करके इस ब्राह्मणको दो राजाकी आज्ञा  
 पाय दीवान ने हिसाब कर तोड़े रुपयोंके लड़वाकर  
 ब्राह्मणके साथ कर दिए और वह अपने घर को गया  
 उसदिन साइत देख हवेलीमें राजा जा रहा और बैठ

कर कुछविचारकरनेलगा। इसमें हाथबांधकर लक्ष्मी आन खड़ीरही बोली धन्यराजा विक्रम तेरे धर्मको इतना कह लक्ष्मी उसवक्त तो चली गई राजाने वहां आराम किया जब पहर रात रही तब लक्ष्मी फिर आई और कहनेलगी राजा मैं कहां गिरूं राजा ने कहा जो तू पड़ा चाहती है तो पलंग छोड़ के जहां तेरी डच्छा होवे तहां गिर इतनेमें खूबतरहसे सोनेका मेह तमाम नगरमें बरसा सुबह हुई राजा उठा देख कर यह कहनेलगा हमारी रैयतपर बहुत सख्ती थी लेकिन अब कोईदिन निश्चिन्त हो आरामसे रहेंगी इतनेमें दीवान आया और खबर दी महाराज तमाम नगरमें कंचन बरसा है अब जो हुक्म दो सो हम करें तब राजाने कहा शहर में दौल बजवा दो जिसकी हद्दमें जो दौलत है सो ले और कोई किसीको मना न करे। यह राजाका हुक्म पाकर सब रैयतने दौलत अपने २ घर में भरी। ये बातें कह कर पुतली राजा भोजसे कहनेलगी सुन राजा विक्रम के गुण वह ऐसा राजा था और प्रजा का हितकारी तू किस तरह उसके सिंहासनपर बैठता है तेरी क्या जान है यह बात पुतलीकी सुनकर राजा अज्ञान हुआ और बरुचि पुरोहित भी शरमिन्दा हुआ वह साइतभी गुजर गई दूसरेदिन राजा फिर सिंहासन पर बैठने चला औ चाहे पांव अपना धरे कि ॥

लीलावती पांचवीं पुतली बोली ।

सुनराजा विक्रम के गुण । एक दिन दो शख्स  
आपस में झगड़ने लगे एकने कहा कर्म बड़ा और  
एकने कहा बलबड़ा किस्मत का तरफदार बोला  
नसीब बड़े हैं कि अदना को आला करदेते हैं और  
जोरका जानिबदार कहनेलगा जोर बड़ा है जोरावर  
होवे तो तमाम जहान को जेर करदे । इसी तरह दोनों  
झगड़ते राजा इन्द्रके पास गये हाथ जोड़कर कहने  
लगे स्वामी हमारा न्याय करो जो दोनों में सच्च हो  
उसे फरमाइये और झगड़ा निवेडिये तब राजा इन्द्र  
बोला यह हमसे न होगा इस इन्साफ़ को वह करेगा  
जिसने योग किया होगा इससे बेहतर यह है कि  
तुम मृत्युलोक में राजा विक्रमादित्य के पास  
जाओ इस न्याय को वह चुकावेगा उन्होंने राजा  
इन्द्रकी आज्ञा पाय राजा विक्रमादित्य के पास आय  
यह ज़ाहिर किया कि हम तीनों भुवन में फिर आये  
और किसी ने हमारा न्याय नहीं चुकाया इसका  
धर्म अधर्म विचार हमारा न्याय करो । यह बात सुन  
राजाने कहा आज तुम अपने २ घरको जाओ छह  
महीने के बाद हमारे पास आना तब हम जवाब  
इसका देंगे । यह सुनकर वे दोनों अपने घर गये  
राजा मनमें अपने चिन्ताकर चरना पहिन काछा

चढ़ा खांडा फरी ले विदेश निकला और अपने दिल में यह अहद किया कि जब तक इसका भेद न पावेंगे तब तक देश में फिर न आवेंगे जब फिरते २ समुद्र के किनारे पहुँचा वहाँ एक नगर बहुत बड़ा निपट सुहावना खूब आगाद पाया और उसमें तरह-२ की हवेलियाँ जिनमें कढ़ीरों रुपए लगे थे और उनमें सिवाय जवाहिर के कुछ नजर न आता था देखकर राजा कहने लगा कि जिसका यह नगर है वह राजा कैसा होगा शहर में फिरते २ शाम हो गई और शहर आखिर न हुआ इतने में क्या देखता है कि एक दूकान में महाजन शिर निहुराए हुए बैठा है। राजा उसके सामने जा खड़ा हुआ तब सेठ ने राजा से कहा तू किस देश से आया है और तेरा मन मलीन क्यों है किसे ढूँढ़ता है और क्या तेरा काम है अपना अर्थ मुझ से कह। किसका बेटा है तू और क्या तेरा नाम है। तब वह बोला सेठ जी। मेरा नाम विक्रम है मैं आज तुम्हारे पास आया हूँ मेरे दिल में एक मकसद यह था कि मैं राजा से मुलाकात करूँ सो आज मुलाकात न हुई कल मैं राजा से मिलूँगा और उनकी सेवा करूँगा जो वे मुझे नौकर रखेंगे और मेरा महीना कर देंगे तो मैं रहूँगा यह बात सुनकर वह महाजन बोला तुम क्या रोज लोगे राजा कहने लगा जो कोई

लाखरूपये रोज़दे तो हम रहें तब वह साहूकारबोला भाई तुम क्या काम करते हो जो तुम्हें लाख रूपये रोज़ कोई देवे वह काम मुझे बतलाओ तब उसने कहा जिस राजाके पास मैं रहता हूँ उसकी गाढ़ी मुश्किल में काम आताहूँ सेठ हँसकर बोला लाख रूपये रोज़ हमसे लो और सख्तीमें हमारे सहाय हो सुबह हुये नौकर रक्खा और दूसरे दिन लाखरूपये गिनदिये इसने उनमेंसे आधे रूपये अपने भगवान् के नाम संकल्पकर ब्राह्मणोंको दिये आधे कङ्गालोंको और जो बाकीरहे उनका खाना पकवाकर भूखोंको खिला दिया रातहुये पर फिर जो एक फकीरने सवाल किया उसे भी खंगबन्धक रखवाकर भोजन करवादिया आप चने चबाकर गुज़रान की । कितने दिन उस साहूकार के पास रहकर रूपये हररोज़ योंही खर्च करता रहा । गरज़ किस्मतने तो यावरीकी तब जोरबोला अब मेरी बारीहै कि यकबयक सेठके दिलको कुछ उचाटी हुई एक जहाज़ तैयार कर किसीदेशके जानेका इसने इरादाकिया और विक्रम से कहा मैं किसीदेश जाताहूँ यह बोला स्वामी मैंने यह बचन दियाथा कि गाढ़ी भड़िमें मैं तुम्हारेकाम आऊंगा अब मैं तुम्हारे साथहूँ कि तुमने मेरा प्रतिपाल कियाहै तब उसेभी सेठने जहाज़पर चढ़ालिया

और खानाहुआ कितने दिनोंके बाद जहाज मांझ धारामें तूफानसे तबाह होने लगा तब वहां लंगर डाल कर उसी जगह चंदरोज रहा। उसमें आगे जो टापू था उसमें सिंहावती नाम राजकन्या रहती थी हजार कन्या उसके साथ थीं इसमें जब वह तूफान थम्ह गया तब सेठने कहा लंगर उठाओ और चलो। लंगर कहीं अटक रहा था किसीसे उठ न सक्ता था जोरकर रहे थे निदान निराश होकर सब अपने खुदा को याद करने लगे और कहने लगे इस मांझ धारा से सिवाय तेरे पार लगाने वाला कोई नहीं जहां २ जिस २ के तई मुश्किल पड़ी है तहां तूही सहाय हुआ है और दीन दयाल तेरा नाम है हमपर भी दया कर इतने में बनियां घबड़ा विक्रम से यह कहने लगा अब अथाह में पड़े हुये हैं किनारा हमें नजर नहीं आता और एक बात तेरी ही इस वक्त याद आई है जबतू हमारे पास नौकर रहा था तब तूने इकरार किया था कि मुश्किल काममें अवसान करूंगा इस जगह खुदा नजात दे या तू; इससे क्या कठिन होगा कि कालके मुँहमें पड़े हैं। यह सुनकर विक्रम उठा और फरी खांडा हाथमें रस्सा पकड़ जहाज के नीचे उतर गया जाकर बहुतसी हिकमत की पर कोई हिकमत न चली तब सेठसे कहा कि पालें इसकी

चढ़ादो । लोगोंने पालें चढ़ाई और उसने कूदकर लंगर काटदिया पानी की तेज़ीसे और हवाकी तुन्दी से जहाज चल निकला और कोई रस्सा उसके हाथ न लगा उस जगह रहगया जो कुछ विधाताने कर्म में लिखा है उसे कोई मिटा नहीं सक्ता अलकिस्सह वह राजा वहांसे बहता हुआ चला और जाते २ उसे एक नगर नज़र पड़ा यह वहां जा लगा । उस नगरका जो दरवाजा था उसपर ज्योंही निगाह की देखा चौखट पर लिखा हुआ है सिंहावती की राजाबिक्रम से शादी होगी यह देख राजा को अचरज हुआ कि यह किस पण्डित ने लिखा है जब उस दरवाज़ेके अन्दर गया तो वहां जाकर एक महल देखा और वहां रण्डियां हैं मर्द कोई नहीं और पलंग पर सिंहावती सोती है चौकी को सहेलियां बैठी हैं । यह भी जाकर पलंग पर बैठ गया और तुरंत उसको जगादिया । वह उठ बैठी तब राजाने हाथ पकड़ लिया और दोनों सिंहासन पर जा बैठे सब सखियां हाज़िर हुई और इसभेदसे वाकिफ़ थीं कि राजाबिक्रमादित्य यहां आवेगा और उससे इसकी शादी होगी राजाको जो देखा तो फूलोंकी माला ले आई और गंधर्व व्याह किया राजा जैसा दुःख पाकर पहुंचा था वैसा वहां उसने सुखभोग किया अलगरज

वे दोनों आपस में रहने लगे और नौजवानों के ऐश करने हर एक तरह का लुत्फ उठाने लगे। सखियाँ भी खिदमत में हाज़िर थीं और मानिन्द चकोर के चांदसा राजा का मुंह देखती थीं चंदमुद्दत राजा को इसी तरह गुज़री अपने राज की कुछ सुधि न रही। ये बातें कह लीलावती पुतली ने फिर कहा कि सुन राजा भोज जैसा राजाने बलकिया तैसा ही विधाता ने उसे सुख दिया किस्मत ने वह तमाशा दिखाया फिर कहने लगी उन सखियों में एक मखी से राजा को बहुत प्रीति हुई और वह राजा की दया विचार भेद वहाँ का कहने लगी ऐ राजा तुम यहाँ आन फँसे हो जीते यहाँ से कभी न निकलोगे तुम्हारा नाम सुन कर और तुम्हारे राजकाज का ध्यान करके मुझ को रहम आता है क्योंकि तुम ऐसे धर्मात्मा दयावन्त दाता परोपकारी हो यहाँ रहना तुम्हारा भला नहीं लाखों आदमी तुम बिना दुःख पाते होंगे। उसकी बात सुन कर राजा को ज्ञान हुआ राजा का ध्यान आया तब उससे पूछा यहाँ से जाने का भेद मुझे बता वह बोली एक घोड़ी इस राजकन्या की बुढ़-शाल में है सो उदय से अस्त तक जा सकती है यह बात सुन कर दूसरे दिन राजा रानी को साथ लेकर टहलता हुआ अस्त बल में जानिकला घोड़ी को देख

कर तारीफ करने लगा रानीबोली जो तुम्हें शौक हो तो इन घोड़ों मेंसे किसी घोड़े पर चढ़ाकरो भेद तो इसे वहांका मालूमही था दूसरे दिन घोड़ा उस ने वहां से मँगाया और उसपर सवारहो वहीं फेरने लगा रानीभी खुश होतीथी और राजाभी खुश होता था इसी तरह कई दिन कितने घोड़ोंपर सवार होता रहा एक दिन उसघोड़ीको मँगाया और रानी के हुक्मसे उसघोड़ीपरभी सवार हुआ रानी तो गफ़्तलतमें रही कि इसने कोड़ा किया घोड़ी मानिन्द हवा के राजाको ले उड़ी रानी और सखियां अच्छता पछता रह गई । राजा अम्बावती नगरीमें आनपहुंचा वहां नदी किनारे एक सिद्ध बैठा देख राजा उतर दण्डवत् कर उसके पास जा बैठा सिद्धका जब ध्यान खुला तब उसने इसेदेखा देखकर खुश हुआ एक फूलकी माला इसेदी और कहा विजयमाल मैंने तुझेदी इसका गुण यह है जहां जायगा वहां फ़तह पावेगा और तू सबको देखेगा तुझे कोई न देखेगा फिर एकछड़ी राजाकोदी और उसका ब्योराभी समझाकर कहा कि इस लकड़ीका यह स्वप्न है पहले पहर रातको सोनेका जड़ाऊ गहना जो इससे मांगोगे तो यह देगी और दूसरे पहररातको एक खूबसूरत नारी ऐसी देगी कि जिसे देख राजातुम

आशिक होजाओगे और तीसरे पहर रातको जब इसे हाथ में लोंगे तो तुम सबको देखोगे और तुम्हें कोई न देखेगा चौथे पहर रातको मानिन्द कालके यह होजायगी इसकेदरसे कोई दुश्मन तुम्हारे पास न आसकेगा । यह बात कह योगी ने राजा को रुखसत किया राजा जब उज्जैन नगरी के पास पहुंचा तब उधर से एक ब्राह्मण और एक भाटको आते देखा और जब नजदीक पहुंचे तो उन्होंने ने आशीष देकर कहा महाराज आपके द्वारे पै हमने बहुत दिनों सेवाकी पर हमारा भागही ऐसाथा कि कुछ उसका फल न मिला । तब राजाने सुनतेही ब्राह्मणको छड़ीदी और भाटको माला और उसका भेद सब कह दिया आशीष देकर वे दोनों कहने लगे महाराज इस समय में तुम राजा कर्णहो तुम्हारे बराबर दानी आज पृथ्वी में दूसरा और नहीं । यह कहा और बिदाहोकर गये । राजाभी अपने स्थान में गया दीवान प्रधान सब आन हाजिरहुये शहर की तमाम रैयत खुश हुई और वे दोनों झगड़ालूभी यह खबरसुन तुरत आकर राजा के सामने खड़े रहे और कहा महाराज ! आपने जो छःमहीने का करार कियाथा सो बीतगया अब हमारा न्याय करदीजिये यह सुनकर राजा बोला कि बिना बल कर्म

कुछ काम नहीं आता इससे ये दोनों बराबर हैं इसको सुन सन्तोष कर बाद छोड़ दोनों अपने २ घरको गये ऐ राजा भोज यह अहवाल मने तुझसे इसलिये कहा है कि तू समझ कर यह खयाल अपने जीसे उठा इसवास्ते कि जो यह लियाकत रखे सिंहासन पर बैठे । वह भी योग राजाका बीत गया फिर उसके दूसरे दिन भोर होतेही सिंहासन पर बैठनेको तैयार हुआ कि इतनेमें ॥

कामकन्दला छठीपुतली ॥

हँसी और कहने लगी कि जिस आसनके ऊपर राजा विक्रमने पाँच धरा हो तू उसके बैठने के लायक कब है ऐ पापी तू अपने होशको गुम न कर क्योंकि तुझे देख मेरा मन मलीन होता है और इस सिंहासनपर वही बैठे जो विक्रमसा राजा हो तब राजा बोला तू कह विक्रमने क्या २ कर्म किये हैं वह बोली तू सुचित होकर बैठ मैं नृपति की कथा कहती हूँ एक दिन नृपति अपनी सभा में बैठा था एक ब्राह्मणने आनकर एक अचरज की बात कही कि उत्तर दिशा में एक बड़ा बन है और उस बनमें एक पर्वत और उसके आगे एक तालाब और उसमें एक खम्भ फटिकका है जब सूरज निकलता है तब उस सरोवरमें से वह खम्भ भी निक-

लता है और ज्यों २ सूरज चढ़ता है त्यों २ खम्भ भी बढ़ता है जब ठीक दोपहर होती है तब वह खम्भ सूरज के रथ के बराबर जा पहुँचता है तब उस जगह रथ खड़ा रहता है और वहाँ जब सूरज कुछ भोजन कर लेता है तब रथ चल निकलता है और खम्भ भी घटता है निदान शाम के वक्त पानी में लोप हो जाता है इसको देवता या देव कोई नहीं जानता यह बात ब्राह्मण से सुनकर राजाने अपने मन में रक्खी जाहिर न की उसके तई कुछ रुपये दे बिदा किया और ताल बैताल को याद किया वे दोनों बीर आकर हाज़िर हुये उन्होंने कहा हमें जो इस वक्त आपने याद किया है सो आज्ञा कीजिये कहिये स्वर्ग को ले जावें कहिये पाताल को कहिये समुद्र पार इन तीनों लोक में जहाँ आपकी मर्जी हो तहाँ ले चलें तब हँस कर राजा ने कहा एक कौतुक देखने हम जाया चाहते हैं सो वह उत्तराखण्ड में है वहाँ तुम ले चलो। यह बात सुन कर बीर कांधे पर चढ़ा राजा को ले उड़े और उस जगह तुर्त जा पहुँचाया राजाने वह तालाब देखा कि चारों घाट उसके पक्के बँधे हैं हंस बगले उसमें फिरते हैं और सुर्गा बियां कोरें पनडु बियां कलोलें करती हैं कमल के फूलों पर भौरे गूँजर रहे हैं मोर बोल रहे हैं कोयल कूक रही हैं और तरह बतरह के पक्षी

हुलासमें हैं फूलों की सुगन्धों के साथ पवन चली आती है और मेवादार दरख्तों की डारियां लचके खाती हैं राजा यह समा देखकर बहुत खुश हुआ रातभर वहीं रहा जब सुबह हुई सूरज निकला जो कुछ कि ब्राह्मण ने कहा था वह सब वहां देखकर बीरों से कहा एक बात मेरे जीमें आती है कि मेरे तई ले जाकर इस स्वम्भ पर बिठला दो और भगवान् का ध्यान कर अपने स्थान को जाओ तब बीरों ने स्वम्भ पर ले जाकर बिठला दिया और वे अपने मकान को गये ज्यों २ वह सितून बढ़ने लगा त्यों २ राजा अपने दिलमें खौफ करने लगा जितना सूरज के नज़दीक पहुंचता था उतना ही गर्मी से जला जाता था निदान सूरज के निकट पहुँचा जलकर अंगारा हो गया । जब स्वम्भ बराबर रथ के पहुंचा और रथवान ने एक मुर्दा जला हुआ देखा अपने रथ के घोड़ों की बाग खेंची । घोड़े ठिटके सूरज ने झुककर देखा कि स्वम्भ पर जला हुआ एक आदमी लगरा हुआ । सूरज बाहि २ कर बोला यह साहस आदमी का नहीं यह कोई योगी है या देवता या गंधर्व इस मुर्दे के होते इस जगह किस तरह भोजन करूंगा । यह कहकर सूरज ने अमृत ले उस पर छिड़क दिया । राजा राम राम कह पुकार छुटा और देखकर सूरज

को दणवत् कर हाथ बांध कहने लगा धन्य भाग्य हैं मेरे और मेरेकुल के जो आपके दर्शन पाये और मैंने इसजन्म यज्ञदान जो कियेथे उसीके सबब तुम्हारेचरण देखे जिन्दगी का जो फलथा सो मुझे मिला । इच्छा संसार में सबको है लेकिन जिस पर तुम्हारी मिहरबानगी हो उसी को दर्शन मिलते हैं यह सुन सूरज बोला तू कौन है और तेरा क्या नाम है तुझे देखकर मेरे जीमें तरस आता है अपना नाम तू जल्दी कह तब राजा बोला स्वामी नगर अम्बावती में गन्धर्वसेन जो राजाथा उसकाबेटा मैं विक्रमहूँ आपकी कथा मैंने एक ब्राह्मणसे सुनी थी । मुझे आप के दर्शन की इच्छाहुई और आप की तबज्जुहसे आपके चरण देखे अबमेरे तई आज्ञा दीजिये तोमैं बिदाहूँ । यहसुन सूरजने हँसकर अपना कुण्डल उतारकर राजाको दिया और कहा अब तू निडर राजकर फिर सूरज का रथ आगे बढ़ा और खंभाभी घटने लगा जब राजा अकेला रह गया तब बीरोंको बुलाया । बीर आकर हाजिरहुये उनके कंधे पर सवार होकर अपने मकानको आया जब शहर में दाखिल होने लगा सामने से एक गुसाई आया उसने राजासे अपने योगकी मतिसे कहा महाराज जो तुम कुण्डल लाए हो वह मुझे दान दीजिये और

यश धर्म बड़ाई लीजिए राजा बोला ऐ योगी मति हीन ऐसा योग तूने कब कमाया जो तू कुण्डल मांगता है वह संन्यासी कहने लगा महाराज मैंने योगतो कुछ नहीं साधा पर सुनाथा कि राजाबड़ा दानी है इससे मैंने आपको यांचा । राजाने हँसकर कुंडल उतार उसके हाथ दिया आप खुश होता हुआ अपने घरमें आया । कामकन्दला ये बातें कहकर कहने लगी राजा तुझमें भी इतनी कुदरत हो तो इस सिंहासन पर बैठ यह बात सुन राजा मनमलीन हो फिर गया दूसरे दिन राजा दिलमें गुस्सः खाता हुआ फिर सिंहासन पर बैठने चला और पुरोहित से कहा इस बेर मैं पुतली के रोकने से न रुकूँगा आज सिंहासन पर जरूर बैठूँगा जब राजा ने पांव उठाकर सिंहासन पर चाहा कि रुकूँ कि इतने में ॥

कामोदी सातवीं पुतली ॥

पांवतले आनगिरी राजाने यह तौर देख दुचित्त हो पांव खेंच लिया और पुतली से कहा तू किस कारण चरणमें आन गिरी तब उसने कथा शुरू की । हम जो हैं अबला सतयुग की हैं राजा तेरा अवतार कलियुगमें हमने एक ही मर्द का मुँह देखा और दूसरे का मुँह नजर से नहीं देखा हम पहले अपना माजरा कहती हैं कि विश्वकर्माने तो हमें जन्म दिया और

बाहुबल राजाके पास हम जाकर रहीं उसने राजा विक्रमादित्यको हमें दिया वह अपने घर लेआया जबसे हम उससे बिछुड़ी हैं तबसे कभी सुख नहीं पाया जो उस राजाके बराबर होवे सो इस सिंहासन पर बैठे राजा बोला विक्रममें वरुण क्या थे तू वे मुझ से बयानकर तब वह कहनेलगी । सुन राजाविक्रम का अहवाल एकदिन वह अपने घरमें दोपहर रात को सोताथा और तमाम शहर नींद में गाफिल था कि किसी आदमी की आवाज़ न आती थी इतने में उत्तरदिशा नदीके पार एक स्त्री ढाढ़ें मारके रो उठी वह आवाज़ राजाके कान पड़ी राजा मन में चिन्ता करनेलगा हमारे नगरमें कोई दुःखी आया है कि वह अपने दुःखसे कूक मार २ कर रो रहा है यह बात दिलमें विचार ढाल तलवार हाथमें ले उधर को चला और नदी के किनारे पहुँच कर वस्त्र छोर लँगोटमार पैरकर पारहुआ क्या देखताहै कि अति सुन्दर जवान नारी खड़ी कूकरही है उसके पास जाकर राजाने पूछा कि पुरुषका तुझे वियोग है या पुत्र का तुझे शोक है या तुझे सौत का साल है इतने दुःखोंमें किस दुःखसे तू रोतीहै जो कुछ तुझे व्यापा है सो मुझसे कह तब वह कहने लगी सुन राजा हमारा बालम चोरीकरताथा शहर के कोतवाल ने

उसे पकड़कर सूलीदिया है और मैं उसकी मुहब्बत से कुछ खाना खिलानेको लाई हूँ चाहती हूँ उसे भोजन करवाऊँ पर सूली ऊँची है और मेरा हाथ उसके मुँह तक नहीं पहुँचता इस दुःखसे मैं रोती हूँ और बहुत यत्न करती हूँ पहुँचने नहीं पाती नरपति ने कहा यह तो थोड़ी सी बात है इसके वास्ते तू क्या रोती है उसने जवाब दिया कि मुझे यह थोड़ी बहुत ही बड़ी है तब राजा बोला मेरे कांधे पर चढ़कर उसे खिलादे वह कंकालिन राजा के कांधे पर चढ़कर उस सूली पर चढ़चोर जो टँगा था उसे खाने लगी रक्त मुखसे उसके बदन पर गिरने लगा राजा मनमें शोचा कि यह कोई और है और इसने मुझे धोखा दिया अपने जीमें राजाने यह शोचकर पूछा कह सुन्दरी तेरा पिया भोजन करता है या नहीं तब कंकालिन बोली रुचिसे खा चुका अब इसका पेट भरा मुझे कांधे से नीचे उतार । जब नीचे उतरी राजाने कहा उसने चाहसे खाया तब कंकालिन हँसकर बोली तू मांग जो तुझे चाहिये मैं तुझसे बहुत खुश हूँ मैं कंकालिन हूँ तू मुझसे अपने जीमें मत डर । वह बोला मैं तुझसे क्या डरूंगा और क्या मांगूंगा तूने तो मुझे मेरे कांधे पर चढ़के खाया तू मुझे क्या देगी वह फिर बोली कि राजा तू इसके खयाल में

मतपड़ कि मैंने क्या किया और क्या न किया जो तुझे इच्छा है सो तू मुझसे मांगले राजाने हँसकर कहा अन्नपूर्णा मुझे दे और जगमें यशले वह बोली अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहिन है तू मेरे साथ चल मैं तुझे दूंगी इस तरह आपसमें दोनों वहाँसे बचन बढ़कर चले आगे २ कंकालिन और पीछे २ राजा नदी किनारे जा पहुँचे वहाँ एक मन्दिर था उसके द्वारे कंकालिनने ताली मारी और अन्नपूर्णा ने प्रकट होके उससे कहा कि यह भूपाल कौन है वह बोली यह राजा विक्रम है इसने मेरी सेवा की है और मैंने इससे बचन हारा है अगर मेरी मुहब्बत तेरे दिलमें है तो अन्नपूर्णा इसे दे हँसकर उसने राजा को एक थैली दी और कहा इसमेंसे जितनी खाने की चीज़ माँगोगे सब पावोगे राजाने हाथ फैला लेली वहाँसे खुश हो नदी किनारे आन स्नान ध्यान कर निश्चिन्त हुआ कि एक ब्राह्मण आन पहुँचा। उसको राजाने बुलाया और कहा कुछ भोजन करोगे उसने कहा मुझे भूख लगी हुई है आप दें तो मैं खाऊँ। राजा बोला क्या खावोगे किस चीज़ पर तुम्हारी सूरत है वह बोला इस वक्त पकवान खाऊँगा। राजा अपने जीमें सोचने लगा जो इसदम पकवान न पहुँचेगा तो मैं ब्राह्मणसे झूठा दूँगा। इतनी बात मनमें विचार थैलीमें

हाथ डालकर जो निकाला तो देखा कि पकवानही निकला ब्राह्मणने पेट भरकर खाया और बोला महाराज भोजन तो मैंने किया अब इसकी दक्षिणाभी दीजिये राजाने कहा जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा ब्राह्मण बोला कि यह थैली मैं दक्षिणा पाऊंगा तो आनन्दसे अपने घरको जाऊंगा थैली ब्राह्मणको देकर राजा अपने घरको चला वह इतनी कथा कहकर राजा भोज से फिर बोली कि इतनी मेहनतसे थैली पाई और ब्राह्मणको देते बार न लगाई ऐसा साहसी और ऐसा दानी हो तो सिंहासन पर बैठ और नहीं तो पातक होगा वह भी सुहृत् राजा का टल गया दूसरे दिन फिर राजा सिंहासन पर बैठने को आया तब ॥

पुष्पावती आठवीं पुतली ने कहा ॥

राजा तूने जो सिंहासन पर बैठने का चित्त किया है सो इसकी आशा मनसे छोड़ दे राजा बोला मैं किस तरह छोड़ूं तब पुतलीने कथा शुरू की कि एक दिन वीर विक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठा था सब राजा मुजरे को हाज़िर थे उस वक्त एक बढईने आकर सलाम किया और कहा महाराज मैं आपके दर्शन को आया हूं और एक तुहफह घोड़ा आपके लिये लाया हूं राजाने आज्ञा की कि ले आ बढईने जो

हिकमत का घोड़ा बनाया था नज़र किया राजाने घोड़ेको देख उससे पूछा कि इसमें क्या २ गुण हैं तुज्जाने कहा महाराज इसमें ये गुण हैं न कुछ खाता है न पीता है और जहां चाहो तहां ले जाता है दरियाई घोड़ेके बराबर है घोड़ा उसवक्त चालाकी से एक जगह ठहरता न था कूदफांद रहाथा ज्यों २ राजा देखताथा रीझताथा आखिर पसंदकरके कहा कि इसको मैदान में फेरकर दिखादे ज्योंही उसने कोड़ाकिया फिरतो गर्दही नज़र आतीथी और घोड़ा मालूम न होताथा जब ऐसे गुण घोड़ेमें राजा ने देखे दीवानको बुलाकर कहा लाखरुपये इसे दो दीवानने अर्जकी महाराज यह काठका घोड़ा और लाखरुपये इनाम मुनासिब नहीं राजाने दो लाख रुपये फ़रमाये और उसे दीवानने चुपके हवालेकर दिये और अपने दिलमें सोचा जो कुछ और तकरार करूंगा तो और बढ़ेंगे । वह बढ़ई रुपये ले अपने घरको गया घोड़ा थानपर बांधा और वह चलते हुये कहगया था कि इसपर सवार होते न कोड़ा कीजो न एंडमारियो पर किस्मत का लिखा कोई मिटा नहीं सक्ता जो बात हुआ चाहती है सो होती है । कई दिनके बाद राजा ने घोड़ा मँगवाया और अपने मुसाहिबों से फर्माया कि कोई तुममें से सवार

होकर इस घोड़े को फेरे तो हम देखें। यह बात राजा से सुनकर एक २ का मुंह देखने लगा घोड़े की चालाकीसे कोई न चढ़ा तब राजा झुंझलाकर बोला घोड़े को साज लगाकर तैयार कर लाओ। यह बात सुनते ही एक की जगह हजार आदमी दौड़े और जल्दी तैयार कर लाये। राजा सवार होकर वहां फेरने लगा जितना कि वह चाहता था कि आसन जमाकर घोड़े को अपने काबू में लावे रानों से निकला जाता था और पारि की तरह एक जगह ठहरता न था छलावे की मानिन्द छलबल कर रहा था। राजा खुशी के मारे बढ़ई की बात भूल गया और घोड़े को कोड़ा किया चाबुक लगते ही आगे बबूला होकर वह ऐसा उड़ा कि समुद्र पार लग गया और एक जंगल में दरख्त के ऊपर से गिरा आप रानों से निकल गया। राजा भी दरख्त पर से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा और यह हालत हुई कि मानों मृतक सा होगया। जब कितनी देर गुजरी कुछ उसे होश आया तब अपने दिल में कहने लगा देश नगर राजपाट रैयत और अपने पराये सबके सब छूटे किसमत मुझे यहां ले आई देखिये आगे क्या हो यह मन में विचार कर धीरज बांध उठकर वहां से आगे चला तो ऐसे महावन में जा पड़ा

कि निकलना फिर मुशकिल हुआ फिर ज्यों त्यों उस जंगल से भूला भटका दश दिन में सातकोस राह चलकर एकवन में जा पहुँचा। उसमें ऐसा अंधियारा था कि हाथको हाथ न सूझता था और चारों तरफ शेर गैंड़े चीता बल्कि सब परिंदे बोल रहे थे उनकी डरावनी आवाजें सुनकर राजा सहमा जाता था कभी पूर्व कभी पश्चिम कभी दक्षिण कभी उत्तर भटका २ फिरता था पर कहीं राह न मिलती थी। इस तरफ दुःख भोगता हुआ पन्द्रह दिन के बाद एक तरफ जा निकला वहाँ एक तमाशा नज़र आया कि एक मकान है और उसके बाहर एक बड़ा दरख्त और दो बड़े कुएं हैं उस दरख्त पर एक बंदरिया बैठी है कभी नीचे उतरती है और कभी ऊपर चढ़ती है। राजा यह कौतुक छिपा हुआ देख रहा था इतने में निगाह उसकी ऊपर गई क्या देखता है कि उस हवेली पर एक बालाखाना है जब दरख्त पर चढ़ गया तो देखा कि वहाँ एक पलंग बिछा है और सब ऐश आरामका असबाब धरा है तब मनमें कहा अभी ज़ाहिर होना अच्छा नहीं पहिले यह मालूम करूं कि कौन आता है और कौन जाता है जब ठीक दोपहर दिन हुआ तो एक सिद्ध वहाँ आया। बाई तरफ जो कुंआं था उसमें से

उसने एकतूबा जल निकाला कि वह बंदरिया उतर आई। सिद्धने एक चुल्लूपानी उसपर डालदिया तब वह खूबसूरत स्त्री होगई और उस रूपवती त्रियासे योगी ने भोगकिया। जबतीसरा पहर हुआ योगीने दूसरे कुंयेसे पानी खेंच उसपर छीटामारा फिर वह बंदरीकी बंदरी बनगई ओर दरख्त पर जा चढ़ी योगी भी पहाड़की गुफा में जा बैठा और अपना योग करने लगा। राजा ने प्रकटहो चतुराई कर बाँए कुंएसे जल निकाल उस बन्दरीपर छींटा मारा फिर वह ऐसी सुन्दर नारी हुई कि मानों इन्द्रके अखाड़ेकी अप्सरा है और राजाको देख लाजसे मुँह फेरलिया। कामके बाण राजाको आ नलगे प्रेमकर उसको अपने पास बैठालिया जब उसने आंखप्यार की देखीतब हँसकर बोलीमहाराजा ! हमारी ओर और दृष्टिसे मतदेखो क्योंकि हम तपसी हैं जो हम शापेंगी तो तुम भस्म होजाओगे। राजा बोला कि शाप मुझे न लगेगा मैं राजा बीर विक्रमादित्यहूँ कोई मेराक्या करसक्ताहै कि मेरे हुक्म में ताल बैताल हैं विक्रमका नाम सुनतेही वह वाला राजाके चरण पर गिरपड़ी और कहा महाराज ! तुमतो नरेश हो हमारा उपदेश सुनो जल्दी यहांसे जाओ अभी यतीआता है तो मुझे

तुम्हें दोनों को शापदेकर जलाता है तब नरपति बोला कि हम यतीके सामने न होंगे हमारा तो कुछ वह न करसकेगा पर स्त्रीहत्या हमें लेनी उचित नहीं क्योंकि स्त्रीहत्या लेनेसे आखिर को नरक भोग करना पड़ता है। फिर राजाने कहा कि उस सिद्ध ने तुझे कहाँ पाया तब वह बोली कामदेव मेरा बाप है और पुष्पावती मा है। मैंने उनके कुलमें अवतार लिया था जब वारहवर्ष की मैं हुई तब उन्होंने मुझे एक आज्ञा की और मैंने भंग की तब माता पिताने क्रोध कर यती को देहाला और यह मुझे अपने बश करके इस बनमें ले आया बन्दरी करके रख चढ़ाया। इस शकलसे एक बरस गुज़रा कि मैं इस बनमें हूँ सच है कि किसमत के लिखे को कोई मिटानहीं शक्ता यही शोचकर मैं चुपकी हूँ तब राजा बोला मेरा जी चाहता है कि तुझे अपने घर ले जाऊँ वह बोली महाराज! मेरे दिल में यही है पर क्योंकि जाऊँ कि तुम्हारा नगर समुद्र पार है तब राजाने बचन दिया कि मैं तुझे ले चलूँगा समुद्र नांघने की फ़िक्र कुछ मत कर। इस तरह ले जाऊँगा कि तुझे मालूम न होगा। यों दोनों ने आपस में बातें कर रैन आनन्द से भोर की और सबेरा होते ही पानीद्वारे से कुँए से निकाल उसपर छिड़का कि फिर वह

बँदरियाहो कूद दरख्तपर जा चढ़ी राजा वहीं छिप-  
 रहा । उसीदम योगी आन पहुंचा वही यतन योगी  
 ने कर छिन एक वहां सुस्ता खुशीकी जब चलने लगा  
 तब वह सुन्दरी बोली महाराज मेरी एक विनती  
 सुनिये कुछ प्रसाद मैं तुमसे मांगती हूँ सो तुम मुझे  
 दो । यह सुन योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसे  
 दिया और यह कहा कि एकलाल यह हररोज देगा  
 और कभी न कुम्हलायगा इसे तू अच्छीतरह रखना  
 यह सुनकर उसने अपनी चोलीमें रख दिया और  
 दिल उसका खुशहुआ योगी फिर उसे बँदरियाबना  
 के चला गया राजाने फिर कुँएसे पानी निकालकर  
 उसे नारी बनाया और उसने वह कमलका फूल  
 राजाको दिखाया और कहा महाराज एक अद्भुत  
 चरित्र है कि इसमेंसे एकलाल रोज निकलेगा यह  
 बात बुद्धिसे बाहर है । राजाने कहा इसका अचरज  
 नहीं भगवान् की सब कुदरत है और वह क्या क्या  
 नहीं करता ये बातेंकर रात ऐशसे काटी प्रभातहुआ  
 तब उस कमलमें से एक लाल गिरा दोनों ने यह  
 तमाशा देखा तब राजाने कहा कि चंचल अबयहां  
 ठहरना उचित नहीं बेहतर यह है कि मेरे देश को  
 चल । यह बात राजा की सुनकर वह बोली सुनो  
 महाराज एक मेरी आधीनी मैं पाँव पड़ कर जोड़

कहती हूँ कि तुम बड़े दानी हो ऐसा दानी मैंने कहीं नहीं सुना ऐसा न हो कि किसीको मुझे दान करदो मैं दासी हो हरवक्त तुम्हारी सेवा करूंगी। तब राजा बोला यह नहीं होसक्ता कि कोई अपनी नारी पर-पुरुषको दे यह कर्म विरुद्ध और लोक विरुद्ध है इस तरह उसकी खातिर जमाकर दोनों बीरों को बुला-या। वे आकर हाज़िर हुए उनसे कहा हमारे देश लेचलौ वीरतख्त पर बिठा उनको हवा की तरह ले उ-ड़े। वे तो यों अपने शहर की तरफ़ गए और योगी वहां जो आया और सुन्दरी को न पाया तो अच्छा पछता मनमार मुरझाकर रह गया निदान राजा अपने नगर के पास आया और सिंहासन से उतर उस राजकन्या का हाथ थांभ शहर को चला रास्ते में उसने देखा कि किसीका एक खूबसूरत लड़का दरवाज़े पर खेल रहा है राजकन्या के हाथ में कमल का फूल देखकर वह लड़का रोने लगा और बिलक २ बोला कि मैं यह फूल लूंगा राजाने कमल उसके हाथ से ले लड़के को दिया लड़का फूल ले हँसता हुआ अपने घर में गया राजा भी अपने मंदिर में जा बिराजा जब सुबह हुई तब उस कमल के फूल में से एक लाल गिरा लड़के के बापने उसे देख उठा लिया और कमल को छिपा रक्खा इसी रंग से हर रोज़ लाल निकला किया कि

एक दिन कितने लाल वह लेकर बाज़ार में बेचने गया। यह खबर कोतवालको हुई कोतवालने उसे पकड़वा मँगवाया कि तू बनियां तूने लाल कहाँ पाये। यों कह उसे बहुत सियासतकर लाल लेकर राजाके पास आया और सब वह अहवाल जताया तब राजाने कहा उसको भी लाओ और उससे पूछा तूने वे लाल कहाँ पाए। बनियें को बुलाकर पूछा ये लाल तू कहाँसे लाया और राजाने उससे कहा जो तू सच मुझसे कहेगा तो मैं तुझे और भी दौलत दूंगा और झूठ बोलेगा तो देश से निकाल दूंगा उसने अर्ज की सुनो भूपाल द्वारे खेलता था मेरा बालक उसके हाथमें कोई कमलका फूल दे गया और उसने आन मुझे दिया मैंने रातभर उसे अपने पास रक्खा सुबह होतेही उसमेंसे लाल झड़ा और हर रोज़ एक २ लाल योहीं निकलता है और अब भी वह फूल मेरे घरमें है। राजाने कहा यह तो तूने सब सच्ची बातें कहीं अब तू ये लाल अपने लेकर घरको जा कोतवालने बहुत बुराकाम किया जो बे-तहकीक तुझे पकड़ लाया इसका न्याय अब यह है कि लाख रुपए तुझे कोतवाल डाँड़ दे यह कहके कोतवाल से लाख रुपए दिलवा उसे घर को भेज दिया। ये बातें कह पुतली फिर बोली सुन राजा

वीर विक्रमादित्यके गुण और धर्म । तू मूर्ख है कुछ उसकी हकीकत नहीं जानता इससेही राजा को तू अपने आगे हीनकर मानता है और अपने तई मन में तू अधिक समझता है । ये बात पुतली से सुन राजा उस दिन योही अच्छता पछता रह गया वह सायत भी जातीरही सुबहको दूसरेदिन राजा सिंहासनके पास आ खड़ाहुआ और पुतलीसे पूछनेलगा कि तू खुशतो है कथा सुननेसे मुझे निहायत खुशी होती है और जो सुनता है महज्ज होता है तब ॥

मधुमावती नवीं पुतली बोली ॥

सुनराजाभोज यहां बैठकर । मैं एकदिन की कथा राजा वीरविक्रमादित्य की कहतीहूं एकदिन राजाने होमका आरम्भ किया जहां तक देशके ब्राह्मण थे उनको न्योता भेज बुलवाया और जितने उसके देशके राजा और शाहूकार थे वेभी हाजिर हुये भाट भिखारी भिक्षुक सुनकर सब देशदेश के राजा अपने सब लोगोंको लेलेआये और जितने देवता थे वेभी सबकेसब आये राजा अपने सिंहासन पर बैठा यज्ञहोने लगा कि एक बूढ़ाब्राह्मण उस समय आया । राजा अपने यज्ञके मंत्र पढ़ताथा ब्राह्मणको दूरसे देख मनमें दण्डवत् की । उस पंडित ने आगम विद्यासे मातूम किया हाथ बढ़ा राजाको

आशीशदी कि चिरंजीवहो जबराजाने मंत्र से फुसत पाई तब उस ब्राह्मणसे कहा कि महाराज आपने बहुत मन्दकाम किया कि बिनाप्रणाम आशीर्वाद तुमने दिया जबलग पांच न लागे कोई । तो वह आशीशशापसमहोई । ब्राह्मणने कहा राजा जब तूने मनमें दण्डवतकी तब मैंने आशीशदी यह बात सुन राजाने लाखरुपये ब्राह्मणको दिये ब्राह्मण कहने लगा महाराज इतने रुपयों में मेरा निर्वाह न होगा ऐसा कुछ विचार करदीजिये जिसमें मेरा काम होवे । राजा ने पांच लाख रुपये उसे दिये वह लेकर अपने घरकोगया और जो २ ब्राह्मण उस यज्ञमें थे उनको भी बहुत कुछ दिया । इसवास्ते राजा भोज । मैंने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासनके बैठने योग्य नहीं सिंहकी बराबरी सियार नहीं करसक्ता है और हंसकी बराबरी कौवे से नहीं होती और बन्दरके गलेमें मोतीकी माला नहीं सोहती और गधेपर पाखल नहीं फबती मेरा कहा मान और इस खयाल से दरगुजर नहीं तो नाहक किसी दिन तेरा प्राण जायगा । यह सुनकर राजा चुपरहा और वहदिनभी गुजरगया जब रातहुई अंदेशाकर सुबह को बदस्तूर सिंहासन के पास आया और चाहे कि पांच धरे तब ॥

प्रेमावती दशवीं पुतली ॥

हँसके बोली राजा । पहिले तुम सुझसे यह बात सुन लो पीछेइस सिंहासनपर बैठो राजा बोला तू कथा कह मेराभी जी सुनने को चाहता है । राजा वहां आसन बिछवा बैठा और पुतली कहने लगी सुन राजा एकदिन वसन्तऋतु में टेसू फूलाहुआ था मौरमौरायाहुआ कोयलकूकरही थी हवाचलरही थी राजा विक्रमादित्य अपने बागमें बैठाहुआ हिंडोला सुनताथा इसमें एकवियोगी किसी देशसे भूलाभटका आनिकला राजकेपांवपर गिरपड़ा और कहने लगा । स्वामी मैंने बहुत दुःखपया है और अब मैं आपकी शरण आयाहूँ और उसकी यह सूरत बनगईथी कि तमामलोहू बदनका सूखगया था और आंखसे कम सूझता था अन्न पानी सब छोड़ दियाथा किसीतरह धीरज नहीं परताथा राजा ज्योंर समझाताथा त्योंर वह बिरहसे ब्याकुल होहो रोताथा तब राजाने कहा तुम अपने जीको संभालो और इतने दुःखीक्यों हो और अब जो यहां आयेहो तो आपको तसल्लीहो किसकारण तुम्हारी ऐसी गतिहुईहै और किसके गमसे तुम्हारी यह शकल बनगईहै मुद्दा अपना कहो किसदेशसे आयेहो और क्या तुम्हारा नाम है वह

एक आहसर्द दिलपुर दर्दसे खेंचकर बोला नगर कलंजर देश है मेरा मैं मतिहीन निर्बुद्धि हूँ एक यतीने मेरे आगे यह बात कही थी कि एक खूबसूरत स्त्री एक जगह है वैसी सुन्दर कोई जगह में नहीं गोया कामदेवसे पैदा हुई है बल्कि तीनों लोकमें वैसी न होगी और लाखों राजा जी लगा उसके यहां आते हैं और जलरजाते हैं फिर वह यह हकीकत कहने लगा कि उसके बापने वहां एक आग भड़काई है और एक कढ़ाव भर घी चढ़ा रक्खा है वह घी पड़ा खोलता है और यह शर्त है उसकी जो उस कढ़ाव में स्नान कर जीता बच निकले उससे कन्या की शादी करूंगा यह बात उस योगीसे सुनकर मैं भी वहां गया था सो मैंने अपनी आंखोंसे यह तमाशा देखा हैरान हुआ और वहां हजारों राजा देश के लाखों नौकर चाकर साथ लेकर आते हैं यह देख पछताकर लौट जाते हैं उनमेंसे जो इरादा करता है कढ़ाव में गिरकर जलभुन जाता है। जबसे शकल उस राज-कन्या की नज़र आई है सुध बुध मैंने गँवा अपनी हालत यह उसके इश्क में बनाई है। यह बात सुनकर राजाने कहा आज तुम यहां रहो कल हम तुम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिला देंगे अपनी खातिर जमा रक्खो यह बात कह उसे स्नान

करवा कुछ खिलवा अपनी सभामें बिठलाया यह हुक्म किया जितने संगीत विद्यावाले हैं सब तैयार होहो आज यहां आकर हाज़िर होवें और अपना अपना मुजरा बतलावें। राजा की आज्ञापाय सब आन हाज़िर हुये और अपना अपना गुण ज़ाहिर करने लगे। राजाने उससे कहा कि इनमेंसे जिस पातुर को तुम चाहो हम तुम्हें दें तुम यहां बैठकर सुखभोग करो और उसका खियाल दिलसे भुलादो। सुनकर वह वियोगीबोला महाराज सिंह अगर सात दिन उपास करे तो भी घास चरे सिवाय उसके मुझे किसी औरकी इच्छा नहीं इसीतरह तमामरात बीती जब तड़का हुआ तब राजाने स्नान पूजाकर उनवीरोंको यादकिया वे तुरंत आन हाज़िरहुये और अर्ज की महाराज ! क्या हुक्महै हम किस देशको तुम्हें लेचलें राजाबोला जहां यह प्रेमीकहै। उसने कहा राजकन्याके नगरमें लेचलो जिस जगह वह घीका कढ़ाव खोलरहा है और सारा आलम वहां जमाहै उसी देशको लेचलो राजाने तख्तपर उसको भी बिठला अगिया कोयला दोनों वीरों को हुक्म किया कि उसी देशमें लेचलो वीर सुनतेही लेउड़े और एकदम में सिंहासन उसी शहरमें जाकर रख दिया राजाने वहां जाकर देखा बाजेबाजरहे हैं और

मंगलाचार होरहोहै । वह राजकन्या हाथमें फूलों का माला लिये फिरती है और राजपुत्र वहां उसके लिये कामना करके जो गये हैं सो सब वहां खड़े हैं लेकिन हियाव किसीका यह नहीं पड़ता जो उस कढ़ाव में कूदे और जो कोई जानपर खेलकर कूदता है तो जलभुन जाता है । राजाने जब उस कन्याके पास जाकर देखा उसके रूपको देख मोहित होरहा और कहा जिस कोखसे यह कन्या पैदा हुई है धन्य है उस कोखको आदमी की तो क्या जान है इसे देवता देखे तो बेसुधहोजावे इतनी बात राजाने कह कर बीरोंको कहा कि हम इस कढ़ाव में कूदते हैं तुम खबरदार रहना बीर बोलेमहाराज ! निश्चिंताई से कूदिये और किसीबातका खौफ न कीजिये । इतनीबात कह राजा कढ़ाव के पास जा झड़ाकसे कूदपड़ा कूदतेही जलभुन राख होगया बैतालने देखा और तुरंत अमृत लेआया और राजाके ऊपर डाला पड़तेही उसके राजा राम राम करखड़ा होगया और जितने ब्राह्मण वहां थे जय जय करने लगे वह जो राजकन्याथी उसने आतेही फूलोंका हार गलेमें राजाके डालदिया वह जयमाल जब उसने राजाको पहिनादी तब सबलोग अचंभे में रहगये कि यह राजा कोई अजबतरहका आया जो

जल गया और फिर जीउठा यह काम मनुष्यका नहीं है कोई देवता है जिसने ऐसा काम किया। राजाकी नियत पूरी हुई। तब उस कन्यासे ब्याहकी तैयारी हुई। राजाके मुल्कके जितने लोग थे सब खुश हुये और मन्दिर में भी रानियां मङ्गलाचार करने लगीं। इस तरह राजासे शादी कर दी दहेजमें जवाहिर जोड़े घोड़े हाथी पालकी और तमाम माल असबाब कई करोड़का दिया यह देकर आधाराज संकल्प कर दिया और दासीदासभी बहुतसे दिये तब वह बिरही जो इसके साथ था देख देख बहुत खुश हुआ जब ये सब देले चुके राजाने बिदामांगी उस राजाने सब असबाब और माल उस ब्याही हुई दुलहन समेत साथ उसके कर रुखसत किया और कहा अपने देशको तुम जाओ राजाने कहा हमपर दया मया रखियो वह बोला हमारा मुह इस लायक नहीं कि तुम्हारी कुछ तारीफ करें जैसा साहस तुमने किया ऐसा न हमने आंखोंदेखा न कानोंसुना इस कलियुग में तुम कोई अवतार हो एक जवानसे हम कहाँ तलक तुम्हारी सिफत कर सकें एक सिर है हमारा हम तुम्हें क्या चढ़ावें तुम्हारे पराक्रम पर करोड़ों सिर सड़के हैं जो नियत हमने की थी सो तुमने पूरी की इसका भरोसा हमें न था

कि यह इरादा हमारा पूरा होगा राजकन्या हाथ जोड़ कर राजासे कहने लगी महाराज ! मेरा यह दुःख तुमने छुड़ाया नहीं तो मेरे बापने ऐसा पाप किया था कि आप तो नरक भोग करता और मैं उमर भर अनव्याही रहती इतनी बात कह प्रेमावती पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! ऐसा पराक्रम करके उस कन्याको राजा लाया और उस बिरहीको उसे देते बार न लाया राजकन्या और सब माल असबाब देकर खाली हाथों अपने मन्दिर में आ दाखिल हुआ और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस तुझसे न हो सकेगा । यह सुनकर राजा हैरान हो शिर नीचे कर लिया वह सायत भी गई गुजरी फिर दूसरे दिन राजा जब सिंहासन के पास गया और चाहे कि बैठे तब ॥

परमावती ग्यारहवीं पुतली ॥

हँसकर बोली राजा ! पहले मुझसे कथा सुन ले पीछे सिंहासन पर पांव दे । फिर कहने लगी एक दिन राजा वीरबिक्रमादित्य उज्जैन नगरको गया और अपने सब आदमियोंको बिदा कर आप वहां रातको रहा सोता था कि उत्तरदिशा की ओरसे एक स्त्री धायमार उठी और पुकार २ कहने लगी कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबर ले इस पापीसे मुझे बचावे और जी दान दे । दम में मरी २ पुकारती थी । और

दममें चुप हो जाती थी। उसकी आवाज़ सुनकर राजा चौंकपड़ा ढाल तलवारले अँधेरी रातमें उधर अकेला उठचला किसीको खबर न हुई जब वनमें राजा पैठा वह सुंदरी फिर रो २ पुकार उठी कि राजा वहीं जा पहुँचा देखा कि वहां एक देव उस स्त्री से रति माँगता है और वह नहीं मानती तब शिरके बाल पकड़ २ कर ज़मीन पर देदे पटकता है राजाने कहा अयं पापी! त्रियाको क्यों मारता है नरकसे भी नहीं डरता राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारने लगा राजाने कहा तू उसे छोड़ दे नहीं तो मैं तुझे मारता हूँ। यह सुनकर वह राजाके सन्मुख होगया गुस्सेसे शोरकर बोला या तो तू भाग या मैं तुझे खा जाता हूँ और तू कौन है जो यहाँ आया है तब राजाने गजब में आकर एकतलवार ऐसी मारी कि शिर उसका धड़से जुदा होगया तो रुण्ड मुण्डसे दोबीर निकले। राजाके दोनो हाथोंसे लिपट गये राजाने छलबलकर उनमेंसे एकको मारा दूसरा रैनभर लड़तारहा भोर होते भाग गया दैत्य जब भाग गया तब उस स्त्रीसे राजाने कहा अब तू जल्दी मेरे साथ चल और कुछ जीमें अंदेशा न कर। वह राक्षस मेरे डरसे भाग गया फिर न आवेगा। तब वह सुंदरी बोली कि सुनो भूपाल जो मैं सात द्वीप नवखण्ड पृथ्वी में जहाँ भागकर

छिपरहूंगी परउससे बचने न पाऊँगी वह आकर लेजायगा उसके बिना मरे मेरी जिन्दगी न होगी। उसके पास एक मोहनी पुतली है वह उसके पेटमें रहती है जहाँमें छिपूंगी उसके बलसे वह हूँद निकालेगा और उस पुतलीमें यह ताकत है कि एकदेव मरने से चारदेव बनासक्ती है यह बात उसकी सुनकर राजा उसीबनमें छिपरहा सुबह होतेवह देव आया उस औरत से फिर ख्वाहिश करने लगा जब उसने नमाना तब बालशिरके पकड़ ज़मीनपर पटकने लगा वह तो धाड़ करने लगी। उसकी आवाज सुनतेही राजा निकल आया और लड़नेको तैयार हुआ देव भीस्त्री को छोड़ राजाके सामने हुआ चाहे कि राजाको मारे इतनेमें राजाने ऐसा एक खांडा मारा कि धड़से शिर अलग होगया। उस धड़से वही मोहनी निकल आई और अमृत लेने चली राजाने वोहीबीरोंको आज्ञाकी यह जाने न पावे। बीर दौड़कर उसकी चोटी पकड़ खेंच लाये और राजा के सामने हाज़िर किया। राजाने उससे पूछा कितू चंपावर्णी मृगनयनी गजगामिनी कटिकेहरी चन्द्रमुखी नखाशिख ऐसी कि हँसीसे तेरे फूल झड़ते हैं और तेरी सुगन्ध से भँवरे मंडलाते हैं बतला कि तू देवके पेटमें क्योंकर रहीथी तब वह बोली सुन राजा पहिले मैं शिवगण थी एक आज्ञा

शिवकी मैं चूक गई तिससे उन्होंने शाप दिया मैं मोहनीरूप होगई और इस दैत्यने महादेवकी बहुत तपस्या की तब सदाशिव ने मेरे तई इसको बख्श दिया फिर इस पापीने मुझे लेकर अपने पेटमें डाल रक्खा तबसे मैं मोहनी कहलाई पर शिवकी आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो और जो यह कहे सो मानियो यों इसके बशहोकर मैं रहती थी मेरा माजरा था जो मैंने तुमसे कहा अब यह वैताल मुझे काबूकर तुम्हारे पास लाया है और आदमीकी इतनी कुदस्त नहीं थी बल्कि तुम भी बहुतेरा उपाय करते तो भी तुम्हारे हाथ न आती अब राजा मैं तुम्हारे बशमें हूं। राजा बोला अब तू क्या करेगी तब वह बोली तू राजा है और मैं मोहनी हूं तेरे पास रहूंगी ज्यों महादेव के पास पार्वती। यह कह कर वचन दिया एक वह मोहनी दूसरी वह स्त्री जिसे देव से छुड़ाया था राजाके साथ हुई ये बातें कर परमावती पुतली बोली सुन राजा भोज ! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्य ने व्याह किया और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं मैं कहती हूं तू सुन कान देकर वह स्त्री दैत्यसे जो ली थी उससे राजा ने यों कहा सुन सुन्दरी मैं तुझसे पूछता हूं देवने तुझे कहाँ पाया था कौन द्वीप और कौन नगर है तेरा और कौन

बापहै तेरा नामले उसका अपना सब व्यौरा मुझ से कह और सब बातें तुर्तबता देर मतकर तेरी व्यवस्था सुनकर जैसा तू कहैगी वैसाही मैं विचार करूंगा वह नारी बोली महाराज ! मेरी कथा सुनो किस्मतका लिखा मिटता नहींहै और जो कुछ विधाता ने कपालमें लिखदियाहै वह इन्सानको भुगतना होता है । एक ब्रह्मापुरी है समुद्र के पास जिसे सिंगलद्वीप कहतेहैं ब्राह्मणकी मैं बेटी हूं । एक दिन सखियोंके संग तालाबपर स्नान करनेगई थी और वह तालाब ऐसाथा कि घनेर दरख्तोंसे सूर्य वहां नज़र न आताथा वहां सखियोंके साथ स्नान पूजा करके घरको आतीथी कि सामने यह राक्षस नज़र आया और रति मांगनेलगा । ज्योंर मैं न मानती थी त्योंर मुझे दुःख देता था और मैं अनव्याही अपना धर्म क्योंकर गवांती । कितने दिनोंसे मुझे सताता था और नरक पड़नेसे न डरता था राजा तूने मेरा धर्म रक्खा और मेरे कुलकी लाजरक्खी तुझे संसार में यश होगा जैसा तूने उपकार किया वैसाही मुझसे आशिष ले हजार वर्ष तक जीता रह और किसीके बश न पड़ दिनबदिन सत् औरतेज बढ़े साहस तेरा ऐसा हो कि कोई न जीते । इतनी आशिष जब वह देचुकी तब उसे बेटीकह राजा ने

अपने पास तख्तपर बिठालिया और मोहंनीको भी उठा बैतालोंको हुक्मकिया कि हमारे नगरकोचलो बैताल बोहीं लेउड़े पलक मारते महल में ला दाखिल किया राजाने आतेही दीवानको याद किया वह मंत्री आकर हाज़िर हुआ कहा कोई पण्डित सज्जानी ब्राह्मण हूँदकर जल्दी लेआवो । प्रधान ने आज्ञा पाय नगर २ ब्राह्मणों को भेज एक ब्राह्मण सुन्दर विद्यावान्को बुलवाया मार्कण्डेय नाम वह ब्राह्मण जब आया प्रधान राजा के पास लेगया । राजाने हाथ जोड़कर कहा एक ब्राह्मण की कन्या हमारे यहां है उसे हम तुमको दिया चाहते हैं तुम भी यह बात कबूल करो । ब्राह्मण बोला राजा वह कन्या हमको दो जगमें तुम यश धर्म बढ़ाई लो । राजा यहवात सुनतेही ब्राह्मणको तिलक दे शादी का सामानकर दान दहेज तय्यार किया फिर ब्राह्मण को बुला संकल्पकर कन्यादान करदिया । इतनीबात कहकर पुतली समझानेलगी सुनराजा । वीरविक्रमादित्यने कुछ शोच न किया और लाखों रुपयोंका दानदहेज दे एक पलमें ब्राह्मणके हवाले किया । तू इस लायक नहींहै सिंहासनपर बैठने से डर ऐ राजा भोज ! तू गुणग्राहक है । दानी और माहसी नहीं तू नाहक हिंस करता है यह सुनकर

राजा चुपहोकर रह गया और सुबह होतेही फिर सिंहासन पर बैठनेको तय्यार हुआ तब ॥

कीर्त्तिमती बारहवीं पुतली ॥

बोली सुन राजाभोज एकदिन राजा वीर विक्रमादित्य अपनी मजलिसमें बैठकर कहनेलगा कि कलियुगमें औरभी कहीं कोई दाताहै यह सुनतेही एक ब्राह्मण बोला सुन राजा प्रजाके हितकारी तेरे बराबर तो साहसी और दानी कोई नहीं पर एक बात मैं कहा चाहताहूं शर्मसे कह नहींसक्ता । राजा ने कहा सत्यबातमें लाजकाहेकीहै तुमहमारे आगे साफकहो हम उसबातमें बुरा न मानेंगे वह ब्राह्मण बोला एक राजा समुद्र किनारे रहता है और सदा धर्मकार्य करताहै जब वह सुबेरे स्नानकिया चाहता है तब लाख रुपए दानदेताहै और जल पीताहै यह तो एक मैंने उसके दानकी रीतिकही औरभी बहुत कुछ दान करताहै और ऐसा राजा धर्मात्मा हमने सिवाय उसके दूसरा नहीं देखा । यह बात सुनकर राजाके जीमें इच्छा हुई कि उस राजा को चलकर देखिए यों अपने जीमें विचारकर बैताल्लों को बुला तख्तपर सवारहो समुद्र के किनारे चला और जब उसके नगर के पास पहुँचा तब सिंहासन से उतर बैताल्लों से कहा अब तुम देश को जाओ और हम

इस राजाकी सेवा करनेपर तय्यार हुए तुम वहांसे हमारी खबर लेते रहिए । तब बैताल बोला इसका विचार क्या राजाने कहा तुम्हें इससे क्या है काम जो हम तुम्हें कहते हैं सो करो । यह बात सुनकर बैताल अपने नगरको आए राजा पावों २ शहर में दाखिल हुआ जब फिरताहुआ नगरमें राजाकेद्वारे जा पहुँचा द्वारपालोंसे कहा कि अपने राजाको समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारे द्वारे सेवा करने के लिए खड़ा है । इसकी बात खूँटीदारोंने सुनकर जा राजासे अर्ज की राजा सुनतेही हँसताहुआ आपही बाहर निकल आया विक्रम ने जुहार की राजा ने सलाम लेकर पूछा क्षेमकुशलसे हो तब वह बोला आपकी दयासे फिर राजाने कहा तुम किसदेश से आओ तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा अर्थ क्या है सब सुनाओ यह बोला सुनो महाराज ! मेरा नाम विक्रम है राजा विक्रमके देशका मैं रहनेवाला हूँ कुछ बैराग मेरे जीमें हुआ इससे मैं आपकेदर्शन को आया हूँ आपका दर्शन मैंने किया सब मेरा शोच विचारगया । राजा बोला तुम्हें हम क्या रोज कर दें और कितने में तुम्हारा निर्वाह होगा तब इस ने कहा चार हजार रुपये में मेरी गुजरान होगी । यह सुनकर राजाने कहा ऐसा क्या काम करते हो

जो चार हजार रुपए रोजीना हम तुम्हें दें वह काम हमसे कहो कि हम यह करेंगे । फिर विक्रम बोला जिस राजाके पास मैं रहता हूँ उसकी गाढ़ी भीड़ में काम आता हूँ इस तरहसे चार हजार रुपए रोज लेकर राजा वहां रहने लगा । यह बात पुतली ने समझा राजा भोजसे कही जब इस तरहसे नव दश दिन गुजरे तब राजा विक्रमादित्य ने अपने मनमें विचारा कि जो लाख रुपए रोज दान करता है उस का नित्यनेम क्या है इसे मालूम किया चाहिए किस देवता का इसे बल है इसी शोच में रहने लगा एक दिन देखता क्या है दोपहर रातके समय राजा अकेला बन को जाता है यह देखते ही उसके पीछे होलिया आगे २ राजा पीछे २ विक्रमादित्य इस तरीक़े शहरसे बाहर निकल एक बनमें पहुँचे वहां जाकर देखा तो एक देवीका मन्दिर है उस मन्दिर के बाहर कढ़ाव चढ़ा है और उसमें ब्रह्मकी आगसे घी औटता है । वह राजा तालाबमें स्नान करके देवी का दर्शन कर उस कढ़ावमें कूद पड़ा और पड़ते ही भुन गया । वहीं चौंसठ योगिनियां आन के राजा के उस तलेहुए बदन को नोचकर खा गईं इतने में कंकालिन अमृत ले आई और उसके हाड़ पंजर पर छिड़का वह रामर करके उठ खड़ा हुआ तब देवीने

मन्दिरसे लाखरुपए दिये और वह लेकर अपनेघर को आया तब योगिनियां अपने धाम को गई यह तमाशा देखकर राजा विक्रमादित्य भी उसीकढ़ाव में कूद पड़ा और उसी तरह जलगया फिर तुरंत योगिनियां दौड़ीं और उसको भी खा गई उसी तरह कंकालिन ने अमृतला इसपर भी छिड़क जिला दिया मंदिरमेंसे लाख रुपये उसे भी देवीने दिये रुपये ले दुबारहं फिर वह कढ़ावमें गिरा । योगिनियां फिर जला भुना गोश्त बदन का नोचकर खा गई और कंकालिन ने अमृत छिड़क जिला दिया फिर देवीने दोलाख रुपये दिये । गरज वह इसी तौर सात बेर गिरा और लाख रुपये हरमर्तबे में सिवाय पाये जब आठवीं दफा इरादा गिरने का किया तब देवी ने आन के उसका करधरा और कहा मांग जो तुझे चाहिये विक्रम हाथ जोड़कर बोला मैं मांगूं जो मांगा पाऊं । देवीने कहा जो इच्छा में आवे मांग वही मैं तुझे दूंगी । राजा ने कहा देवी ! जिस थैली में से रुपये दिये हैं वह थैली तुझे कृपाकर दीजिये यह सुनतेही उसने वह थैली दी वहखुश हो राजाके स्थान पर गया और उसके दूसरे दिन रातको फिर वह राजा बनमें गया और वहां उसने देखा कि न देवीका मंदिर

है न कढ़ाव है स्थान भङ्गपड़ा है । यह दशा वहां की देख शोच में रोने लगा आखिर को लाचार हो उलटा फिर अपने मन्दिर आ उदास हो सो रहा । भोर हुये जब सभाके लोग आये राजा को देखा कि निढाल पड़ा है न हँसता है न किसी से बोलता है बल्कि जो कोई राज काजकी बात करता है सुनकर मुंह फेर लेता है यह हालत राजाकी देख दीवान ने बिनती कर कहा महाराज ! आप के मन मलीन होने से सारी सभा उदास हो रही है राजाने यह जवाब दिया तुम बैठकर दरबार करो मेरा शरीर मांदा है । तब प्रधान बैठ राजकाज की बात करने लगा और जो कोई आताथा अपने मनमें जो चाहताथा विचारता था कोई कहता था कि राजा बीमार है कोई कहता है कि राजाको कोई मोहगया और कोई कहताथा कि राजा है नहीं परजा की अवस्था किसीपर मात्तूम न थी । इतनेमें अपने समय पर राजा विक्रमादित्य भी गया और पूछा कि तुम्हारे मनमें क्या दुःख है क्योंकि मैंने तुम से प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारी मुश्किल में काम आऊंगा सो मेरा वचन क्या आप भूल गये मेरे आगे अपनी सब व्यवस्था व्योरेवार कहिये । तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे

क्यों अपनी बात कहूँ पर एक मेरे जीमें है प्राण  
घात करूँगा बिक्रमने कहा पृथ्वीनाथ ! एक बेर  
मेरे आगे अपने मनकी ब्यथा कहिये तब पीछे  
और यत्न कीजियेगा राजाने कहा एक देवी मेरे  
पास थी सो मैं नहीं जानता वह कहाँ गई लाख  
रुपये रोज़ वह मुझे देती थी वे लाख रुपये मैं नित्य  
दान करता था और अब मुझे बड़ा कष्ट हुआ है मेरी  
नित्य क्रिया निबहेगी नहीं इसी वास्ते मैं जानदूँगा  
और ऐसामें किसी को नहीं देखता जिसमें मेरा  
नित्य नेम चले और जो धर्म पुण्य न रहेगा तो मेरा  
जीना संसार में अकार्थ है यह बात उसकी बिक्रम  
ने सुनते ही वह थैली हाथ दी और कहा महाराज ! अब  
स्नान ध्यान कर नित्य धर्म कीजिये और थैली से  
जितने रुपये चाहोगे खर्च करोगे कम कभी न होगा  
वह सुनते ही खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथ  
से ले अपने प्रधान को बुला उसमें से रुपये नि-  
काल खर्च को दिये और कहा जितने ब्राह्मण स-  
दा दान पाते हैं उनको उसी तरह दो दीवान मा-  
फ़िक हुक्म के अपने काममें मशगूल हुआ राजा  
बीरबिक्रमादित्य ने कहा महाराज मुझे आज्ञा दीजिये  
तो मैं अपने देश को जाऊँ बहुत दिन गुजरे हैं तब  
वह राजा बोला हम तुम्हारे कहां तक गुणमानेंगे

तुमने हमें जीवदान दिया है फिर कहा जो तुम अपने देश पहुंचो संदेशा हमें भेज देना कि हम क्षेम कुशल से पहुंचे और ठीक अपना ठिकाना बता जाओ जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुंचे तब उसने कहा मैं राजा विक्रमादित्य हूँ अंबावती नगरी का राज करता हूँ तुम्हारा नाम और यश सुनकर दर्शन के लिये आया था सो तुम्हें देखा और मेरा चित्त प्रसन्न हुआ तुम अच्छी तरह राज करो और हमें बिदा दो तुम्हारा साहस बल धर्म हमने देखा। यह सुनते ही वह राजा पावों पर गिर पड़ा और हाथ जोड़कर कहने लगा बड़ा अपराध हुआ और मैंने तुम्हारा मर्म न जाना तुमने मेरी सेवा की सो तुम अपने जीमें कुछ न लाना और जैसा धर्म मैंने आपका सुना था वैसा ही देखा और धन्य है तुम्हारे तर्ह और राजा तुम्हारे धर्म साहस और पराक्रम को यह कह राजा को तिलक दे बिदा किया राजा बीरों को बुला सवार हो अपने नगर में आया। इतनी बात कीर्तिमती पुतली कहकर राजा को समझाने लगी सुन भोजराजा वीर विक्रमादित्य का साहस ऐसी वस्तु पायकर देते कुछ बिलम्ब न लाया और अपने जीमें न पल्लताया और जैसा साहस राजाने किया वैसा सुनकर कोई नहीं करता और त कितनी गिनती में है।

यह सुन राजाभोज चुप होरहा फिर दूसरेदिन के प्रभात समय राजा उठ तैयार हो पाटबैठने को गया । मनमें इरादा बैठने का करता था फिर शिक्षककर रहजाताथा इतने में ॥

त्रिलोचनी तेरहवीं पुतली ॥

बोलउठी सुनराजा एक पुरातन कथा मैं तुझे सुनाऊं इससिंहासनपर वही चढ़ेगाजो विक्रमकेसम पराक्रमकरेगा तब राजा नेकहा कहसुन्दरी । विक्रम काबल और कथा सुननेकोमेराभी मनचाहताहै । पुतली बोली सुनराजा कानदेकर एकदिन राजा वीरविक्रमादित्य शिकार खेलने को चला और साथ भी जितने मुसाहिब राजपूत बली थे वेभी सज सजाकर तैयार हो आये और एक २ की सवारीमें हजार २ कोसके धावे का तुरंगथा । राजा अपने घोड़ेपर सवार था और वह गोया छलावाथा । राजकुमार अपने अपने शिकारी जानवर बाज बहरी, जुर्रा शाहीन कूही लग्गड़ मँगवा २ अपने २ हाथों पर लेले साथहुये और राजानेभी एक बाज अपने हाथपर बिठालिया । मीरशिकारों को हुक्म पहुंचा कि जिसके २ पास जो २ शिकारी जानवर तैयारहैं लेकर रिकाब में हाजिरहोवें इसतरह बनठनके एक बनकी राहली और वहां जाकर किसीने बाज और

किसीने बहरी किसीने कूही किसीने शाहीन उड़ाई और अपने २ जानवरों के पीछे घोड़े उड़ाये और उधर राजाने भी जितने मीरशिकार थे उन्हें हुक्म किया कि एकजंगलमें सब शिकारकरो मैं तमाशा देखूंगा जो शिकार करलावेगा वह इनाम पावेगा और जो शिकार न करलावेगा वह नौकरी से दूर होवेगा। यह बात सुनतेही जितने मीरशिकार थे उनसभोंने उस बनमें चारोंतरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म बहेलियों को किया कि तुमभी शिकार करो इसीतरह सब शिकार करतेथे और लालाके राजाको गुजरानते वह खड़ातमाशा देखरहाथा फिर उसने एक परन्दपर बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा जिधर २ वह भागा जाता था राजा भी पीछा किये जाता था इसमें कोसों निकलगया देखे तो शामहोगई तब सुतआई और फिरकर पीछे देखातो वहां कोई आदमी नजर न आया और वहां तमाम फौज राजाकी शामहुये पर राजाको हूँहूँ शिकार लेले आनकर नगरमें दाखिलहुई और वहां सुनेजंगलमें राजा भटकता फिरताथा और कहीं राह न पाताथा जब अँधेराहोगया और रात बहुत गई एकनदी के किनारेपर पहुँचा। उतरकर अपने हाथ जीनपोश बिछा घोड़े को एकझाड़ी में बांध

बैठ रहा फिर देखता क्या है कि वह नदी बढ़ती आती है यह हटने लगा गरज ज्यों राजा हटता जाता था त्यों वह बढ़ती आती थी फिर जो निगाह की तो यह देखा कि नदी की धार में एक मुर्दा बहा चला आता है और उसके साथ २ एक बैताल और एक योगी खेंचा खेंची किये हुये आते हैं और आपस में यों झगड़ते हैं कि योगी बैताल से कहता है तूने बहुत मुर्दे खाये हैं और यह मैंने अपने अवसर पर पाया है तू छोड़ दे मैं इसे ले जाकर अपना योग कमाऊँ गोया यह सिद्धि मैंने तुझसे पाई बैताल बोला भाई मैं अजाना नहीं हूँ जो तू मुझे फुसलावे क्योंकर अपना आधार मैं तुझे दूँ । इसी तरह आपस में दोनों झगड़ते और कहते थे कोई तीसरा शख्स इस वक्त ऐसा नहीं कि हमारा न्यावचुकावे फिर योगी कहने लगा कि बैताल तू मेरी बात सुन कल प्रभात को हम तुम सभा करें जो सभा में न्यावचुके वही तू भी प्रमाण कर और मैं भी । इतने में एक दृष्टि राजा की ओर जा पड़ी देखकर दोनों हँसे और कहने लगे वह कोई मनुष्य नदी किनारे में नज़र आता है वहीं चलो कि वह न्याव निबेड़े । यह कहकर मुर्दा लिये दोनों किनारे पर आये राजा को तमाम किस्सा सुनाकर कहा कि स्वामी तुम धर्मात्मा हो धर्म विचार के

हमारा न्याय निवेद दीजिये योगी बोला महाराज मैं कहता हूँ सो आप ध्यानदेकर सुनिये इस बैताल ने बहुत मुर्दे खाये हैं और यह मुर्दा मैंने अपने दाँव पर पाया है यह नाहक मुझसे रार करता है और कहता है कि मैं तुझे न दूँगा मैं इससे विनती करके माँगता हूँ और कहता हूँ कि गोया यह मैंने प्रसाद तुझसे पाया यह नहीं मानता । राजा ने बैताल से पूछा कि तू भी अपने मनकी बात मुझसे कह । वह बोला महाराज यह योगी बड़ा मूर्ख है जो इसने मुझसे झगड़ा लगाया मैं हजार कोससे इस मुर्देको लेआया हूँ यह मुझसे माँग रहा है मैं इसे क्योंकर दूँ कि इस मुर्देके लिये मैंने बहुत कष्ट किया यह नाहक देखके मन चलाता है मैं क्या कहूँ कि जो २ मैंने इसके वास्ते दुःख उठाये अब आहारके समय इस दुष्टने आन सताया इसका न्याय तेरे हाथ है क्योंकि तू धर्मात्मा राजा है जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है तब राजा कहने लगा तुम दोनों बड़े ही प्रसाद हमें दो कुछ तुमसे माँगते हैं तब तुम्हारा न्याय हम चुका देंगे यह सुन योगी ने हँसकर झोले से यह बटुआ निकाल राजाके हाथ देकर कहा राजा तू जितना द्रव्य चाहेगा उतना यह बटुआ देगा इसमेंसे कभी कम न होगा फिर बैतालने कहा राजा

मैं एक मोहनी तिलक तुझो देता हूँ इसे जबतू घिस कर टीका देगा सब तुझसे दबेंगे तेरे सामने कोई न होगा। यह दोनों ने प्रसाद राजा को दिया उनने हाथ बढ़ाकर लेलिया और बोला कि सुन बैताल तू इस मुर्दे को छोड़ दे मेरे घोड़े को खा यह मुर्दा योगीके हवाले कर क्योंकि तू भूखा न रहे और उसका काम भी बन्द न हो। यह सुनतेही बैताल उस घोड़ेको चबागया और योगी मुर्दा ले अपना मंत्र साधने गया राजा ने बीरों को बुलाया और अपने देशको चला रास्ते में एक भिखारी सन्मुख से चला आताथा उनने चीन्हा कि शाकेबन्ध राजा आताहै डरतेर उसने सवाल किया कि महाराज आपके नगरमें मैं बहुत दिनों रहा लेकिन कुछ अर्थ मेरा सिद्ध न हुआ अब मैं कुछ तुमसे मांगता हूँ मेरे तई दीजिये। यह सुनतेही राजाने वह बटुआ उसके हाथ दिया और भेद बताया वह अशीश देता अपने घरको गया और राजा अपने मन्दिरमें आया कि सुन राजा इतनी बात कह बिलोचनी पुतली कहने लगी सुनराजा भोज! ऐसा दानी और ऐसा साहसी जो होवे सो इस सिंहासन पर बैठे नहीं तो पातकहै उसके दूसरे दिन राजा सबरे उठ स्नान ध्यानकर दरबार में आनबैठा और दीवान मुतसद्दीको बुला

कर कहा कि आज मेरा चित्त बहुत प्रसन्न है जल्दी चलके सिंहासन पर बैठूँगा इतनी बात कह वहाँसे उठ सिंहासन पास आया। सौ गोदान कर ब्राह्मणों को बिरतें करदीं फिर आप गणेशको मना सिंहासन पर बैठनेको पाँच बढ़ाया कि इतने में ॥

विलोचनी चौदहवीं पुतलीने ॥

कहा पहले कथा सुन जो मैं कहती हूँ पीछे सिंहासनपर बैठ राजाने सुनतेही पाँचखेंचलिया और सिंहासन के नीचे आसन के नीचे आसन बिछा बैठगया तब पुतली बोली कि राजा सुन एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य ने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मैं यज्ञकरूँगा जिससे पुण्य हो और आगे को निस्तारहोवे दीवानने सुनतेही देशर को न्योता भेजा जहाँ तलक राजा प्रजा थे उन्हें बुलाया कर्णाटक गुजरात काश्मीर कन्नौज तैलंग इन नगरों में भी न्योता भेज जितने ब्राह्मण थे उन्हें बुलाया और सातों द्वीप में न्योता भेजा वहाँके राजाओं को तलब किया फिर एकवीरको पाताल के राजा के पास न्योता भेज उसे बुलाया और दूसरे वीरको स्वर्ग को खानाकर देवताओं को न्योता भेज बुलाया और एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि तुम समुद्रको जाकर हमारी नण्डवत कहो और निवेदन करो कि

राजा ने यज्ञारंभ किया है और आपको बहुत विनती कर बुलाया है। वह ब्राह्मण तुर्त वहांसे चला और कितने एक दिनों में सागर के तीर जा पहुंचा और वहाँ देखता क्या है कि न कोई मनुष्य है और न वहाँ पशुपक्षी है केवल जल ही जल नजर आता है। यह देख ब्राह्मण अपने जीमें चिन्ता कर कहने लगा कि राजा का संदेशा मैं किससे कहूँ यहां तो कोई जीव दिखलाई नहीं देता और है तो जल ही जल है। ऐसा विचार अपने मनमें कर वह पुकारा राजा विक्रमादित्य का न्योता मैं दिये जाता हूँ और तुम जल्दी पहुंचना इतना कह वहांसे वह जब चला तब रास्ते में एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप समुद्र नजर आया और उसने पूछा कि वीर विक्रमादित्य ने हमें किस वास्ते बुलाया है तब उसने कहा कि राजा के यहां यज्ञ है और तुम्हें जरूर बुलाया है तब समुद्र बोला कि मैं चलूंगा पर मेरे चलने से जल जो यहां से बढ़ेगा तो कई नगर डूब जायेंगे मेरी तरफ से राजा को विनती कर कहना मेरे न आने का कुछ पछतावा न करना मैं इस सबब से पहुंच नहीं सकता। तब समुद्र ने ब्राह्मण को पांच लाल दिये और एक घोड़ा राजा को सौगात भेज आप वहीं रहा और ब्राह्मण रुखसत हो राजा के पास गया वे पांचों रत्न राजा को

दिये और घोड़ा ला सामने खड़ा किया फिर सब वहां का वृत्तान्त कहा तब राजाने प्रसन्न हो ब्राह्मण से कहा कि ये लाल और घोड़ा तुमहीं लो मैंने तुम्हें दिया यह कहकर पुतली ने राजा भोजको समझाया कि सुन राजा भोज ! ऐसा पदार्थ राजा विक्रमादित्य ने देते बिलम्ब न किया वे लाल और घोड़ा कई राजकी कीमत के थे ऐसे दानी राजा के आसन पर बैठने योग्य तू नहीं । पण्डित तू है परमाया तुझ से छूटती नहीं । यह दिन भी योहीं गुजर गया दूसरे रोज फिर सिंहासन पर बैठने को तैयार हुआ तब ॥

अनूपवती पन्द्रहवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा बीरविक्रमादित्य के गुण कहने में नहीं आसक्ते जो बात कहने योग्य होवे तो कहिये अयुक्त कहते हुये जीसकाता है राजा बोला तू कह मेरा जी सुननेको चाहता है जैसी बात है वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं तब पुतली बोली अच्छा अब मैं कहती हूँ तू कान देकर सुन । एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य सभामें बैठा था और कहींसे पण्डित आया उसने आकर राजा के सम्मुख एक श्लोक पढ़ा सुन कर राजा मनमें बहुत प्रसन्न हुआ उस श्लोक का मुद्दा यह था मित्रद्रोही और विश्वासघाती जो हैं सो नरकभोग करेंगे जबतक चांद और सूर्य हैं । यह

सुनकर राजाने लाखरुपये उसब्राह्मणको दानदिये और कहा कि इसका अर्थ मुझे समझाकर कह कि इसका वृत्तान्त क्या है तब वह ब्राह्मण कहने लगा कि एकबड़ा अज्ञानी राजा था उसकी एक रानी जो थी प्राणकी आधार थी पलभरभी वह राजा उसे आपसे जुदा न करता था जबसभा में बैठता तो साथही जांघपर लैबैठता और जब शिकारको जाता दूसरे घोड़ेपर बिठला साथलेलेता गरज जागना सोना खाना पीना एकही साथ था पर ऐसा मूर्ख था कि किसीसे पतियाता न था रानीको दृष्टि में रखता एकदिन उसके प्रधानने अवसर पाकर हाथ जोड़े और शिरनवा कहने लगा कि स्वामी जो मुझे जी-दान दो तो मैं एक निवेदन करूं राजाने कहा अच्छा तब वह बोला कि महाराज रानीके संग आप शोभा नहीं पाते राजकुल की आन और मर्याद इसमें रहती नहीं देश के राजा हँसते हैं और कहते हैं कि ऐसी सुन्दरी राजाके मनमें बसी है कि पलक ओट भी नहीं करता । एक मेरी बात मानिये जो आपको यह बहुत प्यारी है एकचित्रपट लिखवाइये और अपने पास रखिये इसमें लोग निन्दा न करेंगे । यह बात प्रधानकी राजाके मनमें भाई कहा अच्छा चित्रकारको बुलाओ । मंत्री ने उसको बुला भेजा

वह तुरंत आकर हाज़िर हुआ और वह मुसव्विर कैसा था कि ज्योतिषविद्या में अतिनिपुण था और चित्रकारीविद्या में भी पण्डितथा उसे राजाने कहा कि रानी की मूर्ति का पट लिख दे जो मैं अपनी नज़र में हमेशा रहूँ। यह सुनकर शारदपुत्र ने मस्तक झुका के कहा महाराज अच्छा मैं लिख लाता हूँ राजासे रुखसतहो अपने घर आया लिखना आरम्भ किया कितने एक दिनों में लिखकर वह चित्र तैयार किया सो ऐसा कि जाने अभी इंद्रलोकसे अप्सरा उतरी है और उसरानीका जैसा अङ्गजहाँ था तैसाही उसने अपनी विद्याके जोरसे लिखा जब वह तसवीर शिरो पाँवसे तैयार हुई लेकर राजाके पास गया और राजाने देखकर बहुत पसंद किया अंगर उसने निरखर देखा नखसे शिखतलक गोया साँचे की ढाली हुई थी राजाकी दृष्टि देखतेर दाहिनी जाँघ पर जापड़ी तो वहाँ एक तिलदेखा बहुतसा अपने जी में घबराया और कहने लगा कि उसने रानीकी जाँघका तिल क्योंकर देखा होय न होय तो रानी से उसकी मुलाकात है इसतरह अपने जीमें विचार क्रोधकर दीवानसे कहा कि उस चित्रकार को तुरंत बुलावो उसने सुनतेही उसे बुला भेजा जाना कि राजा खुश हुआ है कुछ इनाम देगा जब वह आन

कर राजा के सम्मुख हुआ तब बधिक बुला हुक्म किया इसकी गर्दन मारके आंखें निकाल मेरे पास लेआ जब वह उसे मारने चला दीवान भी बिदा हो पीछे होलिया बाहर निकल जल्लाद से कहा तू इसे मुझे दे और आंखें हिरण की निकाल कर राजा के पास लेजा जल्लादने प्रधान का कहना किया और दीवान राजाकी तरफसे बहुत बेएतिबार हुआ कि ऐसा मूर्ख राजा हमने कहीं देखा सुना नहीं है कि गुणवान् पुरुष का यों जी मारे कदाचित् गुणवान् पुरुषसे कुछ तकसीर होजाय तो उसे देशनिकाला देतेहैं यह राजाओंका चलन हमेशा से है पर कोई राजाओंकी बात पर न भूले मुँहमें तो उनके अमृत रहता और पेटमें विष भरेहुए हैं जो कहते कुछ हैं और करतेकुछहैं इसतरह दीवानने अपनेजीमेंविचार कर डरतेउसेछिपारक्खा और जल्लादहरिणकीआंखेंनिकालराजाकेपासलेगया किमहाराजउसकोमारकरआंखेंनिकालआपकेपास लायाहूं राजाने हुक्म किया इन आंखोंको सण्डास में लेजाकर डाल दो इसतरह से वह साइत तो यों टल गई कितने एक दिनोंके बाद उस राजा का बेटा एक दिन अकेला शिकारको गया जातेर एक महावनमें जानिकला एक शेर वहां नज़र आया बाघ को देख वह बहुत

डरा घोड़ा वहीं छोड़ एक वृक्षपर चढ़ गया उसके ऊपर जो देखे तो एक रीछ बैठा है रीछको देखते ही उसके हाथ पांव फूल गए और कांपने लगा चाहे कि बेताब होकर गिरे इसमें वह रीछ बोला कि ऐ कुँवर तू अपने मनमें भय मतकर मैं तुझे नहीं खाने का क्योंकि तू मेरी शरण आया है मैंने तुझे जीदान दिया अब तू निस्सन्देह होकर आनन्दसे यहीं बैठ यह बात रीछसे सुन उसके जीमें जी आया इसमें दिन बीत गया और रात हुई तब वह रीछ बोला राज-पुत्र अब रात हुई यह नाहर शत्रु हम दोनों का बैठा हुआ है इसवक्त सोना जीका जियान है बेहतर यह है कि दोर पहर रात हम आपसमें जागें आधी रात तू जाग और आधी रात मैं । राजपुत्र ने कहा बहुत अच्छा रीछने कहा पिछले दोपहर रातको तू सोरह में अब जागता हूँ और पिछले दो याम निशाको तू जागियो मैं सोरहूँगा । आपस में इसतरह दोनों ने करार किया राजपुत्र सोरहा वह रीछ बैठा और चौकी देने लगा इसमें शेरने रीछसे कहा तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो यह मनुष्य भक्ष्य है हमारा और तू क्यों विषका बीज बोता है इसे नीचे डाल दे हम दोनों खाजायें यह आदमी हैं हम तुम दोनों बनवासी हैं । हाथका माणिक गिरके फिर हाथ नहीं

आता जब यह जाग उठेगा तो तू सोवेगा तो वह तेरा शिर काटकर फेंक देवेगा अब यही बेहतर है कि मेरा कहना कर फिर यह अवसर न पावेगा आखिर को तू पछतावेगा । रीछने जवाब दिया कि सुन अज्ञान बाघ अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं जितना होता है पाप राजाके मारने और वृक्ष काटने से गुरुसे झूठबोलने और बन जलाने और विश्वासघात करनेसे इतनाही होता है शरणागतके मारने से इन सबका महापाप है और यह पाप किसी तरह छूटता नहीं इसने मेरी शरण ली है क्या हुआ जो एकजीव मैंने न खाया तब बाघ खफा होकर बोला कि तूने मेरा कहा तो न माना मैंभी तुझे जीता न जाने दूंगा इतनेमें रीछकी बारी तो पूरी हुई और राजकुमार जागा फिर रीछसोया वह चौकी देने लगा उससेभी यही बात बाघने कही कि भाई ! जो मैं कहूं सो तू सुन भूलकर भी तू इससे मत पतिया सोकर सुबहको जब यह उठेगा बेशक तुझे खाजायगा यह मुझसे कह चुका है कि सोकर उठंतो मैं इसे खाजाऊंगा इससे यह भला है कि तू पहलेही इसरीछ को गिरादे जो मैं इसे खाजाऊं और राह लूं । तू भी सही सलामतसे अपने घरको जा उसके परबोधने से यह बातों में आगया और उस दहने को पकड़

ऐसा हिलाया कि जिससे वह रीछतले गिरपड़े इसमें उसकी आंख खुल गई और टहने से लिपटकर रह गया और इस से कहा फिर ऐ पापी जो तूने मुझ से ये सलूक किया मैंने तेरी जान रक्खी और तू मतिहीन मेरे मारने को तैयार हुआ अब जो मैं तुझे मारकर खाजाऊं तो क्या कर सक्ता है यह बात रीछकी सुनतेही उसकी जान सूख गई अपने दिलमें जाना अब यह मुझे मुकर्रर खायगा इसमें सबेरा होगया बाघ उठकर वहांसे चला गया रीछने उसके कान में मूत दिया और कहा कि तुझे जीसे तो क्या मारूं क्योंकि अब यहां कोई तेरा बचाने वाला नहीं है इससे असमर्थ जानकर मैं छोड़ देता हूं यह कहकर रीछ तो चला गया और वह गूंगा बहरा हो वहां से बहुत घबरा ब्याकुल हो नगरमें आया। राजा उस की दशा देख अपने जीमें चिन्ता करने लगा महलों में जो खबर भई तोरानियां कूकमार २ रौने लगीं और कहने लगीं कि भगवान् ने यह क्या अयुक्त किया कोई कहने लगीं किसीने इसे छला है तिससे इसकी यह हालत होगई है राजाने शोचकर दीवान से कहा कि जितने गुणी लोग हैं यंत्र मंत्र जानने वाले नगर में उन सबको बुलवा कर कुँवर को दिखलाओ। प्रधानने आदमियों को भेज सब सयानों

को बुलाया और उन से कहा जिसमें इसे आराम हो सो किया चाहिये वे अपने यंत्र मंत्र करने लगे जिसकदर कि उन्होंने इसका उतारा किया कुछ फायदा न हुआ । हारकर उन सबोंने जवाबदिया कि हमारी विद्या यहां कुछ काम नहीं करती । जब मंत्रीने यहदेखा कि उन्होंके गुणों से इसे कुछ आराम न हुआ राजासे हाथजोड़कर बिनती की महाराज मेरे पुत्र की बहूजो है सो बड़ी गुणवन्ती है आप आज्ञाकीजिये तो मैं उसकेतई लेआऊं औरवह कुँवरको देखे भगवान्चाहै तो आराम होजायगा इसके सिवाय और यत्न नहीं । राजा ने कहा तेरे बेटे की स्त्री क्या जाने फिर दीवान ने कहा महाराज वह एकयोगीकी चेली है उसयोगीने यंत्रमंत्र विद्या उसे सिखादीहै राजाने आज्ञादी और दीवान सवारहो अपने घरकोगया वहां चित्रकारको बुला सब व्यवस्था वहांकी कही और कहा कि मैं इसतरह से राजाको बचनदे आयाहूं तू स्त्री का भेष बनाकर मेरे संगहोले उसने कबूल किया और स्त्री भेष बन साथ होलिया दोनों सवार होकर राजाके पासआये । लोग महलमें उसे परदाकरके लेगये दरमियान में एक कनात खेंचली और उसतरफ कनातके उसे बिठाया राजा और लड़का और दीवान ये तीनों कनातके

बाहर बैठे और उसने कनातके अन्दरसे कहा कि तू कुँवरको स्नान करवा कपड़े बदलवा चौका दिलवा एक पटरा बिछवा बिठाओ और कुँवरसे कहा कि तू सावधान होकर बैठ और जो मैं मंत्र कहूँ सो कानदेकर सुन बिभीषण बड़ा शूरवीर था और दगाकरके रामचन्द्रसे जामिला उसने रावणका राजसब खराबकिया अपने कुलका नाशकिया । उसलाजसे एकबरस तलक शिर न उठाया और अपने कियेका फलपाया कि सबकुछ गँवाया और भस्मासुरने महादेवकी तपस्याकर बर पाया और उन्हींसे विश्वासघात किया कि पार्वती के लेने की इच्छाकी और उसकाभी फल उसने तुर्तपाया कि क्षणभरमें जलके भस्महोगया और कुँवरतू मित्र-द्रोही और विश्वासघाती क्यों हुआ कि सोतेहुये रीछको तूने क्यों ढकेला उसने तो तेराउपकार कियाथा तूने उसका बुराबिचारा पर इसमें तेरा दोष कुछ नहींहै तेरे पिताका दोषहै इसवास्ते कि जैसा बीज बोवेगा वैसाही फल होवेगा यह तुमने अपने पिताके पापसे दुखपाया । इतनीबात सुनतेही कुँवर सचेतहो बोल उठा तब राजा बोला ऐ सुन्दरी! तू सच कह कि तूने वह बनका जानवर क्योंकर पहचाना यह सुतकर उसने जवाबदिया कि राजा । मैं

अपनी पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रकट करूँ सुन जब मैं अपने गुरुके पास पढ़ने जाती थी तब गुरु की अति सेवा करती थी गुरुने प्रसन्न हो एक मंत्र मुझे बता दिया वह मंत्र मैंने साधा तबसे सरस्वती मेरे मनमें बसी है और जैसे मैंने रानीकी जाँघका तिल पहचाना वैसाही बनके रीछकोभी जाना। यह सुनतेही राजाने प्रसन्न हो परदा दरमियान से दूर कर दिया और कहा कि तू सच्च शारदापुत्र है तेरे गुणको मैंने अब जाना यह कह राजाने आधार राज उसे दे दिया और अपना मंत्री किया। इतनी बात कह वह ब्राह्मण बोला कि राजा वीरविक्रमादित्य! इस श्लोकका यह अर्थ है यह कथा उस ब्राह्मणसे सुनकर राजा वीरविक्रमादित्य ने हजारगांव वृत्ति कर दिये ये बातें करके पुतली बोली कि राजा भोज तुझ में इतना गुण कहां और इस जगमें विक्रमसमान राजा होना मुशकिल है मैंने तुझसे यह सच्च बात कही और तू इस सिंहासन योग्य नहीं उस दिन की भी साइत योंही जाती रही राजा महलमें दाखिल हुआ दूसरे सुबहको उठा स्नान पूजाकर ध्यान लगा सिंहासन पास आखड़ा रहा और प्रधानको बुलाकर कहा कि मेरा जी चाहता है कि सिंहासन पर आज बैठूं बेहतर है कि दुधड़िया अच्छा मुहूर्त इस वक्त

मुझे देखदो दीवानने कहा महाराज आपतो बैठिये गा पर ये पुतलियां आपको रो २ मरेंगी राजा ठिठुक रहा और ॥

सुन्दरवती सोलहवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा मैं तुझसे विचारकर कथा का अहवाल कहतीहूँ । उज्जैन नगरी में छत्तीस कौम और चार ज्ञात बसती थीं एक वहांका नगरसेठ जिसके यहां अतिधन था और बड़ा प्रतापी था नगर के लोगोंको व्यवहार करने के लिये बहुत माया देता लेताथा जो कोई उसके पास अपना स्वार्थ विचारकर जाता था वह खाली फिरकर नहीं आताथा उसका एक बेटा रत्नसेन नाम बहुत सुन्दर था और अति विद्यावान मातापिताकी आज्ञामें निशिदिन रहता उस सेठके मनमें आई कि कहीं अच्छी कन्या ठहरा इसका ब्याहकरूं ब्राह्मणों को बुला देश २ भेजा और कहदिया जहांकहीं अच्छी लड़की ठहरे वहां का टीका लेके तुमआवोगे तो बहुत कुछतुम्हें दूंगा और कुछरुपये स्वर्चकोदे बिदाकिया ब्राह्मण देश २ दूढ़ने गये उनमेंसे एक ब्राह्मणने समाचार पाया कि समुद्र पार एक सेठ है और उसकी बेटी बहुत सुन्दरीहै उसेभी बरकी तलाशहै । यह सुनकर एक जहाजपर बैठ समुद्र पार गया वहां जा सेठका

ठिकाना पृष्ठकर उसके द्वारे परठहरा और खबर की कि उज्जैन नगरी से एक ब्राह्मण वहांके सेठका आया है। यह खबर सुन उस सेठने उसको बुलाया और दण्डवत् कर आसन दे बिठाया ब्राह्मण अशी-शदेकर बैठा। सेठने पृच्छा किसकार जके लिये तुम आये हो सो कहो ब्राह्मणने कहा हमारे सेठने भेजा है लड़के की शादीके लिये और कह दिया है जहां कन्या अच्छे कुलीने की ठहरे वहांका टीकाले हमारे पास पहुंचो सेठ यह सुनकर बोला मेरी भी यही इच्छा थी कि पुत्रीका व्याह मैं कहां करूंगा पर भगवान ने घरबैठे संयोग बना दिया फिर कहा कितने दिन तुम यहां आराम करो मैं अपना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा वह लड़केको देख टीका जाकर देगा और तुम भी इस लड़की को देख लो और वहां जा कर उससेठसे कहो कि हम अपनी आंखों देख आये हैं वह ब्राह्मण कितने दिनों वहां रहा और उस कन्या को अपनी आंखों देख सेठके ब्राह्मणको साथले उज्जैन नगरी को फिर चला उससेठने अपने पुरोहितसे कह दिया कि टीकादे व्याहकी जल्दी कर आना। ये दोनों वहांसे चले जहाज पर चढ़ कितने दिनों में उज्जैन नगरी में आन पहुंचे ब्राह्मणने सेठको खबर दी कि मैं कन्या ठहरा आया हूं और

उससेठका पुरोहित साथ लायाहूं सेठने दूसरे उस ब्राह्मणको बोलाया और लड़केको अपने पास बैठा दिखलाया ब्राह्मणने देख उसे तिलक करदिया और हाथजोड़ अपने सेठकी तरफसे बिनती कर कहा कि आप जल्दी से बरात लेकर आइये हम जाकर वहां तैयारी करते हैं फिर रुखसत होकर सेठसे वह ब्राह्मण अपने मुल्कको गया वहांजा सेठ से वहां का सबसमाचार कहा सेठ सुनकर व्याहका सामान करने लगा और इधर यह सेठ व्याहकी तैयारी करने नकारखानेमें नौबत बजने लगी और घरमें मंगलाचार होने लगे तरह २ की तैयारियां कीं जितने कुनबेके लोगथे उनको नयेजोड़े पहिना अपने साथ लेजाने को मुर्कर किया नाच रागरंग खुशीहोनेलगे इसतरह तमाम शहरकी जाफत करते २ बरातकी तैयारी करते व्याहकादिन नजदीकपहुंचा अजबशकि जाना दूरकाथा फिकर करने लगा कि अर-सा थोड़ा रह है समुद्रपार हमइतने दिनों में क्योंकर जा सकेंगे यह बात सुनकर उसके सब भाईबंधु अंदेश करने लगे और खुशी तमाम शादीकी भूल गये। इसमें एक शख्सने आकर उससेठसे कहा कि इसबर कन्याकी प्रारब्ध होगी तो इसलग्नमें विवाह होगा और मैं एक यत्न बताता हूं तुम उसकी फिकर करो भगवान

चाहै तो बन जाय तब उन्ने हाथ जोड़ कर कहा कि भाई !  
 या तो भगवान के हाथ हमारी लज्जा है या तेरे हाथ  
 जिसमें हमारा काम बनै सो तू कह तब वह कहने लगा  
 कई एक महीने हुये हैं कि एक बटई उड़न खटोला  
 बना कर राजा के पास ले आया था और वह कहता था  
 कि इस खटोले का यह सुभाव है कि इस पर बै कर  
 जहां तुम्हारी इच्छा हो तहां जाओ यह पहुंचावे गो  
 राजाने सुन कर उसको दो लाख रुपये दिये और  
 खटोला लिया वह अब राजा के घर में है तुम्हीं जाओ  
 और राजा से मांगो जो तुम्हें राजा दे तो तुम्हारा  
 सब काम सिद्ध हो । यह सुनते ही वह खुशी हो कर नै राज-  
 द्वार पर गया और द्वारपालों से कहा मेरी खातिर म-  
 हाराज से कर दो दरवानों ने दीवान से जाकर अर्ज  
 की कि नगर सेठ द्वार पर हाजिर है आपकी आज्ञा  
 हो तो राजा के दर्शन को आवे दीवान ने कहा कि  
 बुलालो दरवान आकर उसे लगये उसने जाकर  
 दीवान को दण्डवत् की और विनती कर कहने  
 लगा कि महाराज के दर्शन को मैं आया हूं और  
 अपना बड़ा जरूरी काम लाया हूं यह सुन कर मंत्री  
 ने कहा कि राजा महल में हैं । सेठ यह सुन अ-  
 ति उदास हुआ कहा मेरा बड़ा कारज था कि ल-  
 डके की शादी है और जाना समुद्र पार है चार दिन

बाकी रहगये हैं इसमें जो न पहुंच सकूं तो मेरे कुलकी हँसी होगी बनिये से यह बात सुनकर दीवानने राजा से जाकर हकीकत ज़ाहिरकी राजाने आज्ञा दी कि वह उड़नखटोला उसे लेजाकर दो और जो कुछ वह कहै सब उसकी तैयारी करदो जिस में किसी तरह उसके काम में विघ्न न होने पावे प्रधान ने खटोला मँगवा बनियें को दिया और कहा जो कुछ सामान तुझे दरकार हो सो कह महाराज का यों हुक्म है तब सेठ ने कहा । महाराज की दया से सबकुछ है मेरी यही ज़रूरत थी और आपकी कृपासे सबकाम सिद्ध होगा महाजन खटोलालिये अपने घरको आया ब्राह्मण को बुला कर साथलिया लड़का और आप उसपर बैठ समुद्रपारचला । कुछ एक अरसे में वहां जापहुंचा और वहांजाकर देखे तो मङ्गलाचार सारे नगर में होरहा है और सब राह देखरहे हैं जब लोगोंने देखा तो हाथोंहाथ लेगये जाकर एक हबेली में उतारा और अपने सेठको खबर दी कि तुम्हारा समधी बरात ले आनपहुंचा है वह सेठ भी वहां से उसकी मुलाकात को आप आया और देखकर इनतीन आदमियों को अपने जीमें बहुत पछताया और पूछा क्या सबब है जो तुम इसतरह से आये हो तब

उसने ब्योरा और सब व्यवस्था अपनी सुनाई सुनतेही उस सेठने अपने गुमास्तों से कहा कि कल ब्याह है और आज बरात की तैयारी सब तुम जल्दी कर दो कि जिसमें शहर के लोग न हँसे उसने सब तैयारी बात कहतेही कर दी दूसरे दिन बरात लेकर वह सेठ ब्याहने गया और बेटे का ब्याह किया उस सेठने हाथी घोड़े जोड़े पालकी मियाने जड़ाऊ गहने और बहुतसा कुछ दान दहेज दिया यह यहांसे लेकर जहाज में रखवा आपसवार हो अपने शहर में आया और फिर नये सिरे से शादी रचाई ब्राह्मणों को बहुत कुछ दान दिया और कुछ जवाहिर पोशाक और बाजे तुहफः और तहायफ़ थालों में रख और चार घोड़े खासे लेकर राजा की नज़र को चला और वह खटोला जो ले गया था वह भी फेर देने । जब द्वारेपर पहुंचा द्वारपालों से कहा कि महाराज को मेरी खबर दो राजाने खबर सुन उसे बुलालिया और जो कुछ वह ले गया था जाकर सब राजा की भेंट किया और कहा महाराज ! आपके पुण्यप्रताप से सब काम अच्छा हुआ अब इस दासकी भेंट आप को कबूल करनी होगी । राजा सुन हँसकर बोला कि मेरा यह स्वभाव है कि दीहुई चीज़ मैं फेर नहीं लेता यह खटोला मैंने तुम्ही को दिया और जो कुछ

तू तुहफः लाया है ये सब तुहफे और लाख रुपये अपने खजाने से और हमने तेरे बेटे को दिये इस चास्ते कि उसकी शादी हुई है गरज ये सब कुछ इनायत करके पानदे उसे रुखसत किया यह प्रसन्न हो अपने घरको आया इतनी बात कह वह पुतली बोली सुन राजा भोज राजा बीर विक्रमादित्य की बराबरी इन्द्रभी नहीं करसक्ता था और तू तो किस गिनती में है जो तूने अपना मन बढ़ाया है इससे तू बाज आ । इन बातोंमें वह भी दिन गुजर गया राजा महल में दाखिल हुआ रात जिसतिस तरह गुजरी फिर जब सुबह हुई राजा सिंहासन के बैठने का इरादा कर वहां आया कि ॥

सत्यवती सत्रहवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा भोज ! एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य सभामें इंद्रसमान बैठा था और गन्धर्व मधुर स्वरोंसे गारहे थे पातुर नृत्यकर भाव बतारही थीं कहीं भाट खड़े हुए यश वर्णन कर रहे थे किसी तरफ ब्राह्मण वेदपाठ कर रहे थे किसी तरफ मल्ल आपस में युद्ध कर रहे थे और किसी तरफ चीते कुत्ते सियाह गोश हरिण मेढ़े मीर शिकार लिए खड़े थे और जितनी तय्यारी राजाओंकी चाहिए सबथी सभामें एकसे एक पण्डित चतुर और बीर बैठा था उनमें

राजा इन्द्रकी तरह बैठा था और सब सामान इन्द्र के अखाड़े का साथ इसमें राजा ने अपने चित्त में विचारकर पण्डितों से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनो कि स्वर्गमें राजा इन्द्र जो है सो मर्त्यलोकका मरम जानता है कहो कि पाताल का राजा कौन है और किस जगह वह रहता है । तब उनमें से एक पण्डित बोला कि महाराज पाताल का राजा शेषनाग है जिसके हजार फन हैं और पद्मिनी रानी उसके यहां है और कभी शोक सन्ताप उसे नहीं व्यापता आनन्दसे अचलराज वहांका वहकरता है और जैसा वह राजा सुखी है वैसा संसारमें कोई नहीं यह सुनकर राजा को उसके मिलने की इच्छा हुई बैतालोंको बुलाकर कहा कि मेरेतई पातालको ले-चलो मैं शेषनागके दर्शनको जाऊंगा । बैताल उठा कर पातालको लेगये और शेषनागका दूरसे मंदिर दिखादिया राजाने दूरसे देख बैतालोंको बिदा किया और आप मन्दिरको चला । जब जाकर उसके पास पहुँचा देखे तो वह कंचन का मन्दिर रत्नों से जड़ा हुआ जगमगा रहा है और ऐसी ज्योति है उसकी कि जिसमें रोशनीके सिवा रातदिन कुछ नहीं मालूम होता । द्वार पर कमलके फूलों की बन्दनवारें बँधी हुई हैं और घर आनन्द हो रहे हैं राजा कुछ

डरता२ कुछ खुशी२ द्वारेजा खड़ा हुआ और वहां के द्वारपालोंसे दंडवत्कर कहा महाराजको हमारा समाचार पहुँचाओ कहो कि मर्त्यलोकसे एकराजा आपके दर्शनको आया है दरवान राजा को खबर देने गया और यह द्वार पर खड़ाहुआ कहता था धन्य भाग्यहैं मेरे कि मैं यहांतक आनपहुँचा और चारोंतरफसे रामकृष्णकी आवाज़ आती थी और राजाके मन्दिरमें बेनकी ध्वनि कान पड़तीथी जब दरवान राजाके सन्मुख जा प्रणाम कर हाथ जोड़ खड़ाहुआ राजाने उसकी ओर दृष्टि की । उसने कहा महाराज एक मनुष्य द्वारे पर खड़ा है और कहताहै कि मर्त्यलोक से आयाहूँ द्वारे को हजारों दण्डवतें करताहै बल्कि जिसको देखता है उसको भी आपके दर्शनकी अभिलाषहै जिससे निहायत बेचैन है यहबात सुनतेही शेषनाग उठके द्वारेपर आया । राजाने देखतेही साष्टांग प्रणामकिया और उसने हँसकर अशीषदी और पूछा कि तुम्हारा नाम क्याहै और कौनसा देश है राजाने हाथजोड़ कर कहा कि स्वामी विक्रमभूपाल मेरानामहै और मर्त्यलोकका राजाहूँ आपके चरण दर्शनकी मुझे इच्छाथी सो मेरेमनकी इच्छापूरीहुई आज मुझे करोड़ यज्ञकाफल हुआ और करोड़ों दानकियेका

पुण्य और धन्यभाग मेरे जो आपके चरणकमल के दर्शन हुये बल्कि चौंसठतीर्थ नहाये का मुझे फलहुआ । विक्रमका नाम सुनतेही शेषनागमिला और हाथ पकड़ अपने मकान में लेगया अच्छी जगह बैठा क्षेमकुशल पूछी राजानेकहा महाराजके दर्शनसे सब आनन्दहै फिर कहा तुम किसकारण यहां आयेहो और आतेहुये पन्थमें तुमने बहुत यहां तक कष्टपाया होगा विक्रमबोला कि फणिनाथ मैंने जो कष्टपाया सो सब तुम्हारे दर्शन किये से विसरा फिर राजाके रहने के लिये एक अच्छा स्थानदिया और बहुत से लोग टहल करने को और उन लोगोंसे कहदिया कि मेरी सेवा सेभी तुम अधिक राजा की सेवा जानना इसतरह से पांचसात दिन राजा विक्रमादित्य वहां रहा । बाद उसके एकदिन हाथ जोड़कर कहा पृथ्वीनाथ ! मुझे विदाकीजिये तो मैं अपने नगर में जाऊँ और वहां बैठ आपका गुणगाऊँ । तब शेषनै हँसकर कहा अब राजा तुम्हें घर जानेकी इच्छाहुई है भलाकुछ प्रसाद हम देते हैं तुम लेतेजाओ यहकह चारलाल मंगवा राजाको दिये और उनका गुण कहनैलगा कि एक रत्न का यह स्वभाव है कि जितना गहना चाहोगे सो यह तुम्हेंदेगा और क्षणभर देते बिलम्ब न करेगा और

दूसरे नगका यह स्वभाव है कि हाथीघोड़े पाल-  
कियां जितनी तुम मांगोगे उतनी इससे पाओगे  
और तीसरे लालका यह गुण है कि जितनी लक्ष्मी  
चाहोगे उतनी यह देगा और चौथे रत्नका यह प्रभाव  
है कि हरिभजन और सत्कर्म करने की जितनी इच्छा  
रखोगे उतनी यह पूरी करेगा इस तरह चारों लालों  
के गुण राजा से समझाकर कहे और बिदा किया  
राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो कहने लगा महाराज मैं  
आपके गुण की उपमा नहीं दे सका पर आप मुझे  
दास समझकर कृपा रखियेगा यह कहकर राजा वहां  
से रुखसत हुआ और बैतालों को बुला सवार हो अप-  
ने नगर को आया जब कोस एक नगर रह गया तब  
बैतालों को छोड़ आप राजा पाओं २ शहर को चला ।  
देखता क्या है एक दुर्बल भूखा ब्राह्मण चला आता  
है जब वह पास आया यह उसने कहा कि मैं भू-  
खा हूँ कुछ मुझे भिक्षा दे जो मैं जाकर कुटुम्ब को  
पाऊँ । सुनते ही चिन्ता कर अपने मन में कहने लगा  
इस ब्राह्मण को इसमें से एक लाल दूँ यह विचार कर  
ब्राह्मण से कहा कि देवता मेरे पास चार रत्न हैं और  
चारों के ये गुण हैं जो तू इनमें से चाहे वह मैं तुझे दूँ  
तब ब्राह्मण ने कहा कि पहिले अपने घर को हो आऊँ  
तब तुमसे कहूँ यह कहकर ब्राह्मण अपने घर को

गया और राजा वहां खड़ा रहा वह घर में जाकर अपनी स्त्री पुत्र और पुत्र की बहू से कहने लगा कि उन चारों लालों का यह ब्योरा है उन तीनों में से उनकी ब्राह्मणी बोली कि स्वामी तुम वह लाल लो जो लक्ष्मी दे है और खियाल मन से उठा दो क्योंकि लक्ष्मी से मिलते हैं सहाय और लक्ष्मी से होते हैं सब उपाय धर्म ज्ञान नेम पुण्य दान यह सब लक्ष्मी से होता है इस से तुम और तरफ चित्त मत डलाओ जाकर लक्ष्मी ले आओ फिर उसका पुत्र बोला कि लक्ष्मी किस काम की है जो साथ सामान न हो और जो सामान हो तो राजा कहावे और सब कोई शिर नवावे सरंजाम हो तो दुर्जन डरें और संसार में शोभा पावे जो लक्ष्मी हुई और जग में शोभा न पाई तो उस पुरुष का जन्म लेना निष्फल है वह तुम लाल लो जो संसार में शोभा दे । इतने में उसके बेटे की बहू बोली कि तुम वह लाल लो जो आभूषण दे कि गहने के पहिने से स्त्री अप्सरा मालूम हो जो रांड़ भी पहने तो अतिसुन्दरी दिखाई दे और विपति पड़े तो बेच २ बहुतसा धन ले और जितना मांगो गे उतना उससे पाओगे पुरुष हमारा बावला है और सास बुद्धिहीन है और ससुर तुम सजानी हो इस से तुम से मैं कहती हूं वही लाल ले आओ जो मैंने तुमसे कहा है उससे

तुमसब कुछ पाओगे। यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि तुमतीनों बौरायेहो और मेरी इच्छा सिवाय धर्मके और किसीपर नहीं क्योंकि धर्मसे संसारमें आदमी राज्यपाताहै और धर्मसे सबकाम सिद्धहोताहै और धर्मसे जगमें यशहोताहै और धर्मकरनेसे देखो कि राजा बलिने पातालका राज्यपाया और धर्मसे राजारइन्द्रनेस्वर्ग में इन्द्रासनपाया और धर्मसे यह काया अमरहोजातीहै गर्भवासछूटजाताहै इससे तुम मेरा धर्ममत डुलाओ और मैं अपना सत न छोड़ूंगाइसमें जोहोसोहो। इसीतरह चारोंने चारमति की बातेंकही एककी एकने न मानी तब ब्राह्मण फिर राजाके निकटआया और आकर सब अहवाल सुनाया कहाकि महाराज मैं घरकोगया पर बात कुछ बन न आई अपनी अपनी सब कोई कहताहै और हम चारोंकी चारमतिहैं और आपने यहां खड़ेहोकर हमारेलिये दुःखपाया पर हमारा मताबन न आया। यहसुन राजाने कहा कि महाराज तुम अपने चित्तमें निराश हो उदास न हो चारोंलाल तुम अपने घरलेजाओ मैं तुम्हें देताहूँ क्योंकि जिसमें तुम्हारा कुटुम्बभी प्रसन्न हो और तुमभी। हमारा इसीमें कल्याणहै। निदान राजाने चारोंलाल खुशहोके ब्राह्मणके हाथदिये ब्राह्मण लेकर आशी-

पदे अपने धामको गया। सुनराजाभोज राजाबिक्रमादित्यभी अपने मन्दिर को आया और देते दानकुल बिलम्बन लाया। ऐसादानी अब इस कलियुग में कौन है जो उसके समान दानदे वह इस आसन पर बैठे और नहीं तो नरक बासपावे अभी तू अपने जीमें मत उकता धीरजधर और आगे कथा सुन जो राजाने साहस और दानकिये हैं यह बात पुतली की सुनकर राजा सिंहासनके पाससे उठकर घरमें आया सारी रातशोच और चिन्तामें गवाई सुबह होतेही स्नान पूजाकरके बैठा इतनेमें दीवान प्रधान आकर हाजिरहुये सबको साथले सिंहासनके पासजाचाहे कि पांव उठाकर धरे कि ॥

रूपरेखा अग्रहवीं पुतली ॥

हांहांकर उठी और कहा कि राजा मुझपर दयाकर पाहिले मेरी बात सुन तिसपीछे जो इच्छामें आवे सोकर तब राजा बोला तू कह जो तेरे चित्तमें है वह पुतली कहनेलगी कि सुनराजाभोज ! एकदिन दो सन्यासी आपसमें योगकी रीतिसे झगड़ते थे न वह उससे जीतसक्ता था न यह उससे आखिर इसतरह झगड़ते झगड़ते वीर बिक्रमादित्यके पास आये और कहा कि महाराज हम दोनों बिबादी हैं इसका आप न्यायचुकावें आप धर्मात्मा राजा हैं यह सम-

झकर हम आये हैं। राजाने कहा मुझसे समझाकर तुम जाहिर करो कि किस बात पर झगड़ा है। उनमें से एक यती बोला महाराज मैं कहता हूँ कि मनके बशमें ज्ञान है और मनके बश अत्मा है और मनके बश देह और माया मोह पाप पुण्य ये भी सब मनसे है और जितनी बातें हैं ये मनके ताबे हैं और मनकी इच्छा ही से सब होता है सम्पूर्ण शरीरका मन राजा है और जितने अङ्ग हैं सो मनके आधीन हैं मन उनसे जो काम लेता है सो करते हैं दोनों में से एक यह जब कह चुका तब दूसरा बोला सुनो राजा निश्चय करके जो मैं कहूँ। ज्ञान जो है वही देहका राजा है और मन जो है उसका ताबेदार है जो कदाचित् मन अपना अमल किया चाहे तो ज्ञानसे कुछ उसका बश नहीं चलता मनके काबू में हैं इन्द्रियाँ वह चाहे तो उनसे कर्म करावे पर ज्ञान नहीं करने देता जब ज्ञान आता है तो मनको मारके निकाल देता है और पाँचों इन्द्रियाँ भी ज्ञानके खड्गसे कटी हुई हैं। जब मनुष्यसे मन और इन्द्रियका विकार छूटा निर्भय हुआ संसारके भयसे और योगसिद्ध हुआ दोनों की ये बातें सुककर राजा बोला कि तुमने जो कहा सो मैं सब समझा इसका उत्तर विचारकर तुम्हें दूंगा कितनी एक देर के बाद राजाने शोचकर कहा कि

सुनो योगेश्वर चारवस्तु एकसाथ रही हैं अग्नि जल वायु और पृथ्वी इन चारोंसे शरीर है मन इनका सरदार है मनके मतिसे जो ये चले तो घड़ीपहरमें नाशकरदे पर उनपर ज्ञान बली है मनका विकार होने नहीं देता और जो ज्ञानी न रहें उनकी काया विनाशने नहीं पाती वे इस संसार में अमर हैं जबतक योगी ज्ञानसे मनको न जीते तबतक उसका योग सिद्ध नहीं होता। ये बातें राजा की योगियों ने सुन अपने मनका हठ छोड़ दिया एक योगी ने प्रसन्न होकर राजाको एक खड़िया का ढेला देकर कहा कि इसमें ये गुण हैं जो इससे दिनको तुम लिखोगे सो रात को प्रत्यक्ष सब देखोगे यह कहकर योगी दोनों चले गये राजाने अपने जीमें अचरज माना कि यह बात किस तरह से सत्य होगी। तब राजाने एक मन्दिर खाली करवाया और झड़वा लिपवा अकेले उस घरमें जा बिछौना बिछवा किवाड़ बन्द कर दीवार में मूरतें लिखने लगां पहिले कृष्णकी मूर्ति लिखी पीछे सरस्तीकी फिर देवताओं की इतने में सांझ हुई और एकबार जय जय शब्द होने लगा जो जो देवता लिखे थे सो साफ देखे देखते ही राजा मोहित होगया और जो जो बातें वे आपस में कहते थे राजा सब सुनता और

देखता था लेकिन भयसे कुछ कह नहीं सकता था। इतनेमें प्रभात हुआ और देवताओं ने उठकर अपनी-राहली और वे पुतली की पुतलियां रह गईं। फिर राजा ने दूसरी तरफ दीवार में हाथी घोड़े पालकी रथ और फौज यह सब कुछ लिखा फिर जब शाम हुई तो सब वे प्रकट हुये राजा देखकर अपने जी में प्रसन्न होता था और योगीको याद करता था कि मुझे यह पदार्थ दे गया जब भोर हुआ तब वह फिर चित्र का चित्र रह गया फिर तीसरे दिन राजा ने पहले एक मृदंगी लिखा गधर्व लिखि धुनि अप्सरायें खैंची ताल बिन रवाब तम्बूरा मुरचंग सितार पिनाक बांसुरी करताल अलगूजा एक २ साज एक २ मूर्ति के हाथ देदे लिखा जब संध्या समय हुआ तब पहिले एक शब्द हुआ और गन्धर्व संगीत शास्त्र की रीति से गाने लगे और सब साज स्वरों के साथ मिल मिल बाजने लगे और वे अप्सरायें नृत्य करने लगीं और भाव बताने इस तरह से राजा हमेशा आनन्द से रात काटता था और दिनको यही लिखता था इसी तरहसे वह रात दिन वहां व्यतीत करता और रनवास में नहीं जाता था। रानियों के जीमें चिन्ता हुई कि राजा किस कारण महल में नहीं आता और जुदे मंदिर में रहता है इसका क्या

सबब है यह मालूम किया चाहिये । यों रानियां आपसमें मत्ता ठान राजाका खोज लेनेको तय्यार हुई और उनमें से चार रानियां आपस में विचार करके कहनेलगीं हमारा जीना भी धिक्कार है और जन्म भी हमारा धिक्कार है कि राजा हमें छोड़कर वहां बैठ रहा है और हम यहां बिरहसे दुःखपाती हैं इतने दिनों तो हमने दुःख भरा पर अब एक क्षण भी बिन प्रीतम नहीं रहा जाता यों विचारकर रात को सवार हो जिस मन्दिरमें राजा बैठा कौतुकदेख रहा था ये भी वहां जा पहुँचीं । हाथ जोड़ बिनती कर कर कहने लगीं कि महाराज ! हमसे क्या अपराध हुआ है जो आप हमारी सूरत बिसार यहां बैठ रहे हैं यह सुन राजा हँसकर बोला सुनो सुन्दरियों तुम्हें किसने सताया और किस कारण तुम यहां आईं क्या तुम्हें किसीने कुछ कहा है कि तुम्हारा मुख मलीन हो रहा है । राजा की यह बात सुन शिरनिहुरा के उन्होंने कहा स्वामी जो बात है सो आपके सम्मुख हम प्रकाश करती हैं । राजाने कहा अच्छा कहो तब उनमें से एक रानी जो चतुर्थी सो बोली महाराज ! हम अबला हैं और कभी कुछ नहीं देखा सुख ही में उमर गवाई अब बिरहमें काम निशिदिन हमें दहे है सो यह दुःख हम तुम्हारे सिवाय किससे कहें इस

विथासे हमें बचाओ और आपने हमसे वचन किया था कि हम तुम्हें पीठ न देंगे सो इतनी मुद्दत से तुमने बिसार दिया इतने दिनों तक जिस तरह हुआ हमने वियोग भरा अब हममें बल नहीं। इसी तरह की बातें करते हुए सुबह होगई वे सब मूर्ते फिर नक्शदरोदीवार होगई तब रानियोंने कहा कि महाराज जबसे तुमने मन्दिर छोड़ा है कष्टसे यही दशा सब रनवास की हो रही है और उन रानियों का पाप आपको लगता है क्योंकि सब आप ही के आसरे में हैं सुन २ ये बातें राजा हँसकर बोला कि अब जीमें तुम प्रसन्न हो जो तुम कहो सो हम करें और जो मांगो सो हम दें रानियां खुश होकर बोलीं महाराज हमारे मांगने से जो आप दें तो हम मांगें राजा ने कहा जो मांगोगी सो हम देंगे। रानियोंने कहा यह जो खड़िया आपके हाथ में है हमें दो सुनते ही राजा ने आनन्दसे हवाले की रानियोंने ले ली और छिपा रखी फिर सवार हो हो अपने २ महल में आई और राजा भी आकर दाखिल हुआ अपना राजकाज करने लगा इतनी कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! ऐसा पदार्थ देते राजा ने बिलम्ब न किया और ऐसी विद्या तू कहाँ पावेगा और जो पावेगा तो तुझसे दी नहीं जायगी। इससे आ-

सनके बैठनेका तू दावा छोड़ दे मैं तुझसे सच कहती हूँ तू बौरा न जा और इस योग्य तू नहीं। वह भी सायत गुज़र गई राजा उठकर वहाँसे महलमें दाखिल हुआ तमाम रात शोचमें गुज़र गई सुबह को उठ स्नान पूजासे फराकत कर फिर उसी मकानमें आया सिंहासनके पास खड़ा हो चाहे कि पांव उग कर धरे इसमें ॥

तारा उन्नीसवीं पुतली ॥

खिलखिलाकर हँसी और कहने लगी कि अय राजा अज्ञानी बावले! पाहिले मेरी बात सुन पीछे और विचार कर जो तू इस सिंहासन पर चरण रखेगा तो अपराधी होगा मुझपर पांव दिया था राजा विक्रमादित्य को तूने अपने जीमें क्या विचारा है जो यह इरादः करके आया है मेरा हृदय तो कमल है और मधुकर बीर विक्रमादित्य था तू गोबर का कीड़ा मुझपर पांव किस तरह रखेगा राजा बोला सुन बाला ! तूने मुझे गोबर का कीड़ा क्यों कर जाना पुतली बोली सुन राजा एक दिन की कथा एक ब्राह्मण सामुद्रिक नाम सामुद्रिक पढ़ा हुआ वनमें चला जाता था उसके बराबर दुनियाँ में कोई और पंडित न था। अनेक र भेद विद्याके जानता था। उसने दरियाफ्त किया कि इस रास्ते कोई आद-

मी गया है जब उसके निशान पांवके देखे तो उसमें ऊर्ध्वरेखा और कमलका चिह्न नजर आया तब उसने अपने जीमें विचारा कि कोई राजानङ्गे पांव इसराहसे गुजरा है उसको देखा चाहिये कि कहां गया है यह विचार कर उन पांवों के निशान देखता हुआ जब कोसभर पर जा पहुंचा तो उस बन में देखा कि एक आदमी दरख्त से लकड़ियां तोड़कर गढ़ा बांध रहा है। ब्राह्मण उसके पास जाकर खड़ा हुआ और पूछा कि तू यहां इस बनमें कबसे आया है वह बोला कि महाराज मैं दोघड़ी रात रहेसे आया हूं तब ब्राह्मणने पूछा कि तूने किसीको इस राहसे जाते देखा है कि नहीं उन्ने कहा कि मैं जिस समयसे आया हूं इस बनमें मनुष्यका तो जिक्र क्या है कोई पक्षी भी नजर नहीं आया। फिर उस ब्राह्मणने कहा देखू तेरा पांव। पांव उसने आगे रख दिया और ब्राह्मण ने सब चिह्न देखे देखकर अपने जीमें शोचने लगा कि यह सबब क्या है कि सब लक्षण इसमें राजाके हैं और यह इतना क्लेशित क्यों है कि फिर इन्ने पूछा कि कितने दिनों से तू यह काम करता है उसने कहा जबसे मैंने होश सम्हाला तबसे यही उद्यम करके खाता हूं और राजा बीर विक्रमादित्य के नगरमें रहता हूं। ब्रा-

ब्राह्मण ने पूछा तू बहुत कष्ट पाता है वह बोला महाराज यह भगवान् की इच्छा है कि किसी को हाथीपर चढ़ावे और किसी को पैदल फिरावे किसीको धनदौलत बिनमांगे दे और किसी को भी-खमांगे टुकड़ाभी न मिले कोई सुखमें चैन करता है कोई कष्टमें बौरा रहा है भगवान् की गति जानी नहीं जाती कौनरूप किसमें रचा है जो कर्म में लिखदिया है सो मनुष्य को भुगतना होता है कष्ट सुख उसके हाथ है इसमें किसी का कुछ जोर नहीं चलता । उससे ये बातें सुन और वह चिह्न देख ब्राह्मण ने अपने जीमें अचरज माना कहा कि मैंने बड़ी मिहनतसे विद्या पढ़ी थी सो मेरा श्रम वृथा गया और सामुद्रिक में जो विधि लिखी है पुरुष के लक्षण देखने की सो झूठ ठहरी और उमर हमने अपनी बेफायदा गँवाई यह कह मन में मलीन हो विचार करता राजाके पास चला कि जाकर उसका भी प्राँव देखूँ कि उसमें भी निशान है या नहीं और जो लक्षण पोथीप्रमाण न मिलेगा तो सब पोथियाँ फाड़ जला संन्यासी हो यात्रा चला जाऊँगा फिर संसार से कुछ अर्थ न रखूँगा क्योंकि इतनी मुदत की मेहनत झूठकर्म के पीछे गँवाई तो आगे संसार में क्या फल मिलेगा उससे भगवत् भजन

करना अच्छा है इसलिये कि स्वार्थ न हो तो परमार्थ तो होगा। यों विचार करता राजा के पास जा पहुँचा राजा को आशीष दी राजाने दण्डवत् कर कहा ब्राह्मण देवता ! तुम इतने मनमलीन क्यों हो क्या दुःखमन में तुम्हारे उपजा है मुझसे कहो ब्राह्मण ने कहा राजा तू पहिले अपना चरण मुझे दिखा जो मेरे चित्त का संदेह जाय। राजाने अपना पांव दिखाया और उसने कुछ लक्षण उसमें न पाया। यह देख शीश नवाय चुप हो रहा और अपने जी में कहने लगा कि अब पोथियाँ सब जला संसार को त्याग बैरागले देश देश फिरिये यह तो अपने जी में विचार कर रहा था राजाने कहा पंडित तू क्या क्रोध कर शिर डुलाय पछताय चुप हो रहा है अपने मन की बात मुझसे कह कि तू अपने मन में क्या ठानी है ब्राह्मण बोला सुनो महाराज मेरे पास सामुद्रिक पोथी है बारह वर्ष मैंने पढ़ कर याद की है सो मेहनत मेरी निष्फल गई इस वास्ते संसार से जी मेरा उदास हुआ राजाने हँस कर कहा कि यह तुमने प्रत्यक्ष क्यों कर देखा वह बोला महाराज मैंने बड़ा दुःखी देखा कि उसके पांय में ऊर्ध्व रेखा और कमल था और उसकी रोजी यह थी कि लकड़ी बन से लाता था और बेंच कर खाता था वह देख कर मैंने तेरा जो पांव

देखा तो कोई अच्छालक्षण न पाया और तू राज सारे नगर का करता है इससे मेरे जीको क्रोध हुआ है ग्रन्थ जला देश त्याग करूंगा राजाने कहा ब्राह्मण सुन मैं तुझे बुझाकर कहता हूँ और ग्रन्थ शोधकर तुझे दिखलाता हूँ तब तेरा जी पतियावेगा किसीके लक्षण गुप्त होते हैं और किसीके प्रकट ब्राह्मणने कहा मैं किस तरहसे जानूँ राजाने छुरी मँगवा तलुएकी खाल चीर लक्षण दिखलादिये ब्राह्मणने देखा कि कमल और ऊर्ध्वरेखा है देखकर उसके जीको सन्तोष हुआ राजाने कहा कि अयविप्र ! ऐसी विद्या पढ़ी हुई किस काम आती है कि जिसके सब भेद मालूम नहीं इस तरहके लक्षण देख ब्राह्मण अवाक् हुआ फिर राजाको आशीष दे अपने घर को गया। इतना किस्सः कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! कब इस योग्य तू हुआ जो सिंहासन पर बैठनेकी इच्छा करता है और जो इतना साहस करे सो इस सिंहासन पर बैठे नामधर्म यश आदमीके जानेसे नहीं जाता जैसा फूल नहीं रहता और उसकी सुगन्ध इतरमें रह जाती है। यह सुनकर राजाको कुछ चेत हुआ कहने लगा कि यह संसार स्थिर नहीं जैसे तरुवरकी छांह है वैसेही संसारकी गति है जिस तरह चांद सूर्य आते जाते हैं उसी तरह कनुष्यका जीना मरना है जैसे कोई स्वप्ने में कौतुक

देखता है वैसाही जगका रूप नजर आता है और मनुष्य देहधरके अनेक कष्ट भोगकरते हैं पर सुख यह है जो हरिभजनहो इतना ज्ञान राजा अपने जीमें विचार वहांसे उठअपने मन्दिरमें गया रात ज्यों त्यों काटी प्रभात होतेही फिर वहां आन मौजूद हुआ पुतलियों से पूछा कि अबमें क्याकरूं तुम मुझसे कहो तब ॥

चन्द्रज्योति बीसवीं पुतली बोली ॥

महाराज ! मैं समझाकर कथा आपके आगे कहती हूं एकदिन राजा वीरबिक्रमादित्य ने खुशहोकर रास मण्डलीके प्रधानको आज्ञादी यह कार्तिक महीना धर्म महीना है इसमें कुछ हरिकभजन मनलगा कर किया चाहिये शरदपूनोंको ठाकुरकी रासलीला करो प्रधानने राजाकी आज्ञापाय देश देशके राजा और पण्डितों को न्योते भेज बुलाया और जितने नगरके योगी थे उनको भी खबर दे तलबकिया और जितने देवता थे उनकोभी मंत्रोंसे आवाहन करके बिठलाया । रासहोनेलगा चारों ओर से जय जयकार शब्दहोनेलगा और राजा एकरका शिष्टाचार मनुहार कर २ फूल माल ठाकुरकी प्रसादी देने लगा राजाने देखा सब देवता आये पर चन्द्रमा नहीं आये । यह अपने जीमें विचार बैतालपर सवार हो

चन्द्रलोक को गया वहाँजा सन्मुख हो दण्डवतकी और हाथ जोड़कर कहा स्वामी मेरा क्या अपराध है आपने कृपा न की और सबने मेरे भागपर कृपा की है तुम्हारे बिना मेरा काम अधूरा है अब दया कीजिये और काम मेरा सुधारिये । आपको धर्म होगा मुझे संसारमें यश मिलेगा जो कदाचित् आप इसमें विलम्ब कीजियेगा तो मैं हत्यादूंगा तब चन्द्रमाने हँसकर कोमल मधुर वचनसे कहा राजा मैं तुझसे सत्यकर कहता हूँ तू अपने जीमें उदास न हो मेरे जाने से संसार में अन्धकार होजायगा इसलिये मेरा जाना नहीं बनता तुझे अभिलाष थी मेरे दर्शन की सो तेरी इच्छा पूजी तेरा काम सुफल होगा तू जा अपने नगर में जो काम तूने आरम्भ किया है सो पूर्णकर । इस तरह से राजाको समझा अमृत दे विदा किया राजाने शिरचढ़ा ले लिया और दण्डवतकर अपनेनगरको चला रास्तामें देखा कि यमके दो दूत एक ब्राह्मणका प्राणलिये जाते हैं राजाने देवदृष्टिसे जाना और उस ब्राह्मणके प्राणने भी राजाको देख दूरसे कहा कि इस राजासे भेट है राजाने उस ब्राह्मणकी आवाज सुनकर कहा कि भाई तुम कौन हो ? तब उन दोनों ने समझाकर राजासे कहा कि हम यमके भेजे उज्जैननगरी गये थे ब्राह्मणका जी

लिये अपने स्वामी के पास जाते हैं राजाने उनसे कहा पहले इस ब्राह्मणको तुम हमें दिखादो पीछे अपने कामको जाओ वे दूत राजाको साथले नगरमें गये जहां उस ब्राह्मणकी देह पड़ी थी वहां दिखाया राजा देखते ही उस ब्राह्मणको शिर निहुड़ा अपने जीमें कहने लगा कि यह तो हमारा पुरोहित है राजाने दूतोंको बातोंमें लगानजरबचा वह अमृत उसके मुँहमें डाल दिया ब्राह्मण रामका नामले उठ खड़ा हुआ राजाने प्रणाम किया ब्राह्मणने आशीष दी दूतोंसे हाथ जोड़ बिनती कर कहा यह जीदान मैंने तुमसे पाया यह देखकर दूतोंने अपने जीमें अचंभा किया कि यह राजाने क्या किया हम जाकर क्या जवाब देंगे यह विचार करते हुये दूतोंने यमके पास जा सब राहकी व्यवस्था कही । यम सुनकर चुप हो रहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़कर अपने मन्दिरको लाया बहुतसा दान दे बिदा किया । यह कथा कह पुतली बोली कि अय राजा भोज ! ऐसा पुरुषार्थ कर सके तो इस आसन पर बैठ नहीं तो इस खयालसे दरगुज़र इस तरह वह भी लग्न गई राजा उठ वहांसे अपने मन्दिर में आया रात जिस तरहसे काटी सुबह होते ही तैयार हो फिर सिंहासनके पास जा खड़ा हुआ चाहे कि पांव धरे तब ॥

अनुरोधवती इकीसवीं पुतली बोली।

राजा ! क्या तू अपनी बड़ाई करता है और इस अनीति की कौनसी बड़ाई है पहले मुझसे बात सुन ले पीछे इसपर बैठ माधव एक ब्राह्मण था बड़ा गुणी उसकी तारीफ नहीं हो सकती जो मैं करूँ योगी होकर वह तमाम पृथ्वी में फिर आया कहीं ठहरकर रहने न पाया मानो कामका अवतार था स्त्रियाँ देखते ही उसे मोहित हो जाती थीं अयराजा ! वह सब विद्या पढ़ा था अतिचतुर था वैसा मर्त्यलोक में मनुष्य कम पैदा होता है जिस राजा की सेवा करने जाता वहाँ दिनदश एक उसका आदर होता और जब वह अपना गुण प्रकाश करता तब वह राजा उसे देश निकाल देता । इस तरह देश २ भटकता दुःख पाता कामा नगरी में आन पहुँचा कामसेन वहाँ का राजा था उस के यहाँ कामकन्दला एक पातुर थी वह मानो उर्वशी का अवतार थी गन्धर्व विद्या में अतिचतुर थी वह राजा की सभामें नृत्य कर रही थी माधव भी उसी राजा के द्वार पर जा पहुँचा । द्वारपालों से कहा राजा को जाकर हमारा समाचार कहो आपके दर्शन को एक ब्राह्मण आया है ज्योतीदार उसकी बात सुनी अनसुनी कर गये वह हारा माँदा वहीं बैठ गया ज्यों ज्यों वहाँ से मृदंग की आवाज़ और गाने की सदा

आतीथी त्यों२ यह शिरधुनकर कहताथा कि राजा भी मूर्खहै और उस की सभाभी कूटहै जो विचार नहीं करती यही बातपांच सात दफ़ा कही द्वारपाल खफ़ाहो ब्राह्मण देख राजाके डरसे कुछ कहतो न सके पर राजाके सन्मुखजा हाथजोड़ खड़ेहुए महाराजने जो उनकी तरफ़देखा उन्हो ने बिनतीकर कहा एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल द्वारपर आन बैठाहै शिरडुल २ कर कहता है राजाकी सभाकेलोग अतिमूर्खहैं जो गुण विचार नहीं करते तब राजाने उन द्वारपालोंसे कहा जाकर उससे पूछो कि उनको मूर्ख तूने किस लिये कहा। उन्होंने राजाकी आज्ञापाय पौरपरआय ब्राह्मणसे पूछा महाराजने आज्ञाकीहै उनके गुणमें दोषक्याहै वह तुमबताओ तो हमतुम्हारी बातसच जानैं। उसने कहा बारहआदमी चार चार तीन तरफ़ में खड़ेहुए जो मृदंग बजाते हैं तिनमें पूर्व मुखवालोंमें एकमृदंगीका अंगूठा नहींहै इससेसम-पर थाप हलकी पड़ती है इससे मैंने सबको कूटकहा है न मानो तो तुम जाकर देखलो। वेदौड़े हुए राजा के पास आये सबबातें सुनाई राजाने पूर्वरुखके चारो मृदंगियोंको बुला एक २ का हाथ देखा तो उन्होंने में एकका अंगूठामोमका बनाहुआ था यह तमाशा राजा देखप्रसन्नहुआ और उस ब्राह्मण को बुलाया

वह जाकर सन्मुखहुआ राजाने दण्डवत्की और उसने अशीषदी फिर शिष्टाचार कर गद्दीपर बिठला जैसे वस्त्र आभूषण आपपहने थे वैसेही मँगा ब्राह्मणको पहनाये और कामकन्दलाको बुला आज्ञाकी कि यहमहा गुणीहै इसके आगे अपना गुण तुमप्रकाश करो जिसमें यह प्रसन्न होवे । काम कन्दला राजाकी आज्ञा पाय अपनागुण जाहिर करने लगी संगीत नृत्यका आरम्भकिया । शीशे रंग भरेहुये शिरपरधर मुंहसे मोती पिरोती हुई हाथोंसे बड़े उछालती हुई नाचने लगी सब साजस्वर मिलाये हुए नाचती थी इस में फूलोंकी और इतरकी खुशबूपाकर एक भौंरा उड़ताहुआ आकर उस की कुचकी भीटनी पर बैठा डंक मारा । उसके बदनमें पीर हुई तब विचारा जो कुछभी हरकत करतीहूँ तो तालभंग होताहै और मेरे गुणकी हँसीहोगी इतना जीमें शोच भंडार विद्या कर श्वासरोँक कुचकी राह निकाली पवन लगतही वह भौंरा उड़गया माधव इसगुण को देखतेही मोहितेहो बोला धन्यहै तुझे और तेरे करतब को यह कह प्रसन्न होकर वस्त्र और आभूषण जो राजाने दियेथे सब उतार दिये यह देख राजा और मंत्री आपसमें कहनेलगे कि देखो इस ब्रा-

ह्मणने क्या मूर्खताईकी है इस वेश्याको । ये कपड़े और तमाम जवाहिर एक आन में बख्श दिया । यह जातका भिखारी यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है राजाने खफ़ाहो ब्राह्मणसे पूछा कि तू इसके किसगुणपर रीझा वह मेरे आगे बयानकर ब्राह्मणने कहा सुनराजा तू भी मूर्खहै और तेरी सभा कूढ़है तेरी सभामें यह ऐसागुण प्रकाश और कोई गुण का बिचार न करे इसके कुचपर भौरा आन बैठा था सो इसने अपनी श्वासरोक कुचकी राह निकाल उसे उड़ादिया । यह काम देख सबकुछ मैंने इसे बख्श दिया माधव ने जब यह बात कही राजा लज्जितहो रहगया और कुछ राजासे न बनआया कहा इसी समय मेरे नगरसे निकलजा जो सुनूंगा कि तू इस नगरमें है तो बंधवाकर दरिया में डुबवादूंगा तब माधव ने कहा महाराज ! मुझे से ऐसा क्या अपराध हुआहै जो आप मुझे देशनिकालादेतेहैं । राजा ने कहा मैंने जो तुझे दियाथा सो तूने मेरेही आगे दान करदिया क्या मेरे पास देने को कुछ नथा जो तूने दिया सुनकर माधव मनमलीन हो राजसभा से निकल बाहर जा एक दरख्त के नीचेब्याकुल खड़ाहो अपने जीमें कहनेलगा कि माता बेटे को विषदे और पिता पुत्रकोबैचे और

राजा सर्वसले तो कोई शरण किसकी ले फिर कहने लगा कि राजाने तो मुझे निकाला अब मैं कहाँ रहूँ यों अनेक अनेक भाँति की चिंता कर कामकन्दलाका नामलेले रोता था और इधर कामकन्दला भी राजासे बहानाकर बिदाहुई और एक आदमी दौड़ाया कि वह ब्राह्मण जाने न पावे उसे लेजाकर मेरे मकान में बिठा । वह आदमी गया और ब्राह्मणको लेजाकर उसके मंदिर में बिठाया इधर से यह भी तुर्त जापहुंची दोनों आपस में बैठकर प्रेमकी बातें करने लगे तब उस ब्राह्मणने कहा मुझे राजाने देश निकाला दियाहै और तूने अपने घर में बुला बिठलाया जो यहबात राजा सुनेगा मेरा प्राण जायगा तोमैं दुःख से छटूँगा पर तुम्हें भी राजा अति कष्ट देगा इससे ऐसी बात करनी उचित नहीं है कि अपनी जान जाय और जग हँसाई हो प्रेम जो है सो दुख की खानि है जिसने प्रेमके पैदे में पांव दिया उसने कभी सुख न पाया ये बातें माधवकी सुनकर कामकन्दलाने कहा कि अब तो मैं इस पंथमें आई जो कुछ करे सो भगवान इतना कह सब साज बाज मँगवा अपनी विद्या ज़ाहिर करने लगी जितनी विद्या उसे यादथी उतनी जब प्रकाश कर चुकी तब माधवने उन्ही यन्त्रोंके हाथ

अपनाभी गुण सब कर दिखाया जब रातथोड़ीसी रहगई तब कामकन्दलाने कहा कि तुमने श्रम बहुत किया चलकर आरामकीजिये यहकह माधव को रंगमहलमें लेगई और जितनी खुशीथी सब की जब गजरबजा दोनोंकेजी में राजाकी बात यादआई सुधबुध जातीरही घबराकर माधवने कहा सुन सुन्दरी। राततो आनन्दसेबिताई और अब मैं यहां रहंगा तो दोनोंके प्राणजांयगे इससे कुल्लयल कीजिये जिसमें निर्द्वंद्व आनन्दसे रहिये मैंने एक बात जीमें बिचारीहै कि अबमैं यहां से जाऊं और कुल्लउपायकर फिर आ तुझेभी यहां से ले जाऊं तू अपना जी मजबूतरख मैं जरूर आकर तुझसे मिलंगा यह बचन मैं तुझे देकर जाताहूं इतनी बात सुनतेही वह तो मूच्छा खा गिरपड़ी और माधवने उठकर राहली वहांसे निकलके बनबन फिरनेलगा इधर इसेभी सखियोंने गुलाबका नीरछिड़ककर उठाया जबकुछ होशआया तब वहभी माधव २ पुकारने लगी खाना पीना त्याग किया बहुतेरा सखियां समझाती थीं उसके जीमें एक न आतीथी ज्यों ज्यों गुलाब कपूर चंदन ला ला कर लगाती थीं त्यों त्यों चौगुनीदाह बढ़ती थी किसी तरहसे शीतलता न होती थी जब कोई माधवका नामगुण

सुनाताथा तब उसे ज़राआराम आताथा । उधर माधव भी भटक २ अपने मनमें विचारने लगा अब संसारमें कौनहै जिसके निकट जाइये हमारा दुःख दूरकरे इसमें उसे यादआया कि सुनते हैं राजा विक्रमादित्य परदुःख निवारण है भला उसके पास जाइये और देखिये कि लोग सच कहतेहैं या झूठ यह विचार कर उज्जैन नगरीको चलागया वहां लोगोंसे पूछा यहां राजासे भेट आधीनकी क्योंकर होतीहै तब एक उस नगर का वासी बोला गोदावरी नदी के किनारे शिवका मठहै उसमठमें राजा शिव के दर्शनको नितआताहै वहां तूजा जो तेरामनोरथ है सो तू कह तेरीकामना पूरीहोगी यह सुनकर वह वहां गया और उस मठके द्वारे की चौखटपर लिखा कि एक ब्राह्मण विदेशी अतिदुःखी बिरहसे व्याकुल तुम्हारे नगरमें आयाहूं यह सुनके कि राजापरदुःख निवारण है और जो यह दुःख मेरा जायगा तो मैं अपना प्राणरक्खूंगा नहीं तो तीसरेदिन गोदावरी में प्राणत्याग करूंगा यह मुकर्ररजी में मैंने ठहराई है इसमें तुम राजाहो और सदा गो ब्राह्मण की रक्षाकरते आये हो और अबभी करोगे मैंने अपने मनकी बातसब प्रकाश करदीहै । इतनी बातें कह पुतलीने राजाभोजसे कहा कि सुनराजा

वीरविक्रमादित्य का यह नेमथा कि अन्नदुःखी वस्त्र-  
दुःखी द्रव्यदुःखी विरहदुःखी और किसीतरह का  
दुःखी नगर में आता राजा सुनकर जब तक उस  
का दुःख न मिटा देता तब तक अन्न जल का तो  
क्या जिक्र है दातून भी न चीरताथा सबेरे राजा  
जब महादेव के दर्शन को गया दर्शनकर परिक्र-  
मा करने लगा राजा ऊंची दृष्टिकर देखे तो कोई  
दुःखी अपने दुःखकी अवस्था लिख गया है राजा ने  
सब बांच महादेव को दण्डवत्कर मन्दिरमें आया  
आज्ञाकी कि माधव नाम ब्राह्मण हमारे नगर में  
आया है जो कोई उसे दूढ़ लावे तो मुँह मांगा द्रव्य  
पावे यह बात सुन लोग नगरमें दूढ़ने को निकले  
घाटबाट टोला मुहल्ला बाग बगीचा सब नगर दूढ़  
फिरे और कहीं ठिकाना उसका न पाया तब राजा  
ने एकदूती बुलाकर आज्ञाकी कि जो तू उसे दूढ़  
लावै मुँहमांगा धनपावे उसने कहा महाराज ! यह  
क्या कठिन बात है मैं अभी जाकर दूढ़ लाती हूँ ।  
यह कह उसने वहाँसे सीधीराह मन्दिर की ली जहाँ  
उसने लिखा था जाकर मन्दिरके पास बैठरही सां-  
झसमय वहभी भटकताहुआ आनपहुँचा । इसने  
उसे देख मनमें विचारा कि हो न हो वह विरही  
यही है किसलिये कि मुँहपीला आंशु जारी तनक्षीण

मनमलीन होरहा है यह तो यह विचारकर रहीथी कि वह ब्राह्मण वहां आन बैठा और एकबारहाय कामकन्दला हाय कामकन्दला पुकार उठा चट इसने जा उसका हाथपकड़लिया और कहा मैं तेरे हँदनेके लिये राजा की आज्ञापाके आईहूँ तू उठ मेरेसाथ जल्दी चल तेरामनोरथ पूराहोगा तेरेदुःख से राजा निपट दुःखीहै । यहसुनतेही उसके साथ होली और उसे लियेहुये वह राजाके सन्मुख पहुँच कर कहनेलगी महाराज ! यह वही बियोगी है जिस के लिये आपने यहदुःखपाया है तब राजाने उस ब्राह्मण से पूछा कि तू किसके बियोगसे ऐसा व्याकुल होरहाहै मेरे आगे कह तब उसने एक आह भरकर कहा महाराज कामकन्दला के बियोगमें मेरी यह गतिहुई है वह राजा कामसेनके पास है तू धर्मात्मा है और मैं तेरेपास आयाहूँ तू मुझे उसको दिलादे तौ जीदानदे यहसुनतेही राजा हँसकरबोला सुन ब्राह्मण वह बेइयाहै तूने उसके प्रेममें अपना धर्म कर्म छोड़ा यह तुझे उचित नहींहै माधवनेकहा महाराज प्रेमका पन्थ निरालाहै जो नर प्रेमकरतेहैं सो अपना तन मन धर्म कर्म सब सम्पूर्ण करतेहैं प्रेमकी अकथ कहानीहै सुझसे कही नहींजाती राजा ने ये बातेंसुनी और उसे अपनेसाथले मंदिरमें गया

और सबरानियोंको आज्ञाकी कि तुम बनाव शृङ्गार करके आवो रानियां सब शृङ्गारकर आई और उस ब्राह्मण से राजाने कहा जिसे तुम्हारी इच्छा हो उसे इन रानियोंमें से ले अपने मनका दुःख बिसारो और सुखचैन करो उसने जवाब दिया महाराज ! मैं आपके आगे सत्य कहूँ कि मेरी आंखोंमें वह बस-रही है इसलिये मेरी दृष्टि में कुछ नहीं आता चा-तककी तृष्णा स्वातीके बृंदसे बुझती है और जलपर उसे रुचि नहीं होती ऐसी प्रेमकी दृढ़ता ब्राह्मणकी देख राजाने अपने मनमें विचार कि इसे साथ ले जाकर कामकन्दला को दिला दूं उसके बिना इसके मनको थिरता न होगी । यह बात राजाने विचार ब्राह्मण से कहा देवता तुम स्नानकर पूजाकर कुछ खाली तब मैं भी अपने लोगों को बुला तुम्हें साथ ले चलूँ और उसे दिला दूं तुम अपने जीमें किसी बातकी चिन्ता मत करो मैंने तुमसे यह वचन किया । ब्राह्मण अपने खाने पीने में लगा राजाने प्रधानको बुलाकर आज्ञाकी कि मेरे डेरे नगर के बाहर निकलें चार घड़ी के बाद कामानगरी के तरफ मेरा कूच है सब लोगों को खबर दो । इसमें कितने एक देरके पीछे राजा तैयार हो ब्राह्मण को साथ ले कूचकर डेरों में जा दाखिल हुआ और जितने राजा

के नौकरथे सब रकाबमें हाजिरथे । राजा वहांसे कूचदरकूचजाताथा कितनी एक मंजिलोंके बाद कामानगरीसे दसकोस इधर डेराकिया और उस राजाको पत्र लिखा कि हम इसलिये आये हैं कि तुम्हारे यहां जो कामकन्दला पातुर है उसे भेजदो नहीं हमसे युद्धकरनेका सामानकरो यह पत्रलिख एकदूतके हाथ राजाके पास भेजदिया राजाको खबरहुई कि एकदूत राजा बीर विक्रमादित्यका खत लेकर आया है यह सुनतेही राजाने उसे सन्मुख बुलाया उसने जो जुहारकर खत राजाके हाथदिया राजाने उस चिट्ठीको बांचकर कहा कि अच्छा कहो अपने राजासे चलेआवैं हम युद्धकरनेपर तैयारहैं । दूतने आ राजासे कहा महाराज वह लड़ने पर तैयारहैं राजाने भी हुक्म अपने लोगों को दिया कि हमाराभी दल तैयारहो फिर राजाके जीमें आया कि जिसके वास्ते हम आयेहैं उसकी भी प्रीतिकी परीक्षा लिया चाहिये इसतरह जीमें ठहरा बैदका स्वांगबन राजा कामानगरी में गया लोगोंसे मकान कामकन्दलाका पूछ दरवाजेपर जा बैद हकीमकर पुकारा आवाज सुनतेही एकदासी बाहर निकलआई पूछा कि तुम बैदहोतो हमारी नायका का कुछ इलाज करो जो वह अच्छी होगी तो तुम्हें

बहुतसे रुपये मिलेंगे ये बातें कर दासी उसे साथ लेकर कामकन्दला के पास गई राजाने देखा कि निर्जीव पड़ी है। राजाने उसकी नाड़ी देखकर कहा कि इसके तई रोग और कुछ नहीं है प्रीतमका बियोग है जिससे इसकी यह गति बनी है। यह बात सुन कामकन्दला ने आंखें खोल उसकी तरफ देखा और कहा कि इसका कुछ इलाज तुम्हारे पास हो तो करो तब उसने कहा कि इसका इलाज तो था पर इस समय हमें कुछ कहते बन नहीं आता तब वह बोली तुम्हारे पास क्या इलाज था वह बताओ राजाने कहा माधवनाम एक ब्राह्मण था उसे हमने उज्जैन नगरी में बिरह बियोगी अति शोभी देखी सो वह दुःखपाय मर गया। यह सुनते ही हाथकर उसने भी अपना प्राण छोड़ दिया जितने दासीदास उसके घरके थे यह दशा देख शिर पीट २ रोंने लगे तब इसने कहा कि तुम कुछ चिंता अपने मनमें मत करो इसे मूर्च्छा आई है कितनी देरमें सुध आवेगी तुम इसकी चौकसी करते रहो मैं जाकर अपने घरसे औषध लाऊँ। राजा उलटा फिर अपने दलमें आया और माधवके आगे उसके मरनेकी खबर कही सुनते ही एक आहके साथ उसकी भी जान निकल गई। यह देख राजा अपने जीमें पछताकर

विचारकरने लगा कि जिसके वास्ते इतनी सेना साजके परभूमि में आये और उसे इसतरह से खोदिया ये दोहत्या मेरेपर हुई अब अपना भी प्राण रखना उचित नहीं यह बात जीमें ठहरा चंदन बहुतसा मँगवा चितावनवारजा जीता जलनेको तैयार हुआ । दीवान प्रधानने कितना मनाकिया न माना जो चाहे कि उस चितामें बैठ आग लगावे कि बैतालने आ हाथ पकड़लिया और कहा कि राजा तू अपना जी क्यों देता है तब इसने कहा कि दो की जान मैंने जानके खोई अब मेरा भी जीना संसारमें उचित नहीं इसबदनामीके जीने से मरना उत्तम है बैतालने कहा कि राजा मैं अमृत ला देता हूँ तू दोनों को जिला दे यह कह जल्द बैताल पातालसे अमृत लादिया राजाने ज्योंही उस ब्राह्मणपर छिड़का वह जीउठा फिर लेजाकर कामकंदलापर छिड़का वह भी जीउठी और माधव २ लगी पुकारने राजा की सूरत देखकर कहा तुम कौन हो और कहाँ से आये हो मुझसे कहो । तब राजाने कहा हम बीरबिक्रमादित्य हैं माधवका बिरहदूर करने के लिये उज्जैन नगरी से यहां आये हैं तू खातिर जमारख कि तुझे हम माधवसे मिला देंगे । यह सुनते ही वह उठ राजाके पांवपर गिरपड़ी कि राजा यह तुम जीदान

दोगे और जैसा तुम्हारायश सुनती थी सो दृष्टि में आया इतनी बात कह राजा वहांसे फिर अपने लशकरमें आये दूसरे दिन अपनी फौजले कामानगरी पर चढ़ाये वहांके राजासे युद्धकिया उसराजाने हारमानी और कबूलकिया कि हम कामकन्दलाको भेजदेंगे और यह जो हमने युद्धकिया सो आपके दर्शनके वास्ते और इसलिये कि किसी तरह हमारे नगरमें आपका चरण पड़े। आगे राजासे मुलाकात करके वह राजा अपने मन्दिरमें ले गया बहुत भेट आगे धर कामकन्दलाको बुला राजाके आगे खड़ा किया और उसने भी माधवको बुला कामकन्दला का हाथ पकड़ा हवाले किया। फिर वहांसे कूच कर अपने नगरमें आये माधवको बहुत धन दौलत दे विदा किया इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि ऐ राजा भोज इतनी सामर्थ्य और ऐसा साहस जो तुझमें हो तो सिंहासन पर चरण धर नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा। वह भी दिन राजा का टल गया दूसरे दिन वह फिर आन मौजूद हुआ तब ॥

अनूपरेखाबाईसवीं पुतली ॥

बोली कि राजा ! तू अपने मनकी चिंता छोड़ दे मैं जो कथा कहती हूं वह सुन एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य सभामें बैठा था प्रधानसे पूछा कि मनुष्य

बुद्धि अपने कर्म से पाते हैं या उनके माता पिता सिखाते हैं सुनकर मंत्री बोला कि महाराज ! यह नर पूर्वजन्म जैसा कर्म करे है तैसा बिधाता उसके कर्म में लिखते हैं तिसी प्रमाण बुद्धि होती है माता पिता के सिखाये बुद्धि होती नहीं कर्म लिखा ही फल पाता है आदमी आदमी को क्या सिखावे और जो सीखे से बुद्धि हो तो सभी पंडित हों इससे महाराज कर्म के लिखे बिना विद्या होती नहीं करोड़ यत्न कोई करे कर्म की रेख मेटे मिटती नहीं राजाने कहा ऐ दीवान तूने यह क्या कहा संसार में यह तो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेते ही लड़का माता पिता से जो सुनता है और जो देखता है उसी व्यवहार से चलता है इसमें कर्म का लिखा क्या है यह सिखाये से सीखता है और जैसी संगत में बैठता है तैसी ही उसकी बुद्धि होती है इतनी बात सुन मंत्री बोला धर्मावतार आपकी बराबरी हम नहीं कर सकते यह अपने मन में विचार के तुम समझो कि कर्म का लिखा ही फल मिलता है। तब राजाने कहा अच्छा इस बात की परीक्षा लेनी चाहिये तब राजाने एक महावन में मन्दिर बनवाया कि जहां मनुष्य की आवाज भी न जाय। एक अपने बेड़े को पैदा होते ही उस मन्दिर में भिजवा दिया और उसके साथ एक दाई ऐसी कर दी कि आंखों से अन्धी कानों से बहरी

मुँहसे गूंगी । वही उसे दूध पिलाती थी और पर-  
वरिश करती थी फिर इसीतरहसे एकदीवान के  
बेटेको एकब्राह्मणके पुत्रको एक कोतवालके पुत्रको  
जन्मतेही गूंगी बहरी अन्धी दाइयां दे उसी मंदिर  
में भिजवा दिया दिनबदिन वे बढ़नेलगे और ऐसी  
गाढ़ी चौकी उस मन्दिरके दो २ कोसगिर्द में बैठादी  
कि मनुष्यके जानेकी तो क्या सामर्थ्य थी ढोल  
नक्कारेकी आवाज़ न जाती थी इसतरहसे बारहवर्ष  
जब बीतगये तब एकदिन ब्राह्मणीने अपने स्वामी  
से कहा कि एकयुग पूराहोचुका और मैंने पुत्रका  
मुँह नहीं देखा कदाचित् जी निकलजाय तो  
मनमें देखनेकी अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब  
राजाके निकट जाकर कहो कि महाराज बारह वर्ष  
बीत चुके मैंने बेटेका मुह नहीं देखा अबमेरेजीमेंहै  
किपुत्रको घरसौंपकर दण्डीहो तपस्याकरूं यह ब्रा-  
ह्मणीकी बात सुन ब्राह्मण तैयारहो राजाके पास  
गया राजाने देखतेही दण्डवत्की और उसनेभी  
आशिशिदीराजाबोला तुम आनन्द मंगलसेहो ब्राह्मण  
ने कहा कि महाराज आपकी कृपासे सब आनन्द मंगल  
है परमैं एक कामनाकर आपके पास आयाहूँ ।  
यहसुनकर राजाने कहा कि जो तुम्हारा काम है  
सो कहो तब उसब्राह्मण ने अपना वह अहवाल

सब कहा सुनतेही राजा ने प्रधान को बुला आज्ञा की कि उन चार बालकोंको अबमँगाओ कि बारह वर्ष होचुके दीवान सुनतेही तुरत आप सवारहोउन बालकों को लेनेगया। पहिले उनमेंसे राजकुँवरको ले आया। नख और केशबढ़े हुये शरीर तमाम मैला कुचैला इस वेषसे जाके सन्मुख ला खड़ा किया। राजाने देखकर कहाकि पुत्र तुम कुशलसे हो इतने दिन तुम कहाँ थे और अब कहाँसे आये सब ब्यौरा अपना हमसे समझाकर कहो यहसुन कुँवरने हँसकर राजासे कहा कि आपके पुण्यसे अभी कुशल है और आजका दिनभी कुशलका है जो आपके दर्शनपाये। यहसुनकर अपने मनमें हर्षितहो राजाने मंत्रीकी तरफ देखा मंत्री उठहाथ जोड़ जुहारकरके बोला कि महाराज! यहसबकर्म-हीका लिखाहै फिर दीवानके पुत्रको बुलवाया आकर वहभी राजाके सन्मुख भयानक वेषसे खड़ा हुआजैसे बनसे भालू पकड़लाते हैं नाखून और बाल उसी तरह बढ़ेहुये शरमसे नीची गर्दन किये खड़ाथा राजाने पूछा कि तुम अपनी कुशल कहो कहाँथे और किधरसे आये हो तब वह बोला महा-राजकुशल क्षेम कहाँहैगी उधर संसार में उपजे हैं उधर बिनशे हैं जैसे घड़ी भरती और डूब जातीहै

नरजानता है दिनजाता है दिनजानै है नरजाता है  
 यही जगतका व्यवहार है इसमें कुशलक्षेम काहेकी  
 कहूं ये उसकी बातें सुन राजाने दीवान से कहा इसे  
 यह किसने सिखाया है जो कुछ तूने कहा था वह  
 सब अचरज है यहफल कर्मसेही इसने पाया फिर  
 राजाने कोतवाल के बेटेको बुलाया उसने आतेही  
 राजाको सलाम किया और हाथजोड़ खड़ाहुआ रा-  
 जानेकुशल पूछी तब उसने कहा पृथ्वीनाथ दिनरात  
 नगरका पहरा हम देतेहैं इसमेंभी चोरआन चोरी  
 करताहै बदनाम हम होतेहैं बिना अपराध कलंक  
 लगे तो फिर कुशल काहेकीहै राजाने फिर ब्राह्मण  
 के पुत्रको बुलाया जब वह सम्मुख आया राजाने  
 दण्डवत्की उसने मंत्रपढ़ आशीश दी राजाने  
 उसकी कुशल पूछी उसने कहा कि महाराज आप  
 पूछे हैं मुझसे यहबात कि तेरे शरीर में कुशल है  
 सो कुशल कहां है मेरेशरीरमें दिन बदिन उमर  
 घटतीजाती है महाराज कुशलतो तबकहनेमें आवै  
 कि भनुष्य चिरंजीविहोवै जीवन मरण साथ है उस  
 की क्या खुशी कहूं चारोंकी चारबातें सुनकर दीवान  
 से कहा कि सचहै पढ़ाने से पण्डित नहींहोता पण्डि-  
 ताई जो कर्ममें लिखी होय तो मिले यह कह दीवान  
 के तई सब प्रधानों का सरदार किया और अपने

राजकाजका भार दिया और उनचारों लड़कों के विवाह कर दिया और बहुत धन दौलत दी। इतनी बात कह पुतली बोली सुनराजा भोज कलियुग में ऐसाधर्मात्मा साहसी राजा होना कठिन है जो इतनी बुजुर्गी और धनपाय अपनी कही बातपर खयाल न करे और जो न्यायका धर्म था सोही ऐसा जो तू कामकरे इसयोग्य हो तौ सिंहासनपर पांवधर और नहीं तो अपनी यह आशतज। राजा अपने मनमें चिन्ता करता हुआ वहांसे उठमन्दिर में आया रातको लेटाहुआ बिचारनेलगा कि देखूं मेराभागफिरे या अभागारहूं राततो इसीतरह बीत गई सुबहहुई फिरवहीं आनमौजूदहुआ चाहेपांव उठा सिंहासन परधरे इसमें ॥

करुणावती तेईसवीं पुतली ॥

क्रोधकर बोली सुनराजा ! जो कदाचित् तू इसपर पांवरकखेगा तो तुर्त जलकर भस्म होजायगा और तुझे लज्जा नहीं आती कि तू घड़ी २ यह इरादा करके आता है और जो कोई होता तो फिर मुंह न दिखाता जिस सिंहासन पर राजा वीरविक्रमादित्य बैठे तिसके बैठनेका तू मनोरथकरे हंसकी बराबरी कौवानहींकरसक्ता सिंहके समान गीदड़को कोई नहीं मानता पण्डित के बराबर कोई मूर्खको नहीं

जानता राजा तू निर्वुद्धि है और कुछ तुझे ज्ञान नहीं जैसे मछली थोड़े जलमें उछलती है वैसे तू थोड़ी प्रभुता पाकर उतरा चला है। ऐसी २ कठिन बातें सुनकर पुतली रोने लगी। राजा अपनेचित्तमें चिन्ताकर उस पुतलीसे पूछने लगा कह सुन्दरी तू क्यों रोती है अपने जीका दुःख समझाकर मुझसे कह राजा वीरविक्रमादित्य में क्या गुण पुरुषार्थ था यह सुन करुणावती पुतली बोली राजा तुम स्थिर होकर बैठो और कानरखकर सुनो तो मैं सब कथा कहती हूँ। राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिलुवा वहाँ बैठ गया और जितने लोग राजाके साथ थे गिर्द ओ पेश सब बैठ गये फिर पुतली बोली कि राजा वीरविक्रमादित्यके गुण राजा भोज तू सुन ऐसा यशी साहसी पुण्यात्मा इस कलियुगमें कोई जन्मा नहीं और न कोई जन्मेगा जिस समय राजा विक्रमादित्य शंखकोमार राजगद्दीपर बैठा शंखके दीवान को बुलाकर कहा कि तुझसे मेरा काम न चलेगा इससे यह बिहतर है कि बीसदास मुझे अच्छे ढ़ंढ़कर लादे जो राजकाज करनेके लायक हों क्योंकि तुझसे कामका बन्दोबस्त न होगा मैं उनसे सब अपना काम लूंगा। राजाकी आज्ञा सुन दीवान बीस आदमी उसी नगरसे ढ़ंढ़कर ले आया कुलमें वैसे सुन्दरता

में सब अच्छे थे राजाके सामने खड़े करदिये राजा  
 उनको देखतेही बहुत प्रसन्न हुआ और उसी समय  
 सबको बागे पहना पान देकर कहा कि तुम हमारी  
 खिदमत में सदाहाजिररहो फिरउसके कईदिनके  
 बाद उनमेंसे किसीको दीवान किसीको कोतवाल  
 किसीको फौजदार किया गरज इसीतरहसे हरएक  
 को एकर कामदे पुराने लोगोंको जवाबदिया और  
 सब नया बंदोबस्तकिया पर एक उसपुराने दीवान  
 को जवाब न दिया दीवान जब अपने घर में बैठा  
 करता वे सब पुराने लोग आकर हाजिर हुआकरते  
 और आपस में चरचा करते कि यह राजा बुद्धिमान  
 है जो राज यों लिया और बन्दोबस्त यों किया कई  
 दिनके बाद दीवानने उन लोगों से कहा कि तुम  
 मेरेपास न आया करो इसलिये कि कामतो मेरे हाथ  
 तुम्हारा निकलता नहीं और नाहकको राजासुनेगा  
 तो खफाहोगा और कहेगा कि यह अपनेघरमें क्या  
 मता कियाकरता है मैं अपनी बदनामी से डरता  
 हूँ कुछ तुम मेरे इस कहने का बुरा न मानना यह  
 सुनकर उनमें से फिर कोई उसके पास न आया  
 यह अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसा कुछ  
 कामकीजिये जिसमें राजा प्रसन्न हो रात दिन  
 यही विचार करता रहता था एक दिन वह प्रधान

नदीकिनारे स्नान करने गया वहां स्नानकर कमरभर पानीमें खड़ा हुआ जप करता था। इसमें उस नदी में एक फूल अति सुन्दर कि वैसा कभी दृष्टि में न आया था बहता हुआ देखा अपना जप छोड़ कर आगे बढ़ फूल लेकर जीमें विचारा कि यह राजाकी भेंट करूंगा तो वह देखकर बहुत खुश होगा। वह फूल हाथमें ले खुशीर अपने घरमें आ कपड़े दरबारके पहन राजाके पास गया और फूल नज़र किया राजा फूलले बहुत खुश होकर बोला कि अपने राज्य पाटका मैंने तुझे प्रधान किया उसने उठकर भेंट दी और आदाब बजा लाया फिर राजाने कहा इस फूलका वृक्ष मुझे ला दे अगर ला देगा तो मैं तुझसे बहुत खुश हूंगा और जो न ला देगा तो अपने नगर से निकाल दूंगा। यह राजाकी आज्ञाले अपने मंदिर में आया और जीमें विचार करने लगा कि मैंने पूर्व जन्म में ऐसा क्या पाप किया है जो ऐसी सुन्दर वस्तु राजा को दी और राजा ने प्रसन्न होकर ली फिर यह कोप किया कर्मकी गति बूझी नहीं जाती कि भला करते बुरा होवे। अकेला बैठ बहुत चिन्ता करने लगा कि अगर राजाकी आज्ञा न मानूं तो देश निकाला मिले और हूढ़ने जाऊं तो कहांसे हूढ़कर लाऊं जो दुःख पाकर कहीं जाऊं और हूढ़ न पाऊं तो

और भी दूना दुःख होगा मैं यह जानता हूँ कि काल मेरे निकट आन पहुँचा है इससे अपयश का मरना भला नहीं अगर यों ही मरना है तो बनमें जाइये जो दूंदें मिलजाय तो ले आइये नहीं वहीं मरजाइये इतनी बातें अपने जीमें विचार ढाढ़स करके बैठा और अपने दीवान को बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढई को बुलादो कि एकनाम ऐसी हमें तैयार करदे कि बगैर मल्लाह और बिद्वन खेवटिये के जिधरको चाहें लेजावें। वोंहीं कारीगर बढईको बुलवा दीवानने हाजिरकरदिया बढईने कहा कि महाराज ! कुछ मुझे खर्चकी आज्ञा होवे तो मैं जल्द बनालाऊँ मंत्रीने दीवानसे कहा कि जितने यह रुपये मांगे उतने इसेदो तो यह जल्द बनालावे। रुपये उसे दिये वह घरको लेगया कितने दिनों के बाद नाव तैयार करके खबरदी कि तैयार होचुकी। वहीं दीवानने अपने स्वामीसे जाकरकहा आपने जो नावबनवानेकी आज्ञादी थी सो तैयार है। यह सुनतेही दीवान उठ नदीकिनारे आ नावको देख प्रसन्नहो उस बढई को जोड़ा घोड़ा दे पांचगांव घुत्तिकर विदा किया दीवान अपना सरंजाम नावपर रखवा आप कुटुम्बसे विदाहो हाथ जोड़कर कहने लगा कि जो हम जीतेफिरेंगे तो फिर तुमसे मिलेंगे

और जो मरगये तो यही विदाहमारी है। वह जब यह कहकर रुखसतहु आतमामघरके लोग कूकमार रोने लगे। फिर यहभी जी भारी किये हुये उस नाव पर बैठा। पालचढ़ा किश्ती खोलदी जिसतरफ़ से वह फूल बहताहुआ आयाथा उसी तरफ़को वह चलाजाताथ और दोनों किनारोंके दरख्तोंको देखताजाताथा। कितने दिनों में चला २ एक महाबन में जापहुंचा और खानेकी जिन्सभी तमाम होगई। तब उसने अपने जीमें विचारा कि अब नावपर बैठारहना उचित नहीं जिसकामको आये हैं उस कामकी फिकर किया चाहिये। यह अपने जीमें कहताथा और किश्ती पालपर उड़ाये जाता था कि एकपहाड़ दरमियान उस दरियाके नज़रआया और उसीपहाड़से पानी आताथा। किश्ती वहां लगा आप उतरकर पहाड़पर गया। क्या देखताहै जहां तहां हाथी घोड़े शेर अरने दहाड़रहे हैं सिवाय उनकी आवाज़ोंके कोई बात कान नहीं पड़ती सुन सुन आवाज़ें अपने जीमें सहमाजाताथा इसपरभी आगेही पांच धरताथा जब उस पहाड़को लांघगया वहां जाकर देखे तो एक वैसाही फूल बहा हुआ चलाआता है उसफूलको देख जीमें हँदता हुआ कहनेलगा कि वैसाफूल दूसराभी देखा भगवान्

चाहै तो वृक्षभीनजर आवे । ज्यों ज्यों आगे बढ़ा  
 त्यों र फूल और भी बहते देखे वह अंदेशा उसके  
 जीसे कमहुआ और दिलमें कुछ करार आया आगे  
 देखता क्या है कि एक बड़ा पहाड़ है और उस के  
 नीचे एक मन्दिर है उस मन्दिर को देखकर अपने  
 मनमें विचारा कि ऐसा सुन्दर मन्दिर इस जगह बना  
 हुआ है चाहिये कोई मनुष्य भी हो । यह कहता हुआ  
 उस मन्दिर के पास जा पहुंचा और वहां जाकर  
 देखे तो एक तरुवर में तपस्वी जंजीर पांवों में बांधे  
 हुये उलटा लटक रहा है हाड़ मांस चाम सूखकर  
 काठ होगया है और उसमें से एक बूंदरक्त की उस  
 नद में गिरती है और वह फूल हो वहां से बहता चला  
 जाता है ऐसे अचरज को देख जीमें यों कहने लगा  
 कि भगवान की लीला कुछ बुद्धि में नहीं आती नीचे  
 निगाह कहके देखे तो बीस योगी वैसे ही जटा धारी  
 बैठे हैं और सूखके व भी खड़ंग होगये हैं और  
 चारों तरफ उनके दण्ड कमण्डल पड़े हुये हैं और  
 जिस ज्ञान ध्यान में जैसे बैठे थे वैसे ही बैठे हैं यह  
 दशा वहां की देख प्रधान उलटा फिर अपनी नाव  
 पास आया नाव पर सवार हो कितने दिनों में अपने  
 नगर में आन पहुंचा लोगों ने खबर उसके आने की  
 पाई पेशवाई लेने को गये और उसे ले आये जो

कोई आताथा मिलकर क्षेम कुशल पूछकर बधाई देजाताथा घरमेंभी उसके नौबत बजनेलगी मंगलाचार होनेलगा। यहखबर राजानेसुनी और एक प्रधानको भेज दीवानको बुलाया। वह आनकर लेगया यह जाकर राजाके पांवपर गिरपड़ा राजाने उठा छातीसेलगा क्षेमकुशल पूछी और कहा कहांतलक तू गयाथा और कहां ठिकाना उसका करपाया यह सुनतेही वे फूल जो लायाथा भेंटकिये और हाथ जोड़कर कहनेलगा कि महाराज ! एक अचंभे की बात है जो मैं कहूंगा तो आप न पतियावेंगे। फिर राजाने कहा कि जो तूने अचंभा देखाहै सो बयानकर तब वह बोला महाराज ! मैं यहांसे चला हुआ एकजंगलमें पहुँचा और वहां जाकर एकपहाड़ देखा उसपहाड़पर जबमें चढ़ातो और एकपहाड़ नजरआया इसी तरहके पहाड़ लांघ जब मैं आगेगया एक पहाड़के तले एक सुन्दरमन्दिर देखा जबमें उसके पासगया तो एक पेड़पर तपस्वी पांवोंमें जंजीर बांधेहुये उलटा लटकताहुआ नजर पड़ा मांस चाम सब उसका हाड़में लटकरहाहै और रक्त उस देहसे जो टपकताहै सो फूलबनकर बहताहै और उस के नीचे देखातो बीसतपस्वी आसनमारे जिसध्यान में बैठेथे योंके योंहीं रहगये हैं और जान एकमेंभी

नहीं। यह सुनकर राजा हँसा और मंत्री से कहा कि तू सुन मैं उसका विचार तुझसे कहता हूँ कि वह जो तूने तपस्वी शृंगखल में लटकता देखा वह तो मेरी देह है मैंने उस जन्म ऐसी कठिन तपस्या की थी उसका फल यह राज्य मुझे मिला है और वे जो बीस सिद्ध तूने देखे सो बीसों दास हैं ये जो तूने लादिये और उसी तपस्या के तेज से मेरे आगे कोई नहीं ठहर सकता और उसी बल से शंख को मारा और यह पूर्वजन्म का लिखा था इसमें कुछ दोष मेरा नहीं जब तक मैं इस पृथ्वी में अखंड राज करूँगा तू तब तक मंत्री रहेगा तू अपने जी में चिन्ता मत कर इसमें दोष तेरा भी कुछ नहीं जैसा पूर्वजन्म का लिखा था सो हुआ और जैसी तब उन्होंने मेरी सेवा की थी वैसा ही अब उस का फल भोग करेंगे और तब उन्होंने मेरे साथ जी दिया था इसलिये मैंने उन बीसों को अपने निकट रक्खा है यह अपना परचा देने के लिये तुझसे निठुराई की थी अब तेरा मन पति-आया और तूने हमारा मर्म बूझा क्योंकि सब लोग कहते हैं कि विक्रम ने अपने बड़े भाई को मारा इसमें दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्म का लिखा है सो हो रहता है आज से मैंने तुझे अपना प्रधान किया और जिसमें राजकाज अच्छा होवे वहाँ की

जो यह बात किसी के आगे मत कहियो इसलिये कि जो सुनेगा राज्य के लोभ से योगकमावेगा ॥ इतनी बात करुणावती पुतली कहकर बोली सुन राजाभोज जितना राजा वीरविक्रमादित्यका राज्य था तिसका भार उन्ने दीवान को दे सुखत्यार कर दिया और राजपाट हवाले किया जो उसके समान हो तो इस सिंहासन पर बैठनेका नामले नहीं तो यह खियाल दिलसे दूर कर वह सायत और वह दिन भी राजा का टल गया दूसरे रोज सुबह आन फिर सिंहासन के पास खड़ा हुआ इससे ॥

चित्रकला चौबीसवीं पुतली बोली ॥

सुन राजाभोज ! मैं एक दिनकी हकीकत राजा विक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं सो तू दिलमें अपने खूब तरहसे समझ । एक दिन राजा नदीके किनारे दशहरे के नहाने को गया था वहां जाकर देखेतो एक स्त्री बनियेकी जवान खूबसूरत नदीके तीर खड़ी हुई बालसुखाती है और सामने उसके एक साहूकार बच्चा बैठा तिलक दे रहा है और आपस में दोनों की सैनें चल रही हैं कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय भौंमटकाय बाल सुलझाती है और कभी शिरका अंचल छाती से सरका बदन दिखा फिर छिपाती है कभी आरसी दिखा चूमकर छाती से

लगाती है इसतरह से अनेक २ रीतिकी चेष्टा कर रही है और वह भी इसी तरह इशारे कर रहा है उन दोनोंकी हालतें देख राजाने अपने जीमें विचारा कि इनका तमाशा देखा चाहिये कि ये क्याकरते हैं राजाने स्नान ध्यान अपना भी सब किया पर उनकी ओरभी देखतारहा । इतने में वह स्त्री जान कर चढ़रओढ़ धूँघटकरे अपनेधाम को चली और साहूकार बच्चा भी उसके पीछे पीछे चला राजाने एक हरकारा उनदोनों के पीछे लगाया और उस हरकारे को कह दिया कि इनदोनों का मकानदेख सबसे वाकिफ हो आ और हमें जल्दी खबरदेजब वह औरतअपने घरमें गई तब उसने फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया फिरछाती पर हाथधर अपने मन्दिरमें गई और सेठके बेटेनेभी अपनी छातीपर हाथरक्खा यह खबर हरकारे ने आकर राजाकोदी । राजाभी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पण्डितसे पूछा कि कोई त्रियाचरित्र हमेंसुनाओ क्यों कि हमारा जी सुन्नेको चाहताहै तब पण्डितने उत्तरदिया कि महाराज ! मेरी तो क्या सामर्थ्य है जोमैं त्रियाचरित्र आपके आगे कहूँ त्रियाका चरित्र और पुरुष का भाग्य ब्रह्माभी नहीं जानता आदमीकी तो क्या कुदरतहै और यह

देखेही बनआवे जवानसे कहा नहीं जाता यह बात पण्डित से सुन राजा चुप होरहा और अपने जीमें कहा यह चरित्र देखा चाहिये । इतने में शामहोगई राजा उठ महलमें गया कुछ खा तुरंतही बाहर निकल आया और उस हरकारेको बुलाकर कहा कि तू इसबातका ब्यौरा कुछ समझा है उसने जवाब दिया कि महाराज कुछ मेरे जीमें आया है पर आपके आगे कहते शंका होतीहै राजाने कहा कि जो तू समझाहै निडर होकर बयानकर वह बोला महाराज उन्ने जो शिरखोलकर छातीपर हाथ रक्खा सो उन्ने कहा जिसवक्त अंधेरी रात होगी तबमें तुझसे मिलूंगी और उन्नेभी छातीपर हाथ रक्खा जवाबदिया कि अच्छा दासकी समझमें यह-कुछ आयाहै राजानेकहा तूतो सबसमझा है यही उनका मतलब है मैंने भी बड़ी देर तक घाटपर बैठ उन्हीकामुद्दा भालूम कियाथा पर तू अब मेरे तई उसके घर लेचल । हरकारेने कहा अच्छा । महाराज मैं हाजिरहूं चलिये । राजा हरकारेको ले उसके मकानपासआया और उसको बिदाकिया पिछवाड़े चौवारे के एक खिड़की थी उसमें से चिरागकी ज्योति नज़र आती थी और कभीर जो झांक्ती थी तो उसकी झलकभी मालूम होती थी

जब दोपहर रातगुजरी और खूबअंधेरी होगई तब राजाने उधर से एक कंकड़ी उस खिड़की में मारी लगतेही वह झांक राजाको देख यह जाना कि वही शरूस आनपहुंचा फिर उसने तमामघरका जवाहिरात और सब गहना एक डिब्बेमें भरा और साथ लेकर निकल राजाके पास आई कहा कि यह ले और मुझे लेचल राजाने कहा कि यों तो मैं तुझे न लेजाऊंगा क्योंकि तेरा खाविन्द जीता है जो कभी खबरपावे तो राजाके दरबारमें फरयादको जावे तो राजा तुझे मुझे मारडालेगा इससे बिहतर यह है कि पहले तू उसे मार फिर आ जो अकंटक हो हम तुम सुखभोग करें। उसने बिलम्ब कुछन किया सुनतेही घरमें जा कटारी ले खाविन्द को मार फिरचलीआई और वह जवाहिर का डिब्बा राजाको दिया दोनों इसतरह नगरसे बाहर गये आगे आगे राजा और पीछे २ वह स्त्री जब नदी किनारे पहुंचे तब राजा वहां खड़ा हुआ और अपने जीमें विचार करने लगा कि जिसने अपने स्वामी के मारने में बिलम्ब न किया उससे दूसरे के लिये क्यों देरी होगी अब इससे जुदा होजिये और इसका जरिअ देखिये कि अब यह क्या करती है। यह दिलमें विचारकर राजाने कहा ऐसुन्दरी मैं देखू

पहिले इसनदी में जल कितना है जो मैं इस नदी की थाह पाऊंगा तो इसी रास्ते से तुझे भी खींच लूंगा यह कह राजा नदी में पैठा और पैर कर पार का रास्ता लिया जब उस किनारे जा पहुंचा तब पुकार कर कहा कि मैं तो पार उतर आया पर तुझे ला नहीं सकता क्योंकि पानी अथाह है। यह कह राजाने आगे की राह ली तब उस औरत ने अपने मन में विचार कि द्रव्य उसके हाथ लगी है उसके लोभ से यह मुझे छोड़ गया अभी रात कुछ बाकी है बेहतर है कि फिर घर चलिये और स्वामी के साथ जलिये यह दिल में ठान कर अपने घर में आई और खाबिन्द के पास जा कूक मार मार हाय २ कर रोने लगी और पुकारी दौड़ियो चलियो मेरे खाबिन्द को चोर मारे हुये जाता है और घर की सब माया भी लिये जाता है यह सुन कर घर बाहर के सब लोग दौड़े और पूछा कि चोर किधर है उसने कहा अभी इस रास्ते निकल गया लोग तो हूँढ़ने लगे और यह शिर पटक २ रो रो कहती थी कि मेरा सुहाग लूट मुझे अनाथ किये जाता है लोग सब लोग कुटुम्ब के समझाने लगे कि यह भगवान् की माया है इसमें किसी का बश नहीं चलता जब मौत आती है तो कुछ बहाना लिये आती है इसके दिन पुरे हो चुके और कौन किसी को

यों मारसक्ता है और कौन किसको जिला सक्ता है तू अपने जीमें हाठस बांध और इसकी गति कर तब वह बोली कि मैंभी इसके साथ सतीहूंगी क्यों- कि मेरा जगत में कोई नहीं लोगोंने बहुतेरा सम-झाया पर उसने न माना खाबिन्दको ले नदी किनारे गई और चिताबना उसको लेकर आपभी जलने को बैठी तमाम नगर के लोग देखने को आये राजाभी आन खड़ा हुआ। उसने खातिर जमासे आग अपने हाथसे चितामें लगाई और सँभल बैठी जब कपड़े और बाल उसके जलकर बदन में आंच लगी तब घबराकर उठी और सबलोग देखकरहँसे चितामेंसे कूद नदी में जापड़ी राजासे चुप न रहा- गया कहा कि अय सुन्दरी यह क्या है तब तो वह अब यह तब वह बोली सुनो राजा इसका मर्म जा- कर अपने घरमें पूछो और मैं जो अपने कर्म में लिखालाई थी उसीका फलपाया पर तूने अपने घरका भेद न पाया। हमसात सखियां इसनगरमें है उनमें की एक मैं हूँ और छः तेरे घरमें हैं यह कह वह तो पानीमें डूबमरी राजा अपने महल में आया और छिपरहा किसीको दिखाई न दिया। एकदिन और एकरात वहां लगारहा दूसरी रात जब हुई तब अन्धीरात के समय लहोंगनियां हाथों में

कञ्चन के थाल मिठाई पकवान से भर भर लेकर महल के पिछवाड़े की बाड़ी में गई उसके आगे एक बनथा उस बनमें मढ़ी थी उसमें एकयोगी ध्यान लगाये बैठा था ये छहोरानियां दण्डवतें कर वहीं जा बैठीं राजा भी जो उनके पीछे पीछे आया था अहवाल देखने लगा जब सिद्ध अपने ध्यानसे निश्चिन्त हुआ उनसे हँस हँसवातें कहने लगा और जिसकदर ये मिठाई पकवान ले गई थीं सब आगे रख दिया उसने भोजन किया और पान खाकर एकयोग विद्या की कि एक देह की छः देह भई और उन छहोरानियोंसे भोग किया। फिर वे छहोरानियां बिदा हो अपने मन्दिर को चली आईं। राजा यह चरित्र देख अपने मनमें विचार करने लगा कि इस सिद्ध ने क्या किया कि अपना योग भ्रष्ट किया और उनका धर्म खोया यह विचार कर राजा सिद्ध के सोँहीं जाकर खड़ा रहा सिद्ध मनमें कुछ संकोच कुछ शंका लिये बोला कि कह नृपति कहाँसे आया है अपने मनका मुझसे भाव कह तब राजाने कहा मुझे आपके दर्शन की इच्छा थी इसलिये मैं आया हूँ तब वह योगी बोला कि राजा तू मुझसे जो कामना माँगे सो तेरी पूरी करूँ फिर राजाने कहा कि स्वामी ! एक देह की छः देह किस तरह बनें वह विद्यामें

तुझसे मांगता हूँ मुझे बताओ नहीं तो मैं तुम्हें जानसे मार डालता हूँ इतनी बात कह पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज जब राजाने उस सिद्ध से ये बातें कहीं तब उसने डरके वह विद्यादी और राजाने वहां परीक्षा करली तिस पीछे योगीको तलवारों मार टुकड़े कर डाला। फिर वहांसे महलमें आया और जहां छहों रानियां बैठी थीं वहीं आनकर राजा भी बैठा राजाको देख छहों उठ खिदमतमें हाजिर हुई किसीने पंखा हिलाया किसीने हाथ मुंह धुलाया किसीने पान बना खिलाया इसी तरह सब अपनी-प्रतीति राजासे प्रकाश करने लगीं और ज्यों २ वे प्यार करती थीं त्यों २ राजा मान करता था। फिर राजा बोला सुनो सुन्दरीयो ! मैं तुमसे हित करता हूँ तुम मुझसे अनहित कर और का ध्यान धरो यह तुम्हें उचित नहीं तब वे बोलीं कि महाराज ! हमारे तो प्राणरक्षक तुम हो तुम्हें देखे हम जीती हैं तुम्हारा ध्यान हम आठों पहर करती हैं जो कभी बाहर कहीं तुम जाते हो तो हम चकोर की तरह तुम्हारे मुख चन्द्रके देखनेको तरसती हैं और जैसे जल-बिन मीन तड़फे तैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षणभरके वियोग में जल कमलकी तरह हम कुम्हिला जाती हैं। राजा सुन क्रोधकर मुसकराया कि

सब है। सुन्दरियो हमने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोड़ता जैसे एक सिद्धके छः सिद्ध हो गये फिर वह एकही सिद्ध होगया यह सुन रानियां एकदम चुप होकर फिर बोलीं कि महाराज ! ऐसी आश्चर्यकी बात तुम कहते हो जो कभी न देखी न सुनी और किसीको एतिबारभी जिसका न आवै क्योंकर एक देहकी छः देह होवें और इसबात को कौन मानेगा तब राजाने कहा कि चलो हमतुम्हें दिखादें। छहोंको अपनेसाथ ले उसी बाड़ीमें जा उसगुफाका मुंह खोल दिया देखकर वे सहम गईं और अपने मनमें जाना कि राजाने हमारा सब चरित्र देखा फिर राजा ने कहा कि तुमने जाना या नहीं यह सुनकर उन्होंने नीची गरदन कर जवाब कुछ न दिया तब राजा छहोंका शिरकाट उसगुफा में डाल मुंहबन्दकर चलाआया और आतेही नगरमें ढंढोरा फेर दिया कि जितने ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्मणोंकी कन्या हैं वे सब यहां आनकर हाजिरहोवें। यह सुनकर सबहाजिरहुई जितने रानियों के गहने और वस्त्र थे वे सब ब्राह्मणियों को पहनाये और एक २ ब्राह्मणको एक गांव वृत्ति करदिया और जितनी कन्यार्थी उनको दान दहेज दे ब्याह दिया और आप राज्य काज करनेलगा इतनीबात कह

पुतली समझाने लगी कि सुनराजाभोज ! तू बड़ा पण्डित है पर इस आसन पर वह बैठेगा जो विक्रमस मान होगा। वह सायत भी गुजर गई राजा उठकर वहांसे अपने मकान में गया रात को इसी शोच में सो रहा दूसरे दिन सुबह को फिर सिंहासन के पास आकर खड़ा हुआ तब ॥

जयलक्ष्मी पच्चीसवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा ! एक दिन की बात मैं तेरे आगे कहती हूँ एक भाट निपट दरिद्री खराब हाल था सब पृथ्वी के राजाओं के पास फिर आया था और एक कौड़ी का किसी से उसने फायदा न पाया था जब अपने घर में आया तो देखा कि बेटी जवान ब्याह के लायक हुई है। यह अपने जी में चिन्ता ही करता था कि उसकी भाटिन बोल उठी तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई कर लाये सो कहो तब उसने जवाब दिया कि मेरे प्रारब्ध में धन नहीं है इसलिये कि तमाम राजाओं के पास मैं गया और शिष्टाचार उन्होंने सब किया पर एकदम न हाथ आया अब मेरे जी में एक बात आई है राजा वीर विक्रमादित्य बाकी रह गया है उसके पास भी जाकर मांगूं जो मेरे जी का संदेह मिटे फिर वह भाटिन बोली अब तुम कहीं मत जाओ और संतोष कर रहो कर्म

का लिखा फल यहीं बैठे पाओगे फिर भाटने कहा कि राजा वीरविक्रमादित्य सुनते हैं बड़ादानी है उसके पास अपनी कामना जो लगया है वह खाली हाथ नहीं फिरा और अपने मकसदको पहुंचा है। ये बातें कर वह राजाके पास चला और गणेशको मना राजाके सन्मुख जा खड़ा रहा राजाने दण्डवत की और वह अशीष देकर बोला कि बहुतभूमि फिर आया हूं आपका यश मुझे यहां ले आया है आप इस मर्त्यलोकमें इन्द्रका अवतार हैं और गुण के निधान हैं आपके बराबर दानी संसारमें कोई नहीं इस समय में आप दान देनेको राजा हरिश्चन्द्र हैं तमाम पृथ्वी में आपका यश छारहा है और स्वामी में कालीका सुत हूं भाट वंशमें आनकर अवतार लिया है अब तुम्हें यांचने आया हूं मेरा मनोरथ पूर्ण कर दो मैंने संसारमें फिरकर खूब देखा कि सिवा तुम्हारे मेरी आशका पूजने वाला और कोई नहीं तब हँसकर राजाने कहा कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह जो मैं तेरी कामना पूरी करूं। भाटने कहा योंमुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं आप वचन दीजिये तो मैं खातिरजमा से कहूँ जब राजा वचन देने लगा तब भाट बोला कि महाराज मुझे मुंहभांगा दान दीजिये कि अपनी पुत्री की

शादी करद्वं बारह बरसकी कन्या मेरे घरमें बैठी है इसलिये मैं यांचने आयाहूं यह सुन राजाने हँसकर मंत्रीसे कहा कि जो यह मांगे वह इसे दो फिर उस भाटने कहा कि महाराज ! जो कुछ आपको देना है सो अपने सन्मुख मँगाकर दीजिये मुझे इस संसार में अब किसीका इतबार नहीं राजाने दस लाख रुपये रोक और हीरे लाल मोती सोने रुपये के गहने थाल भर भर करदिये और वह ले आशीष दे अपने घरमें आया । जो कुछ लाया था सब ब्याहमें लगाया और राजाने पीछे उसके दो जासूस कर दिये थे कि तुम देखो कि यह धन लेजाकर क्या करता है उसकी खबर ठीक मुझे लाकर दो । जब वह शादी कर चुका और उसके पास एक दिन के खानेको भी न रहा तब उन हरकारोंने जाकर राजा को खबर दी कि महाराज उस भाट ने ऐसा विवाह बेटीका किया कि इस कलियुग में कोई और करसक्ता नहीं । जो कुछ आप के यहांसे धन दौलत ले गया था सो सब क्षण भरमें बेटीको दे ब्याह दिया यह सुन राजाने और कई लाख रुपये उसके घर भेज दिये और अपने चित्त में बहुत प्रसन्न हुआ कि धन्य भाग मेरे हैं जो मेरे राज्य में ऐसे हिम्मत वाले लोग हैं । इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! इतना

धन देकरभी राजाने उसका खर्चसुन और दौलत भेजदी ऐसादानी तू हो तो इससिंहासनपर बैठ और नहीं तो मनके लड्डूखाने से कुछ हासिल नहीं है यह सुनकर राजा अपने मकानमें आया फिर सुबहहुई स्नान पूजाकर वहीं आन चुपका खड़ा हुआ इतने में ॥

विद्यावती छब्बीसवीं पुतली ॥

बोली कि सुनराजा ! मैं तेरेआगे ज्ञानकी बात कहतीहूँ और तू मनदेकर कानरख जब आदमी जन्मता है तो कुछसंग नहींलाता और मरता है तो कुछले नहीं जाता इस जीवनका फल यहीहै कि संसार में आकर कुछ करनीकरे और जैसीकरनी करेगा वैसाही फल पावेगा और संसारमें जीवन थोड़ा है इससे ऐसा यशकरो कि जाने परभी जग में नाम ठहरा रहे दोनों लोकमें सुखपावे और यह मनुष्यजन्म बारबार नहीं पाता जब पूर्व जन्मदान ब्रततपस्या बहुत कर आताहै तो यह नरदेह पाता है और लक्ष्मीदान कर कुछशोच मतकर यही अपने जीमेंसदा रख कि दानहमेशा कियाकीजिये यह भयरूप जो संसार सागरहै इसके तरने को सिवाय दान उपकार और हरिभजन दूजा उपाय नहीं । मैंने तुझसे कहा कि साथ कोई कुछ नहीं लेजाता तेरे

आगे सच कहती हूँ कि राजा हरिश्चन्द्र, राजाकर्ण, राजावीरविक्रमादित्य क्या लेंगये और जिन्होंने दान उपकार हरिमजन किया उनका जगमें नाम रहा और अन्त समय बैकुण्ठ पाया। ये बातें पुतली की सुन राजा भोज बोला कि राजावीरविक्रमादित्य ने क्या किया है यह कह तब विद्यावती पुतली बोली कि एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य राजसभा में बैठा था एक दासीने आकर अर्जकी कि महाराज उठिये पूजाका समय जाता है यह सुनकर राजा ने विचारा कि इसने सच कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझ से ज्ञान धर्म पूजा बन नहीं आई इससे उत्तम यह है कि इस राज्यकाज की माया भुलाय अब योगकमाइये जो कि और जन्ममें काम आवे। यह राजाने अपने जीमें विचारा और राज्यपाट धन जन मिथ्या समझकर तपस्या करने को एकवनमें चला और यह विचार करता जाता था कि इस संसार में जीना सबेरे की ओससमान है और जीनेके भरोसे पर मैंने अपना काम अकारथ गँवाया यह विचार करता हुआ राजा एक महावन में जा पहुँचा वहाँ जाकर देखे तो एक मण्डली तपस्वियों की बैठी हुई है धूनी एक २ के आगे जागरही है आसन मार २ अपने २ ध्यानमें

लीन होरहे हैं कोई ऊर्ध्वबाहु कोई पंचाग्नि इस री-  
 तिसे अनेक २ प्रकार की साधना कररहे हैं और  
 कोई २ उनमें बैठा शरीरसे मांस काट काट होम  
 कर रहा है। इस तरहसे उनकी तपस्या देख राजा भी  
 तप करने लगा। आप भी तपस्या करता था और  
 उनकी भी तपस्या देखता था कई एक दिनमें तप-  
 स्त्रियों ने अपना शरीर सब हुन दिया उनकी देखा  
 देखी राजा भी अपना शरीर होमने लगा। कई  
 महीनों में राजाने एक दिन शिर भी अपना काट  
 होम दिया वहां जो एक शिवका मन्दिर था उसमें  
 से एक शिवगण निकला और निकलकर सब तप-  
 स्त्रियों की धुनी मेंसे राख समेटकर जुदी जुदी ढेर  
 की और फिर जा शिवको खबर दी कि महाराज  
 जो आपने कहा था सो मैं कर आया तब शिवने  
 आज्ञा की कि यह अमृत तू ले जा और उनके ऊपर  
 छिड़क आ। यह आज्ञा पाय अमृत लाय ज्यों २  
 छिड़कता था त्यों २ उनमेंसे एक एक शिव शिव  
 राम राम कह कह उठ खड़ा होता था सब पर तो  
 उसने छिड़क दिया। पर राजा की धूनी भूल गया  
 और सब तपस्वी मिलकर शिवकी स्तुति करने लगे  
 कि महाराज! आप भक्तराज हैं और अनाथके नाथ  
 जिन्ने आपका स्मरण किया तिसका तभी तुमने

फलदिया और जहां २ सेवकों को सङ्कट हुआ है तहां तहां उनको सहाय हुये हों। यह स्तुति करके उन तपस्वियों ने कहा महाराज एक नृपति भी हमारे साथ तपस्याकरताथा पर मालूम नहीं कि उसको आपकी आज्ञा हुई कि नहीं। यह सुन महादेवने उस गणकी तरफ देखा देखतेही उन्ने अमृत लेजाकर जो धुनी बाकीरही थी उसपर छिड़का राजाभी हर हर कहता उठ खड़ाहुआ और हाथ जोड़कर स्तुति करने लगा कि महाराज ! संसार के सब जीवोंकी आप सहाय करते हैं और पालते हैं आपबिना इससंसार सागरसे कौन पार उतारे जिसने जगमेंआ आपकोनहीं पहिचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोया। फिर जितने तपस्वी वहांथे शिवने उनको मुंहमांगा बरदिया और सबको विदा किया सबके पीछे जब राजा अकेला रहगया तब उसे कहा जो तेरी इच्छामें आवे सो तू बरमांग मैं तुझेदूंगा यहसुन राजाने कहा महाराज ! आपकी दयासे सब कुछ है पर एक यह मांगताहूं कि संसारके जन्म मरणसे मेरा निबेड़ाकरो जैसे और भक्तों का निबेड़ा किया तैसे मुझसे परमपापी आधीन दीन हीनको तारो। यह राजाकी विनती सुन दयाकर शिवने हँसकर कहा तेरेसमान कर्मीकोई कलियुगमें नहीं

और तू ज्ञानी योगी दाता साहसी तपस्वी है कलिके राजाओंका उद्धार करनेवाला है और मैं तुझसे कहता हूँ कि अब जाकर तू अपना राजकर जब तेरा काल निकट आवेगा तब मेरे पास आइयो यह मैंने तुझे बचन दिया कि अन्त समयमें तुझे मोक्षपद दूंगा इससे तू अब जाकर मर्त्यलोकमें आनन्दसे राजकर । फिर राजा करुणा करके बोला कि महाराज ! संसारमें तुम्हारे प्रपञ्च कुछ जाने नहीं जाते या तो मुझे इससमय तारो नहीं तो मैं अपना जी देता हूँ तब हँसकर शंकरने कहा कि जो तू देगा तो मृत्यु बिना यम तुझे हाथसेभी न छुएगा और फिर आयुर्बल के दिन भरने पड़ेगे इससे तू जा उठ मेरा बचन जीमें रख इतना कह शिव तो कैलासको गये और राजाके हाथमें कमलका फूल दे यह कह गये कि जब यह कमल मुझायगा तब तब तू जानियो छः महीने में मरूंगा फूलले राजा अपने नगरको आया और अपने मनका विचार किसीसे न कहा कितने एकवर्ष पीछे वह कमल का फूल मुझा गया तब राजा ने जाना कि मैं छः महीने में मरूंगा जितना कुछ धन और दौलत थी सो ब्राह्मणों को संकल्प कर दी स्त्री और पुत्रके खानेको कुछ धन दिया बाकी सब पृथ्वी ब्राह्मणोंको दान कर दी । इसतरह दान

पुण्यकर राजा सदेह कैलासको चला गया इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज विक्रमादित्य ने इतना काम किया और जीवन मरण दोनों चीन्हें इससे मैं तुझे कहती हूँ कि जीने का कुछ भरोसा नहीं और मरण उसके साथ लग रहा है दुख सुख भी मनुष्य के शरीर के साथ हैं और पाप पुण्य भी साथ रहते हैं निर्गुण और सगुण ज्ञान घट में रहता पर एक ब्रह्म ही अलख है इससे मैं तुझे कहती हूँ भूपाल ! कि संसार में कीर्ति रह जाती है सोई अमर है जो मैंने तुझे कहा मन बच कर्म कर सच्च तू जान । वह दिन तो यों गुजर गया राजा नाउममें दहो मकान को फिर गया सुबह होते ही हाथ मुंह धो स्नान पूजा कर फिर वहीं आन मौजूद हुआ जितने राजा की सभा के लोग थे सो भी सब हाजिर हुये राजाने अपने लोगों से कहा कि ये पुतलियां बातें झूठ बना बना मेरे आगे कहती हैं अब मैं इनकी बातें न मानूंगा और इस सिंहासन पर बैठूंगा । वह यह अपने लोगों से बातें करता था कि ॥

जगज्योति सत्ताईसवीं पुतली ।

बोली सुन राजा भोज ! एक दिन राजा बीर विक्रमादित्य अपनी सभा में बैठा था कि कोई प्रसंग निकला इसमें कोई बोल उठा कि आज राजा इन्द्र के बराबर कोई राजा नहीं है क्योंकि वह देवलोक

का राज्यकरता है यह बात राजाने सुन किसी से कुछनकहा और बैतालों को बुलाकर कहा मुझे इन्द्रपुरी को लेचलो बैताल तुर्त ले उड़े और एक दममें लेजाकर इन्द्रकीसभामें पहुंचादिया राजाने जातेही वहां इन्द्रको दण्डवत् की और हाथजोड़ खड़ा हुआ तब इन्द्रने बैठनेकी आज्ञा दी वह हुक्म पाकर बैठगया । इन्द्रने कहा कहांसे तुम आये हो और नाम तुम्हारा क्या है देश तुम्हारा कौनसा है किस अर्थको यहां आये हो सो तुम कहौ राजा बोला कि स्वामी अम्बावती नगरी का राजाहूं मैं विक्रम आपके पदपङ्कज के दर्शनके अर्थ आया हूं तब प्रसन्नहो इन्द्र बोला कि हमने भी तुम्हारा नाम सुना था और मिलनेकी इच्छाथी सो तुमने आन इहां उलटी रीतिकी अबजो कुछ तुम्हारा मनोरथ हो सो हमसे कहो और जो तुम्हें चाहिये सो मांगो हमतुम्हें देंगे । तबराजाने कहा स्वामी आपकी कृपा और धर्मसे सबकुछ है और जो कुछ नहो तो मैं आपसे मांगूं आपका दिया हुआ सबकुछ मेरेपास है राजाकी ये बातें सुनकर इन्द्रने प्रसन्नहो अपना मुकुट और एक विमानदे यह आशीषदी कि जो तेरे सिंहासन को बुरीदृष्टिसे देखेगा वह तुर्त अन्धा होगा राजा वहां से विदा हो फिर अपने नगरमें

आया और नगरमें बधाईबजनेलगी इतनीबात पुतलीसे सुनकर राजाभोजसिंहासनपर हाथधरकर अपनेपांवकोरख खड़ाहुआ और चाहा कि आसन मार गद्दीपर जा बैठूं इतने में आंखसे अन्धाहोगया और दीवानीबातें करनेलगा चाहताथा कि उसपर से उठआवे जुदा न होताथा यह हाल देख पुतलियां खिलखिला कर हँसीं और सब सभा भौचक होगई अपने जीमें सबलोग कहने लगे कि राजा ने यह क्या अज्ञानपन किया कि बिनाबातसुने सिंहासनपर पांव दिया। यह अपनीदशा देख राजा भोज बहुत पछताकर लज्जित हुआ तब पुतली बोली कि अय मूर्ख तूने हमारी बात न सुनकर क्या फल पाया अब तू ऐसेही रहा यह सुन निराश हो बोला कि इसका यत्न कुछ तुम बताओ तब पुतली बोली कि राजाविक्रम का नाम ले तब तू इस दुःख से छूटेगा जब विक्रम का यश राजाभोज ने बयान किया तब हाथ छूटगया और आंखसे भी सूझने लगा फिर नीचे उतर खड़ाहुआ। देखकर सबलोग भयमानहुए और राजाभी अपने चित्तमें डरा सभा के लोग बोले सब कि राजाविक्रम के समान होना इस कल्लि में कठिन है फिर पुतली बोली कि राजा इसीवास्ते मैंने कहाथा और तू मेरी बात झूठ मत

मानतू मूर्ख है कुछभी तुझे ज्ञान नहीं जो तू विद्यापढ़ा है इससे कुछ होता नहीं ज्ञान और ही चीज़ है अपने बराबर राजा बीरबिक्रमादित्य को मत समझ वह देवताओं के समान था और उसके बराबर ज्ञान ध्यान तेरा नहीं अपने जीसे आस छोड़ यह सिंहासन तुझे नहीं सजेगा और संसार में तेरा राज स्थिर हो प्रताप बढ़े कीर्ति रहे । वह दिन भी गरज इन्हीं बातों में गुज़र गया फिर अपने महल में गया रात को ज्यों त्यों काट सुबह फिर उसी मकान पर आन खड़ा हुआ तब ॥

मनमोहनी अट्ठाईसवीं पुतली ॥

बोली कि सुन राजा भोज ! राजा बीरबिक्रमादित्य के समान बली साहसी ज्ञानी कलि में दूसरा जो कोई हुआ हो तो मुझे बता दे और जो मैं कहती हूँ सो सच कर जान एक दिन मैंने राजा बीरबिक्रमादित्य से हँसकर कहा कि स्वामी ! पाताल में राजा बलि बड़ा राजा है कि जिसके दास समान भी तू नहीं हो सकता है और जो अपना राज तू स्थिर किया चाहे तो एक बार राजा बलिके पास तू हो आ यह बात सुनते ही बैतालों को बुला आजादी कि पाताल पुरी में मुझे राजा बलि के पास ले चलो सुनते ही बैताल तुर्त ले उड़े और दमभर में पहुँचा दिया राजा वह नगर

देख भौचकहोरहा और अपने मनमें कहने लगा कि ऐसा नगरकहीं आजतक नहीं देखा मानिन्द कैलाशके होरहा है धन्यराजा बलिको जो इसनगर का राजकरता है । इसतरहसे नगर देखता हुआ राजाकी । सिंहपौर पर जा खड़ा हुआ और हाथजोड़ बिनती कर द्वारपालों से कहने लगा अपने राजा को मेरे आने का समाचार कहो कि महाराज मृत्युलोक से राजा विक्रम आपके दर्शनको आया है यहसुन डिहुडीदारने अपने राजाके पास जा विक्रमकी खबर दी सुनकर राजाबलिने कहा नरकोमें अपना मुखनदिखाऊंगा यहसुनकर दरवाने आ राजासे कहा कि तुम्हें दर्शन न होगा राजा विक्रम बोला कि जबतलक दर्शन न पाऊंगा तब तलक यहांसे मन न डुलाऊंगा यह बात जाकर दरवाने राजाबलिसे कही तब उसने कहा कि विक्रम तो कौन है जो राजा इन्द्रभी आवें तोभी मैं अपना दर्शन न दूं फिर कई दिनके बाद एक दिन राजाने दुःखपायके अपना शिर काटडाला बलिक तमाम सभा में रौला मचा कि बड़ा अयुक्त काम इस प्राणी ने किया । राजा ने बात सुन हँसकर आज्ञा दी कि अमृत लेजाकर उसे जिलाओ और कहो कि तुझे दर्शन होगा तू अपने जीमें न घबड़ा इसवक्त तू जा

और अपना राज काजकर और जब शिवरात्रि आवेगी तब तू आइयो तुझे दर्शन मिलेगा । यह सुन एक दास राजाका अमृत लेगया और राजा वीरविक्रमादित्य पर छिड़क कर जिलाया । जब राजा सावधान हुआ उठबैठा तब उसने राजाबलि का संदेशा सब कहा । सुनकर विक्रम बोला कि तुम यह बात कहकर मुझे क्यों बहकाते हो मैं तुम्हारी नहीं मानने का इससे उत्तम यह है तुर्तमहाराज का दर्शन करूं यह सुन लोगों ने राजाके पास जाकर कहा कि महाराज ! वह नहीं मानता और जाता नहीं जब इसजवाब और सवाल को कुछ देर हुई तब फिर राजा विक्रमादित्य ने अपना शिर काटडाला द्वारपालने राजासे कहा कि महाराज ! फिर उस मनुष्यने आत्मघात किया राजाने फिर अमृत भेजदिया और कहा कि उसे जिला समझा कर उसके नगरको पठादो एक दूतने आकर राजा पर अमृत छिड़क जिलाया और कहा कि तू अपने जीमें ढाढस रख अब तुझे तुर्त दर्शन होगा और जितने राजा की सभा के लोग थे उन्होंने एक मता कर राजा से कहा कि महाराज ! विक्रमकी आश को निराश मतकरो क्योंकि इसने बड़ा साहस किया है उनकी बातें सुन राजाबलि उठकर द्वारपर आया

और विक्रमने दर्शन पाया और दण्डवत् कर हाथ जोड़ कहा कि महाराज ! धन्य है भाग मेरे जो मैंने आज आपका दर्शन पाया और जन्म २ का दुःख गँवाया । फिर कहने लगा कि महाराज ! क्या मेरा अपराध था जो मुझे आप दर्शन न देते थे क्या मैं साहसी नहीं हूँ या मैं दानी नहीं हूँ या मुझे लोक के लोग नहीं जानते यह कौनसा पाप था जो मेरे द्वार आने से आपने बुरा माना तब राजा बलि बोला कि सुन विक्रम कुलनायक तेरे समान और कोई नहीं अब कान देकर सुन कि मैं तेरे आगे इसका ब्योरा कहता हूँ पहले राजा हरिश्चन्द्र बड़ा दानी बड़ा साहसी हो गया है और राजा जगदेव भी बड़ा दानी और बड़ा प्रतापी हो गया है उन्होंने बड़ा दान और साहस किया था पर तेरा सा जी उनका न था और उन्होंने भी मेरे दर्शन की बहुत अभिलाषा की थी पर दर्शन मैंने किसीको न दिया एक द्वीपका राजा किस गिनती में है पर तेरी तपस्या बड़ी जोरावर है जो तुझे दर्शन मिला । राजा विक्रम ने फिर हाथ जोड़ कहा महाराज ! जो आपने कहा सब सच है और मैंने निश्चय कर अपने जी में माना कि आपने मुझ पर बड़ी कृपा कर दर्शन दिया और दया कर भवसागर से पार किया फिर राजा बलि ने कहा कि राजा तू अब विदा हो और जाकर

अपना राजकाज कर बिदा का नाम विक्रमने सुनकर बड़ा खेद किया इतनेमें राजा बलिने एकलाल मँगा विक्रमको प्रसाद दिया और उसका गुण बताया जो तू इससे मांगेगा यह सब देगा विक्रमने हाथ ओट लिया और दण्डवत् कर बिदा हो बैतालपर सवार हो अपने नगरको आया जब नगरके निकट आनकर पहुँचा नदी के किनारे देखे तो एक स्त्री का खाविन्द मर गया है उसे जला कर खड़ी हुई वह डकरा २ रोती है और कहती है कि अब इस संसार में मेरा मालिक कोई नहीं और न मेरे पास माया है किस तरह मैं तेरा श्राद्ध करूँगी और पंचों से सुरखरूहूँगी इसका कूक मार २ रोना राजाने सुना और देखकर वह रत्न उस स्त्री को दिया और कहा जो इससे मांगेगी सो तेरी यह आश पुजावेगा उसको ले वह नारी नगरमें गई और राजा भी अपने महलमें दाखिल हुआ। इतनी बात कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज ये गुण विक्रममें थे ऐसा साहसी था और प्रजाका हितकारी जो तू सात स्वर्ग फिर आवेगा तौ भी उसके समान न हो सकेगा इससे तू अपने मनके खियालसे बाज आ जो राजा ने काम किये हैं सो भी तुझसे कहूँगी। वह भी दिन इस तरह से दल गया उसके सुबह राजा दीवान को

साथले सिंहासन के पास फिर आनखड़ा हुआ तब ॥

वैदेही उन्तीसवीं पुतली ॥

बोली राजाभोज ! तू किस बातपर भूला है सब सखियोंने तुझे कथा सुनाई तब तू पत्थरन पसीजा पहले मुझसे बात सुनले पीछे सिंहासनपर पांवदे राजाने कहा अच्छा कह पुतली बोली एकदिन राजाबीरविक्रमादित्य रातको अपने मंदिरमें सोता था कि एक ख्वाब देखा वह मैं तेरे आगे कहता हूं । क्या देखता है कि एक सोने का महल है और उसमें अनेक २ प्रकार के रत्न जड़े हैं और तरह तरह के पाक पकवान और सुगंधें धरी हुई हैं और एक तरफ एक अच्छी फूलोंकी सेज बिछी हुई है एक तरफ फूलोंके गहने चंगेरों में भरे हुये अतरदान पानदान गुलाबपाशें भरी धरी हैं और मकानके चारों ओर फुलवारी खिली हुई है बाहर उस मकानकी भीतोंपर रंगबरंगके चित्र बने हुये कि जिनके देखे से तुर्त आदमी मोहित हो और उस मन्दिरके भीतर खूबसूरत स्त्रियां अच्छे साज मिलाये मीठे २ मधुर २ स्वरोंसे बैठी गाती हैं और एक तपस्वी बैठा हुआ राग सुनता है यह देख राजाने अपने जीमें कहा कि यह तपस्वी इन नारियों के योग्य नहीं है इतने में आंख खुल गई और सुबह हुई तब स्नान ध्यान पूजाकर बीरोंको बुलाकर कहा

कि मैंने जिसजगहको सपने में देखा है तुम मुझे वहां लेचलो राजाकी बात सुनतेही वीर उठाकर लेउड़े और पलमारते वहां पहुंचाया राजाने वहां से वीरों को रुखसत किया और आप उस बगीचेमें गया और उस मकानकी तैयारी देखतेही भौचक हो अपने मनमें कहने लगा कि यह मकान किसने बनाया है आदमीका तो मकदूर नहीं चाहिये तो ब्रह्मा ने अपने हाथसों चित्तदेकरके रचाहो फिर मन्दिरके अन्दर जा राजा खड़ा हुआ। इतनेमें वहां जो रंडियां बैठी गाय रही थीं सो राजाको देख अपने मनमें डर चुप हो रही और उस सिद्धका स्मरण किया उसने तुरत आके दर्शन दिया और वह विक्रमको देख क्रोध कर बोला कि अभी शाप तूझे देता हूं कि तू जलकर भस्म हो जाता है किसलिये मेरे स्थान पर आया है सुख में ये स्त्रियां बैठी राग अलापरही थीं तूने आकर क्यों भंग किया यह सुन राजा हाथ जोड़ बिनती कर बोला कि महाराज मैं अनजान यहां आया हूं तुम्हारे दर्शन की मुझे इच्छा थी तुम्हारे क्रोधकी आंचको कौन सहसक्ता है मैं आपका दास हूं चूक मेरी मुआफ कीजिए यह सुन वह योगी बोला कि सुन विक्रम तूने सच कहा मुझे बड़ा क्रोध हुआ था पर जो तू मेरे संमुख न होता तो मैं तूझे शाप देता और अब मैं तेरी बात

सुन प्रसन्नहुआ तू मुझसे मांग जो चाहिए । राजा ने कहा कि महाराज मैं क्या मांगू आपके प्रसाद से मेरे यहां सबकुछ है अन्न धन रत्न हाथी घोड़े किसी चीज़ की कमी नहीं पर एक वस्तु मांगने के लिए मैं आपके पास आया हूँ जो कृपाकर दीजिए तो मैं मांगूँ । यह सुन योगी ने कहा राजा जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा राजा ने कहा यह मंदिर मुझे दीजिए । योगी ने सुन बिलम्ब न किया तुरंत वह मन्दिर राजा को दिया और अपना योगरूप धर वहां से तीर्थ व्रत करने को गया । राजा ने जब वह महल पाया तब प्रसन्न हो गद्दी पर जा बैठा और वे सब रण्डियां जैसे योगी के आगे गाती थीं गाने लगीं राजा उस मंदिर में खुशी से रहने लगा अनेक २ प्रकार के रस भोग करने लगा । इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज राजा विक्रम तो वहां बैठकर आनन्द करने लगा और योगी तीर्थ २ फिरता था और जो कोई सिद्ध वहां मिलता था उससे अपना दुःख कहता था इस तरह से किसी और तीर्थ में जा पहुँचा और वहां एक यती से अपने जीके दुःख का ब्योरा सब कहा । उन्ने उस्से कहा कि तू अपने स्थान को जा और वेष धर के राजा से जा सवाल कर वह धर्मात्मा है जभी तू वह सकान मांगेगा तभी तुझे हवाले कर देगा यह

उसकी सीखमान एक बूढ़े ब्राह्मणका वेषधर उस मंदिरके निकट आया द्वारपरजा तालीदी तालीकी आवाज़ सुनतेही राजा बाहर निकल आया और उससे कहा कि तू क्या मांगता है मांग मैं तुझे दूंगा तब उसने कहा महाराज मैं तमाम पृथ्वी फिर आया पर अपनी इच्छाका स्थान कहीं न पाया कि जहां मैं बैठूं। यह सुन राजा हँस के बोला कि यह ठांव तुम्हारी इच्छाके मुवाफिक हो तो यह ले सुन ब्राह्मण ने आशीश दी राजा उसे उस जगह पर बिठा अपने घरको आया। इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज तू उसके सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है तू अपने जीमे नहीं विचारता जो बिना समझे ऐसा इरादा करता है जो उसकी बराबर हो वह इस सिंहासन पर बैठे वह रोजभी यों आखिर हुआ अच्छता पछता अपने मन्दिर में गया रात तो ज्यों त्यों कट गई सुबह हुये स्नान पूजाकर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ और सिंहासन पर चाहे कि पांव धरे कि ॥

रूपवती तीसवीं पुतली बोली ॥

कि सुन राजा ! बावले अज्ञानी। ऐसा पुरुषार्थ तूने कब किया जो सिंहासन पर बैठने को आया है एक दिनकी बात राजा वीर विक्रमादित्यकी मैं तुझे

कहती हूँ तू सुन कि अपने महलमें एकरातको राजा आरामसे सोता था इसमें कुछ राजाके जीमें आया एकबारगी उठकर कांछाबांध ढालतलवार ले शहर के कूचों में फिरने लगा । आगे जाकर देखे तो चार चोर खड़े हुये बातें कर रहे हैं कि किधरको चोरी करने हम चलें उनमेंसे एक कहने लगा अच्छी सायतमें चलो तो कुछ माल हाथ लगे और बुरी सायत चलने से दुख पाकर खाली हाथ फिर आवेंगे । इस तरह से सब बातें उनकी राजाने सुनीं और उन्होंने भी राजा को देखा उनमें से एक बोला कि तू कौन है राजाने कहा जो तुम हो सो मैं हूँ यह सुनकर उन्होंने राजा को भी अपने साथ लगा लिया और चोरी को चले आगे जा एक जगह पहुंचकर एकसे एक पूछने लगा कि अपना २ गुण कहो तब एक उनमें से बोला कि मैं ऐसा मुहूर्त देखने जानता हूँ कि जिसमें यात्रा करने से कभी खाली फिर न आवै दूसरा बोला कि मैं सब जानवरों की बोलियां समझता हूँ तीसरा बोला कि मैं जिस मन्दिर में जाऊं मुझे कोई न देखे और मैं अपना काम कर आऊं चौथा बोला मेरे पास एक ऐसी चीज है कि कोई बहुतेरा मुझे मारे मैं न मरूं उनचारों ने ये बातें कह राजा से पूछा कि तू क्या बिद्या जानता है वह कह तब राजा बोला कि मैं यह

बिद्या जानताहूँ कि जहांधन गड़ाहो तहां मैं बता-  
 दूँ। उनचारों ने राजासे कहा कि चल तू आगे हम  
 तेरे पीछेहैं जहां दौलत गड़ी हुईहो हमें बता दे इस  
 तरह बातें कर आगे २ राजा पीछे २ चोर चल हुये  
 राजमहलके पीछेबागीचे में आये और जिस जगह  
 दौलत राजाकी गड़ीथी सो उन चोरोंको राजाने  
 बतादी उन्होंने वहांखोदा एक तहखानेका दरवाज़ा  
 निकला उसे तोड़कर अन्दर जा देखेंतो करोड़ों  
 का जवाहिर और अशफियां रुपये भरे हुये हैं सब  
 ले पोतें बांध शिर पर धर चले इतनेमें एक गीदड़  
 बोला उन में जो जानवरों की भाषाजानताथा सुन-  
 कर वह समझा औरों से कहा कि भाई यह गीदड़  
 बोलताहै इस धन लेने में कुछकुशल नहीं उन में  
 एक बोला अपना सगुन तू रहने दे पाई हुई लक्ष्मी  
 तो हम नहीं छोड़ते छोड़े तो हमारे धर्म में बड़ा  
 आवे उनमेंसे दूसरा बोलउठा कि भाई धन रत्न तो  
 पाया पर एक वस्त्र नहीं मिले इससे कहीं चलकर  
 और जगह चोरी कीजिये और वहांसे वस्त्र लीजिये  
 तो फिर चोरी का नामभी न लीजिये फिर उन में  
 से एक बोला राजाका धोबी यहां रहताहै उसके घर  
 में चल कर सेंधदें तो तरह २ के कपड़े मिलेंगे।  
 यह मंसूबा कर धोबीके पिछवाड़े तो गठरियां रख-

दीं और जाकर उसके घरमें सेंधदी इसमें उसका गधा देखकर रैंका और धोबी जागा खफ़ाहो गधे को खूबसा पीटकर कहनेलगा कि यह कमबख्त मेरेपीछे पड़ाहै दिनभर घाटपर मैं मेहनतकरूं सोतेमें यह सतावे। इतनाकह धोबीफिर जाकर सोरहा गधा चोरोंको देख फिर बोला आखिर धोबीने गधे को चार पांच मर्तबा मार मार कर रस्सी खोल छोड़ दिया और आपआन सोरहा चोरतो चोरी करने लगे और राजाने अपने जीमें बिचारा कि वहतो अपना धन था जो चाहा सो किया और अबइनके साथरहकर अधर्म का भागी कौनहोगा। यह समझ कर राजा अपने महल में चला आया और वे पोतें बांध अपने घरको गये सबेरा होतेही शोर हुआ कि राजाके भण्डारमें चोरीहुई कोतवाल ने जगह २हरकारे जासूस भेजदिये घाटबाट सबबन्द किये आखिर को तलाशकर चारों चोरों को बांधकर हरकारे कोतवाल के पास ले आये कोतवाल ने ले जाकर राजाके सौंहीं खड़ेकिये राजाका मुंह देख २ बेजो अपने जीमें बिचार करनेलगे कि राजाहीकी सूरत वह पांचवां चोर हमारे साथ था और जब धोबी के यहां हम चोरी को गये तो वह जातारहा यह बड़ा अचंभाहै कि अपना हिस्सा भी वह न

लेगया ये अपने जी में विचारते थे राजाने मुसकराकर कहा तुम मुंह देख मेरा क्या अपने जीमें शोचते हो खैर तुम्हारी इसी में है कि वह माल जहां रक्खा है तहांसे लादो चोर बोले महाराज ! बड़े अचंभे में हम हैं एक चोर रातको हमारे साथ चोरी करने में शरीक था जब तक चोरी की तब तक तो साथ था और अपना भाग लेने के वक्त भाग गया राजाने कहा अच्छा उस चोरको भी बताओ तब उनमें से एक चोर बोला महाराज जी चाहो तो हमें मार डालो चाहो तो छोड़ दो पर आपके रूबरू हम सच कहते हैं कि इस वक्त तुम राजा हो और रातको हमारे साथ थे क्योंकि हमने बहुतों के साथ चोरियां की हैं पर ऐसा किसीको नहीं देखा जो अपना बांट छोड़ दे इसलिए हम धर्मसे कहते हैं हमारे साथ आप ही थे यह सुन राजा हँसकर बोला तुम अपने जी में मत डरो हमने तुम्हारी जान बखशी की पर एक बात हम तुमसे कहते हैं सो तुम्हें करनी पड़ेगी तुम अब चोरी करने से हाथ उठावो बल्कि और जो दौलत तुम्हें चाहिए मेरे खजाने से ले जाओ यह सुनके चोरों ने राजा की बात कबूल की राजा ने उन्हें और भी मुँहमांगी दौलत दी और बिदा किया वे धन लेले अपने २ घर को गए इतनी बात कह पुतली बोली

कि सुन राजा भोज ! न तू ऐसा साहस करेगा न इस सिंहासन के योग्य होगा इससे जाकर अपना राज्य कर और यह खयाल छोड़ दे । राजा चुप होकर वहां से उठ अपने मकान में दाखिल हुआ वह सायत और वह दिन भी यों टल गया वहां से अपने मंदिर में जा रात को तो शोच में काटा दूसरे दिन सुबह के होते ही सिंहासन के पास आकर खड़ा हुआ अपने मन में विचार करने लगा कि मैं इस सिंहासन पर बैठने न पाया और बिना स्वार्थ जन्म गँवाया । सब देश यह खबर हो चुकी कि राजा भोज राजा वीर विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठने लगा सो बैठना मेरा न हुआ । यह बात सुनकर सब लोग हँसेंगे और गन्धर्व्व गालियाँ देंगे और मेरे कुल को कलंक लगा । यह अपने जी में शोचकर राजा नीची गर्दन किए सिंहासन के पास खड़ा हुआ फिर अपने जी में विचारता था कि एक मां वह थी कि जिसका विक्रम जैसा पुत्र हो और एक मैं हूँ कि कुल को दारा लगाया और जो मनसूब किया सो बन न आया ऐसी बातें राजा मन में विचार २ चिन्ता करता था और कुछ जी में शेरत आती थी और कुछ क्रोधित होता था कि इसमें झुंझलाकर जल्दी से चाहे कि सिंहासन पर बैठें इतने में ॥

कौशल्या इकतीसवीं पुतली बोली ॥

सुन राजाभोज तू बड़ा मूर्ख है जो कहा नहीं मानता और साहसको तू सहजकर जानता है कंचन की बराबरी पीतल नहीं करसक्ता और हीरेके बराबर शीशा नहीं होता और चन्दन के गुण को नीम नहीं पाता इससे तू हजार अपने जीमें मनसूब किया कर लेकिन राजा बीरबिक्रमादित्यके बराबर तू नहीं होसक्ता और उसके सिंहासन पर बैठते हुए तुझे शर्म नहीं आती । इतनी बात उस पुतली की सुन राजा अपने जीमें बहुतसा लजाया राज और जीतव अपना धिक्कार कर माना फिर इतनी बात पुतली ने कही कि सुन राजा मैं एक दिनकी बात राजा बीर बिक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं कि जब राजाके मरनेके दिन नजदीक आए तब राजा को मालूम हुआ और मालूम करके बाईनगरमें गङ्गा तीरपर एक मंदिर बनवाया जब वह मन्दिर बन चुका तब आप भी वहीं जारहा तमाम मुल्कों में खबर दी कि जो कोई दानलियाचाहे सो बाईनगरमें आकरले और जितने ब्राह्मण पंडित भाट भिखारी आये तिन्होंने मुँह मांगे दान पाये । यह खबर देवताओं को भी पहुँची इसमें बहुत से देवता रूप बदलर दान लेनेका बहाना कर राजाका सतदेखने

आये और आकर जो जो जिसके जी में आया सोसो मांगा और राजाने भी सोई दिया जब दान लेचुके तब राजा के सोहीं खड़े हो आशीश दे कहने लगे कि धन्य राजा विक्रम तेरे तई और धन्य है तेरे माता पिता को तूने ऐसा शाकाबांधा कि तीनों लोकमें तेरी निशानी रहेगी सतयुगमें जैसा सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र और त्रेतामें जैसा दानी राजा बलि हुआ और द्वापरमें जैसा राजा युधिष्ठिर हुआ तैसा कलियुगमें विक्रमादित्य तू है जैसे तुम धर्मात्मा राजा हुये तैसे चारों युगमें न हुए हैं न होंगे। इस तरह राजा से कह देवता बिदा हुये। इतना कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज देवता तो सब बिदा हो आये और राजा जाकर महल के झरोखे में बैठा इतने में एक राजा को किसी ऋषि ने शाप दिया था सो वह सोने का हिरण बनकर राजा वीर विक्रमादित्य के सोहीं आया राजाने देखते ही उसके मारने को कमान और तीर उठाया चाहे कि राजा बाण मारे इसमें वह हिरण बोला कि मैं अगले जन्म का ब्राह्मण हूँ मारे भूख के दिन रात फिरता हूँ एक सिद्ध से मैंने अपनी मौत मांगी थी उनने मुझे हिरण किया फिर मैंने उस सिद्ध से कहा कि महाराज ! तुमने मुझे हिरण तो बनाया पर मेरी गति आगे किस तरह होगी तब उसने सुझाकर कहा

कि कलियुग में राजा वीर विक्रमादित्य बड़ा दाता होगा उसका जबतू जाकर दर्शनकरेगा तब तेरी मुक्तिहोगी इसलिये मैं तेरे दर्शनको आया हूँ । राजा ने उसकी बात सुनकर हँस दिया और उस हिरणने उसी समय अपना शरीर त्याग किया । राजाने उस हिरणको जलाकर गंगामें बहा दिया और बहुतसा उसके नाम यज्ञ किया । इतना कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! तू उसके बराबर क्यों कर हो सकता है और तू अपने जीसे यह बात दूर कर सिंहासनको लेकर अभी तुर्तगढ़वादे जहाँसे लाया है तहाँ पहुँचा दे । इतनी बात सुन राजा भोज अपने जीमें शोचने लगा और जवाब कुछ बन न आया । और निपट अपने मन्दिरमें आया वह दिन इस तरह गुजर गया अपने मकानमें आ रात उसी चिन्तामें बिताई सबेरे हुये मन में वैराग्य लिये जा सिंहासनके पास खड़ा हुआ तब ॥

भानुमती बत्तीसवीं पुतली ॥

बोली राजा एक मेरी बिनती सुन और अंतकथा मैं तुझसे बुझाकर कहती हूँ तू अपना मन लगाकर सुन कि जब अन्त समय राजा विक्रमादित्य का आया तब आप बिमान पर बैठ इन्द्रलोकको गया और अंबावती नगरीमें शेर हुआ तीनों लोकमें हंगामा मचा कि राजा वीर विक्रमादित्य का काल हुआ उस वक्त अ-

गिया कोयला दोनोंबीर भी साथ राजाही के लोप होगये न वह स्वामीरहा न वे दासरहे संसारमेंसे धर्मकीध्वजा उखड़गई सब रैयत राजाके राजकी रोनेलगी ब्राह्मण भाट भिखारी रांड दुखी सबधाय मार २ रोरो कहनेलगे कि हमारा आदर करनेवाला और मानरखनेहारा आज जगसे उठगया रानियां राजाके साथ सतीहुई और जितनेदास दासीथे सो सब अनाथ होगये जितने लोग नौकर चाकर सिपाही शागिर्दपेशा थे सब रोते थे और कहते थे कि हाय हममें से कोईकामन आया। इस तरहकी महाखलबल राजाके राजभरमें होरहीथी तब मंत्रीने राजकुमार जैतपालको राजतिलककिया और तमाम मुल्कोमें उस के नामका ढिंढोरा फिरादिया जब जैतपाल राजाहुआ तो वह एकदिन इस सिंहासन पर बैठा इतनेमें मूर्छाआई और मूर्छा आतेही वह बेसुधहुआ एक सुपनादेखा उस सुपने में राजा बीर बिक्रमादित्य ने उसे मना किया कि इस सिंहासनपर मतबैठ जो मेरासा साहस और दानकरे तो इस सिंहासनपर बैठना। इसमें राजा जैतपालकी आंख खुलगई और सावधान हो सिंहासन से नीचे उतरबैठा मंत्रीकोबुला अपने ख्वाब का अहवाल सब कहा तब प्रधान ने कहा महाराज

अब इस आसन पर बैठना तो उचित नहीं और एक बात मैं आपसे कहूँ सो आपकीजे आजरात को पवित्र हो भूमिमें बिछौना बिछवा और राजाका ध्यान करके कहिये कि महाराज जो २ मुझे आज्ञा हो उसी मुवाफिक मैं करूँ यह कामना करके रातको सोइये इसमें जैसा जवाब कामना का मिले तैसाकीजे जो दीवानने कहा था सोई राजाने किया और जब राजा सोया तब सुपनेमें जैतपालको राजा विक्रमादित्यने कहा कि उज्जैन नगरी और धारा नगरी छोड़कर अम्बावती नगरी में तुम जाकर अपना राज करो और इस सिंहासनको यहीं पृथ्वी को सौंप दो । सबेरा होतेही राजा जैतपाल उठा उठतेही मजदूरोंको बुला सिंहासनको वहीं गड़वा दिया और आप अम्बावती नगरीमें आ राजकरने लगा धारानगरी और उज्जैन नगरी उजड़ उजड़ अम्बावतीनगरी में बसने लगी यह पुतली की बात सुन राजा भोज पछताय २ निराशहो शिरधुनकर उठा और दीवानको बुलाकर कहा जहां से यह सिंहासन निकलकर आयाथा वहींगड़वादो । यह मंत्रीको आज्ञादी आप अपनेजीसे राज काज छोड़ बैठा मंत्री राज करने लगा और आप उदास हो एक तीर्थ में तपस्या करने गया और यहां खबर

राजाओं को पहुँची कि राजा भोजने राज त्यागकर बैराग लिया। सच है जो जिस योग्य न हो और उस कामको करे तो उसका कुछ फल नहीं पाता बल्कि काम अपना बिगाड़ै है और जग में हँसी होती है उन राजाओंकी तो वह रीतिथी और अबके राजाओं की यह चाल है कि प्रजा से दण्ड लेते हैं साधु लोगोंको दुःख देते हैं और असाधु लोगोंको पालते हैं थोड़े से राज में इतरा जाते हैं और रैयतसे बेखबर रहते हैं सचवातको सुनी अनसुनी करते हैं झूठवातपर दिल लगाते हैं लेकिन इसवक्त में भी बाजे साहिव ऐसे हैं कि अदल औ इन्साफ से उनके आलमपर वरिष पाता है और हर एक अपने मतलबको पहुँचता है ॥

इति सिंहासन बत्तीसी समाप्ता ॥



